बाज़ार-समीक्षा

(उत्तर प्रदेश शिक्षा बोर्ड द्वारा एकमात्र स्वीकृत पुस्तक)

लेखक—

राम बिलास गुप्त

एम. कॉम., एल. टी., साहित्यरत्न,

प्राध्यापक, गवर्नमेंट इन्टर कॉलिज, झांसी

प्रकाशक—

भारत-भारती प्रकाशन

वैस्टर्न कचहरी रोड

मेरठ

द्वितीय संशोधित संस्करण

१९६०

मूल्य २) अजिल्द

प्रकाशक—
भारत-भारती प्रकाशन
वैस्टर्न कचहरी रोड
मेरठ
फोन—२४८
तार—पुस्तक

प्रथम संस्करण १६५८
द्वितीय संस्करण १६६०
मूल्य : सजिल्द २·५० रु०
अजिल्द २·०० रु०

मुद्रक
निष्काम प्रेस,
मेरठ

प्रस्तावना

प्रस्तुत पुस्तक प्रदेशीय माध्यमिक शिक्षा परिषद द्वारा निर्धारित पाठ्यक्रम के आधार पर लिखी गई है। इस छोटी सी पुस्तक में, जो कि हिन्दी तथा अंग्रेजी दो भागों में विभक्त है, बाजार का पूरा दिग्दर्शन कराने का प्रयास किया गया है और बाजार समीक्षाओं का विशेष रूप से। हिन्दी विभाग में प्रयुक्त पारिभाषिक शब्द, जहाँ तक हो सका है, भारत सरकार के शिक्षा विभाग द्वारा प्रकाशित पारिभाषिक शब्दों की सूची से लिये गये हैं और शेष अन्य सूत्रों से। हिन्दी दैनिक समाचारपत्रों में बाजार समाचार नियमित रूप से प्रकाशित होने लगे हैं। अतः उनमें प्रयुक्त शब्दों को विशेष स्थान दिया गया है। इसी वजह से अंग्रेजी के कुछ शब्दों का प्रयोग देवनागरी लिपि में ज्यों का त्यों किया गया है। सच तो यह है कि बहुत से अंग्रेज़ी के शब्द इतने प्रचलित हो गये हैं कि ग्रामीण जनता भी उनका प्रयोग करने लगी है।

भारत सरकार के शिक्षा-विभाग द्वारा स्वीकृत सूची से कुछ शब्द

Agent	एजेन्ट	*Manufacture*	विनिर्माण
Bank-rate	बैंक दर	*Mint Par of Exchange*	मुद्राविनिमय की टकसाल दर
Banker	बैंकर	*Money*	द्रव्य, मुद्रा, रुपया
Commodity	पदार्थ	*Quotation*	भाव
Company	कम्पनी	*Rediscounting*	पुनर्भाजन
Deflation	अवस्फीति	*Share*	शेयर
Dealer	व्यापारी	*Share Market*	शेयर बाजार
Entrepreneur	उद्यमकर्ता	*Sterling*	स्टर्लिंग
Goods	माल, पदार्थ	*Stock*	स्टाक
Inflation	स्फीति	*Tendency*	प्रवृत्ति
Industrialist	उद्योगपति	*Treasury Bill*	राजकोष पत्र
Manufacturer	विनिर्माता		

ऊपर केवल उन्हीं शब्दों को स्थान दिया गया है जो कि कुछ नवीनता लिये प्रतीत होते हैं। बहुत से शब्दों को जो कि आम तौर पर प्रचलित हैं यहाँ लिखने की आवश्यकता नहीं समझी गई।

अन्त में मुझे विश्वास है कि बाजार के कारोबार में दिलचस्पी रखने वाले सभी व्यक्ति इस पुस्तक से लाभ उठा सकेंगे। पुस्तक की उपयोगिता बढ़ाने वाले सुझावों का स्वागत होगा।

—लेखक

विषय सूची

क्रम	अध्याय			पृष्ठ

हिन्दी विभाग

ENGLISH SECTION

हिन्दी विभाग

प्रकरण
१

बाजार का अर्थ तथा उसका संगठन

बाजार का अर्थ (Meaning of Market)— अर्थशास्त्र में बाजार एक पारिभाषिक शब्द है। साधारण बोलचाल में हम इसका प्रयोग उस स्थान के लिए करते हैं जहाँ कि लोग वस्तुओं के क्रय-विक्रय के लिए एकत्र होते हैं। हाट, मण्डी, पेंठ, विपणि आदि इसके पर्यायवाची शब्द हैं। अर्थशास्त्र में बाजार शब्द का प्रयोग इस संकुचित अर्थ में नहीं किया जाता। अर्थशास्त्रियों के अनुसार बाजार उस समूचे क्षेत्र को कहते हैं जिसमें क्रेताओं और विक्रेताओं के बेरोक-टोक लेन-देन के कारण किसी पदार्थ का मूल्य सुगमता तथा शीघ्रता से समानता की ओर प्रवृत्त हो। फ्रांस के अर्थशास्त्री कारनोट ने बाजार की परिभाषा इस प्रकार की है :—

'Economists understand by the term market not any particular market place in which things are bought and sold, but the whole of any region in which buyers and sellers are in such free intercourse with one another that the price of the same goods tends to equality, easily and quickly.'

उपर्युक्त परिभाषा के अनुसार बाजार की तीन आवश्यक विशेषतायें हैं :—

(१) क्रेता-विक्रेताओं का होना, (उनकी व्यक्तिगत उपस्थिति आवश्यक नहीं है क्योंकि माल के सौदे तार, टेलीफोन या दलाल के द्वारा भी किये जा सकते हैं।)

(२) किसी पदार्थ के क्रय-विक्रय के लिये क्रेता और विक्रेताओं के बीच प्रत्यक्ष और मुक्त स्पर्धा, तथा

(३) सारे बाजार में उसी पदार्थ के लिये समान मूल्य।

ऊपर बतलाये गये बाजार के लक्षणों से स्पष्ट है कि कोई बाजार एक से अधिक पदार्थों का भी हो सकता है, परन्तु सुविधा के लिये प्राय: प्रत्येक पदार्थ का अलग बाजार माना जाता है जैसे गेहूँ का बाजार, कपड़े का बाजार या जूट-बाजार। क्रेताओं तथा विक्रेताओं के स्वतन्त्र मोल-भाव तथा आपसी होड़ से मांग-पूर्ति के संतुलन बिन्दु पर किसी पदार्थ का मूल्य निर्धारित होता है और वह आधुनिक सन्देश-वाहक साधनों द्वारा अविलम्ब बाजार के सारे क्षेत्र में फैल जाता है।

बाजार-संगठन (Market organization)— आधुनिक बाजार बड़े व्यवस्थित होते हैं और उनका संगठन बड़ा जटिल हो गया है। आधुनिक बाजार-संगठन की मुख्य विशेषतायें नीचे दी जाती हैं :—

(१) कार्य का विशिष्टीकरण— प्रत्येक बाजार में या उसके एक विभाग में केवल एक ही पदार्थ का क्रय-विक्रय होता है।

(२) माल का परिमाण— क्रय-विक्रय किया जाने वाला माल भारी परिमाण में होता है।

(३) अनुपातन योग्य माल— केवल उन्हीं पदार्थों का क्रय-विक्रय होता है जिनका अनुपातन (grading) सम्भव है। नमूने और विवरण द्वारा बिक्री के लिए वस्तुओं का अनुपातन आवश्यक है।

(४) मध्यस्थ की भरमार— दलाल, आढ़ती तथा एजेन्टस से बाजार भरा रहता है। बाजार का अधिकांश क्रय-विक्रय दलालों, आढ़तियों तथा एजेन्टों द्वारा होता है।

(५) शीघ्र सन्देश भेजने की सुविधा— शीघ्र सन्देश-वाहक साधनों द्वारा व्यापारी एक दूसरे के सम्पर्क में रहते हैं और समाचार सम्पूर्ण बाजार में फैल जाते हैं।

(६) बाजार विवरण का प्रकाशन— व्यापारिक विवरण तथा आंकिक आख्या के प्रकाशन द्वारा व्यापारियों को बाजार की गति-विधि से परिचित रखा जाता है।

(७) केन्द्रीय व्यवस्था— प्रत्येक बाजार किसी केन्द्रीय-व्यवस्था यानी चेम्बर, एसोसियेशन या व्यापार-मण्डल आदि से सम्बन्धित होता है जिससे कि सौदों का पटान तथा उनका भुगतान सुविधा तथा सुगमता से हो सके और क्रेता तथा विक्रेता दोनों के हित सुरक्षित रहें।



प्रकरण
२

बाजारों का वर्गीकरण

आर्थिक बाजारों का वर्गीकरण कई दृष्टिकोण से कई-कई विभागों में किया जाता है। क्षेत्र या सीमा की दृष्टि से बाजार (१) स्थानीय, (२) राष्ट्रीय, तथा (३) अन्तर्राष्ट्रीय विभागों में बांटे जा सकते हैं। समय के विचार से उनको (१) अल्प अवधि बाजार, (२) लम्बी अवधि बाजार, तथा (३) दीर्घकालीन बाजार की श्रेणी दी जाती है। व्यवसाय के परिमाण के अनुसार उनको (१) थोक बाजार, तथा (२) खुदरा बाजार में विभाजित किया जाता है, लेकिन जब हम क्रय-विक्रय किए जाने वाले पदार्थ का ध्यान रखकर वर्गीकरण करते हैं तो हम उन्हें दो मुख्य भागों में बांटते हैं— (१) पदार्थ बाजार, तथा (२) पूंजी बाजार। बाजार समीक्षा के दृष्टिकोण से यही विभाजन अधिक महत्व का है। अतः हम इसके विषय में वर्णन नीचे देते हैं।

पदार्थ बाजार (Commodity Market)— पदार्थ बाजार में बिकने वाला माल तीन प्रकार का होता है। प्रथम प्रकार में कच्चा माल आता है। कच्चा माल दो प्रकार का होता है और हम उसे उत्पादन पदार्थ तथा उपभोग पदार्थ कह कर पुकारते हैं। जो कच्चा माल परोक्ष रूप में उपभोग किया जाता है उसे उत्पादन पदार्थ कहते हैं जैसे कपास, कोयला, लोहा आदि। जो माल प्रत्यक्ष रूप में उपभोग किया जाता है उसे उपभोग पदार्थ कहा जाता है और इसके अन्तर्गत फल, शाक, दाल, अनाज आदि आते हैं। कपास, फल, शाक, दाल, अनाज आदि कृषि-पदार्थ (Agricultural Produce) कहलाते हैं और कोयला, लोहा, सोना, चांदी, तांबा आदि खनिज पदार्थ (Mineral Products)। दूसरे प्रकार में विनिर्मित माल (Manufactured Goods) आता है। विनिर्मित माल के अन्तर्गत तैयार माल तथा अधकच्चा माल दोनों सम्मिलित हैं। कपड़ा, मशीन, चीनी, साबुन, गुड़ आदि इसके अन्तर्गत आते हैं। सोना और चाँदी मूल्यवान पदार्थ हैं। इनको हम तीसरे प्रकार में रख सकते हैं क्योंकि इनका एक अलग बाजार होता है।

एक व्यवस्थित पदार्थ-बाजार में केवल उन्हीं पदार्थों का क्रय-विक्रय हो सकता है जो कि भारी मात्रा में बेचे जा सकते हैं और जिनका या तो अनुपातन किया जा सकता है या विवरण दिया जा सकता है। जब एक ही किस्म का पदार्थ कई प्रकार का होता है तो उसको विभिन्न श्रेणियों में विभाजित कर दिया जाता है जैसे अच्छा (Good), उचित (Fair), मध्यम (Middling), साधारण (Ordinary), निम्न (Low) आदि। इन किस्मों को पहचान-योग्य बनाने के लिए उनकी एक प्रमाणित क़िस्म निर्धारित कर दी जाती है, जिसे उचित औसत-कोटि (Fair average

quality या F. a. q.) कहकर पुकारते हैं। अनुपातन का कार्य व्यापारियों की एक संस्था द्वारा होता है। यह संस्था उनके प्रतिनिधियों की बनी होती है और चेम्बर आफ कामर्स या व्यापार-मंडल आदि नामों से पुकारी जाती है।

विवरण से बिकने वाले पदार्थों का आकार, परिमाण तथा यथार्थ अच्छाई निश्चित होते हैं। माल का सौदा करते समय पूरा विवरण दिया जाता है और यदि किसी दशा में क्रय किए हुए माल में कोई कमी पाई जाती है तो क्रेता विक्रेता से हानि पूर्ति कराने का अधिकारी होता है। जिन पदार्थों का ठीक अनुपातन नहीं हो सकता या विवरण नहीं दिया जा सकता, उनकी बिक्री नीलाम द्वारा होती है। शीघ्र नष्ट होने वाले पदार्थों की बिक्री भी विवरण से नहीं होती। उनकी बिक्री या तो नीलाम से होती है या आपस के मोल भाव से।

अब हम पदार्थ बाजार के विभिन्न-रूप निम्न प्रकार से दिखा सकते हैं:—

पदार्थ बाजार

१. कच्चा माल बाजार (Produce Exchange)	२. विनिर्मित माल बाजार (Manufactured Goods Market)	३. मूल्यवान पदार्थ बाजार (Bullion Exchange)

(१) कच्चा माल बाजार— यह एक व्यवस्थित बड़ा बाजार होता है जिस में भारी मात्रा में गेहूँ, लोहा, कोयला, जूट, कपास आदि की बिक्री होती है। यह बाजार किसी बड़े शहर या स्थान पर केन्द्रित होता है और बहुत बड़े क्षेत्र में फैला होता है। इसमें एक माल का या कई मालों का जिनका अनुपातन हो सकता है क्रय-विक्रय होता है। हापुड़ गेहूँ मण्डी, नागपुर रूई बाजार तथा कलकत्ता जूट बाजार इस वर्ग में आते हैं।

(२) विनिर्मित माल बाजार— इस प्रकार के बाजार में तैयार किया हुआ माल क्रय-विक्रय होता है। सूत, गेहूँ का आटा, जूट का सामान, मशीन, चीनी, गुड़ आदि वस्तुएँ इन बाजारों में बिकती हैं। ऐसे बाजार का क्षेत्र बड़ा होता है। बम्बई कपड़ा बाजार, कानपुर चमड़ा बाजार, कलकत्ता जूट माल बाजार इसके उदाहरण हैं।

(३) मूल्यवान पदार्थ बाजार— इस बाजार में सोने और चाँदी का क्रय-विक्रय होता है और यह विशिष्ट रूप से संगठित होता है। यह बाजार बड़े बड़े शहरों या व्यापारिक स्थानों पर केन्द्रित होता है और इसका क्षेत्र सारे संसार तक फैला हो सकता है। दिल्ली, कानपुर, बम्बई तथा कलकत्ता आदि में यह केन्द्रित है।

पूंजी बाजार (Capital Markets)— पदार्थ बाजारों की तुलना में पूंजी बाजारों का कोई कम महत्त्व नहीं है। आधुनिक उद्योगीकरण युग में बड़े बड़े उद्योग चलाने के लिए तथा व्यापार गृहों का संचालन करने के लिए पूंजी की बड़ी बड़ी

मात्राओं में आवश्यकता पड़ती है। विशाल पूंजियों का निर्माण पूंजी बाजार द्वारा ही सम्भव है। हम इन बाजारों का निम्न प्रकार से वर्गीकरण कर सकते हैं:—

पूंजी बाजार
(Capital Markets)

द्रव्य बाजार (Money Market)	शेयर बाजार (Stock Exchange)	विदेशी विनिमय बाजार (Foreign Exchange)

(१) द्रव्य बाजार— जिस प्रकार हमको अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिये वस्तुओं की आवश्यकता होती है, उसी प्रकार व्यापारियों, उद्योगपतियों तथा साहूकारों को अपना अपना कार्य सुचारू रूप से चलाने के लिये द्रव्य की आवश्यकता होती है। द्रव्य बाजार उनकी अल्प-कालीन द्रव्य की आवश्यकताओं को पूरा करते हैं। बैंक, साहूकार, निगम, आढ़तिया, एजेन्टस् तथा व्यापारी जो कि द्रव्य का लेन-देन करते हैं इस बाजार के अंग हैं। द्रव्य बाजार निवेशकों (Investors) तथा आवश्यकता से अधिक धन रखने वाले व्यक्तियों को अपना धन निवेश (Invest) करने के लिए आकर्षित करते हैं और व्यापार तथा उद्योग के लिए धन एकत्रित कर उन्हें देते हैं। ये बाजार बड़े बड़े व्यापारिक स्थानों जैसे बम्बई, कलकत्ता, अहमदाबाद, कानपुर आदि पर स्थित हैं।

(२) शेयर बाजार— इस प्रकार के बाजार में कम्पनियों के शेयर, स्कन्ध तथा ऋण-पत्र, सरकारी प्रतिभूतियाँ, हुन्डी तथा विनिमय पत्रों का क्रय-विक्रय होता है। ये बाजार पूंजी को, एक उद्योग से दूसरे उद्योग को, एक व्यापार से दूसरे व्यापार को तथा एक स्थान से दूसरे स्थान को स्वतन्त्रता से आने-जाने में सहयोग देते हैं और उद्योगपतियों तथा व्यापारियों की लम्बी अवधि के ऋणों की पूर्ति करते हैं। ये बाजार वैज्ञानिक ढंग से नियन्त्रित होते हैं और उनका कार्य नियमित रूप से चलाया जाता है। कलकत्ता, बम्बई, कानपुर, दिल्ली तथा मद्रास आदि बड़े-बड़े स्थानों पर शेयर बाजार स्थापित हैं।

(३) विदेशी-विनिमय बाजर— विदेशी मुद्रा के लेन-देन के लिए यह एक अत्यधिक विशिष्ट बाजार होता है। अन्तर्राष्ट्रीय ऋणों का भुगतान इसी बाजार द्वारा होता है। विदेशी व्यापार के लिए विदेशी मुद्रा इसी बाजार से प्राप्त होती है। यह बाजार सारे संसार में फैला होता है। आयात तथा निर्यात व्यापार में इससे बड़ी सुविधा मिलती है और लेनदार देश को उसकी मुद्रा में सुगमता से भुगतान मिल जाता है। मद्रास, वम्बई, कलकत्ता, तथा दिल्ली जैसे स्थानों पर विदेशी विनिमय केन्द्रित हैं।

———

प्रकरण
३

बाजार के कार्य तथा पारिभाषिक शब्द

बाजार के कार्य— बाजार का मुख्य कार्य मूल्य-निर्धारण है लेकिन उसके दूसरे कार्य भी आधुनिक समाज के लिए कम उपयोगी नहीं हैं। उत्पादन क्षेत्रों से विभिन्न पदार्थ भारी मात्रा में बाजार में एकत्रित होते हैं और वहां उनका क्रय-विक्रय होता है। उपभोक्ताओं तक सामान पहुँचाना बाजार का ही कार्य है। अधिक पदार्थ वाले स्थान से कमी वाले स्थान के लिए माल जुटाना बाजार ही द्वारा सम्भव है। बाजार से उपभोक्ताओं को उचित मूल्य पर उनकी आवश्यकता की वस्तुयें सुगमता से मिल जाती हैं। बाजार के कारण पदार्थों का मूल्य स्थिर रहता है और उद्योगपति तथा व्यवसायी मूल्यों के भारी उतार चढ़ाव से होने वाली सम्भावित हानि से भविष्य की डिलीवरी के लिये सौदे करके अपने को सुरक्षित कर सकते हैं।

सौदे (Transactions)— बाजार में प्रायः दो प्रकार के सौदे होते हैं। (१) तैयार माल के सौदे (Spot or ready business), (२) वायदे के सौदे (Forward or future business)। तैयार माल के सौदे में माल की डिलीवरी उसी दिन या दूसरे दिन दे दी जाती है लेकिन वायदे के सौदे का निबटारा भविष्य की एक निश्चित तिथि पर होता है। माल की डिलीवरी के ढंग और स्थान माल की किस्म पर निर्भर रहते हैं। अगर क्रेता माल की डिलीवरी जहाज के माल उतारने के स्थान पर लेता है तो उसे जहाज पर डिलीवरी (Ex-ship delivery) कहते हैं और क्रता को फिर माल को अपने घर तक लाने का सारा व्यय उठाना पड़ता है। माल के आने पर डिलीवरी (Goods to arrive) का अर्थ है कि माल के सुरक्षित आ जाने पर डिलीवरी दी जायेगी। इसी प्रकार गोदाम पर (Ex-godown या ex-warehouse), कारखाने पर (Ex-factory), महसूल चुकाने पर (In-bond) डिलीवरी के सौदे भी हो सकते हैं। जब विक्रेता माल का महसूल आदि चुका देता है और माल की डिलीवरी महसूल गोदाम पर तय होती है तो उसे बिना महसूल गोदाम पर (Ex-bond) डिलीवरी कहा जाता है और डिलीवरी आदेश प्रस्तुत करने पर महसूल गोदाम से माल की डिलीवरी मिलती है।

सट्टा (Speculation or Dealings in Futures)— सट्टा एक प्रकार का वायदे का सौदा होता है। वायदे के सौदे और सट्टे में अन्तर यह है कि वायदे के सौदे में निश्चित तिथि पर माल की डिलीवरी वास्तव में ली दी जाती है। लेकिन सट्टे में माल की डिलीवरी का प्रश्न नहीं उठता। मूल्य में घट-बढ़ के कारण जो लाभ या हानि होती है उसका लेन-देन हो जाता है और सौदा निबट जाता है। सट्टे में

व्यापारी माल का क्रय या विक्रय इस आशा से करता है कि माल के भुगतान की तिथि तक मूल्य में आशानुकूल चढ़ाव या उतार होने पर वह माल विक्रय करके या क्रय करके लाभ उठा लेगा। अगर पहिला सौदा वह खरीद का करता है तो दूसरी बार वह माल बेचता है और यदि पहिले बेचा है तो दूसरी बार क्रय करता है। यह आवश्यक नहीं है कि वह दोनों सौदे एक ही व्यक्ति से करे। दूसरा सौदा किसी भी सटोरिये से किया जा सकता है क्योंकि बाजार के सौदे का निबटारा एक निकास-गृह (Clearing House) द्वारा हो जाता है।

बाजार के पारिभाषिक शब्द (Market Terminology)

अन्य शास्त्रों की तरह, बाजार की भाषा भी विशिष्ट होती है। हम यहाँ पर कुछ ऐसे शब्दों का विवेचन करेंगे जो कि सामान्यतः बाजार समाचारों में प्रयुक्त किये जाते हैं।

उद्धरण (Quotations)— माल बेचने के लिये जो मूल्य प्रस्तावित किया जाता है उसे उस माल का उद्धरण कहते हैं। माल के विषय में पूछताछ करने पर विक्रेता माल के उद्धरण भेजता है या अपने सूचीपत्रों में उन्हें प्रकाशित करता है। बाजार-उद्धरण (Market Quotation) इससे भिन्न है। बाजार में बिके माल के मूल्य और उनसे सम्बन्धित शर्तों के विधिवत् लेख को बाजार उद्धरण कहते हैं।

बाजार भाव (Market Price)— वह कीमत है जोकि बाजार में हुए सौदे में किसी वस्तु के लिये दी जाती है। बाजार-भाव माँग और पूर्ति के संतुलन पर निर्भर होता है।

बाजार-मूल्य (Market Value)— वह मूल्य है जिस पर कि विक्रेता बाजार में अपनी वस्तु बेचने की आशा करता है। किसी पदार्थ का बाजार-मूल्य उसकी अल्प-अवधि औसत कीमत के बराबर होता है।

कुल विक्रय या बिक्री (Turn-over)— किसी दिन में या किसी अवधि में जो कुल माल बिकता है उसके योग को उस समय की कुल विक्रय कहते हैं। इसमें तैयार माल और वायदे के भी सौदे सम्मिलित रहते हैं।

कुल खरीद (Offtake)— बाजार में किसी निश्चित समय के भीतर जो कुल क्रय होता है उसे उस समय की कुल खरीद कहते हैं। इसमें भी तैयार माल तथा वायदे के सब सौदे हिसाब में लिये जाते हैं।

बाजार में माल की प्रचुरता (Glut in market)— बाजार की वह स्थिति है जिसमें माल की पूर्ति माल की माँग से इतनी अधिक होती है कि माल उचित भाव पर बिकना कठिन हो जाता है।

मोल-भाव करना (Haggling)— क्रेता और विक्रेता के बीच वस्तु की कीमत ठहराने के लिये जो प्रयत्न किये जाते हैं उसे मोल-भाव करना कहते हैं।

बाजार-तोड़ स्पर्धा (Dumping)— कीमतें कम करके किसी देश का बाजार हथियाने के लिए जो बाहरी देश कटु स्पर्धा करते हैं उसे बाजार-तोड़ स्पर्धा कहते

हैं। इसके कारण आयात करने वाले देश में आयात वस्तुओं का भाव बहुत गिर जाता है।

सट्टे के व्यापार में व्यापारियों की स्थिति सूचक शब्द

तेजड़िया या तेजी वाला (Bull)— जब कोई सटोरिया इस आशा से माल खरीदता है कि माल की डिलीवरी से पहिले माल के दाम बढ़ जायेंगे और वह बढ़े हुए भाव पर माल बेचकर लाभ उठायेगा, तो वह इस सौदे के सम्बन्ध में तेजड़िया (Bull) कहलाता है। जो सटोरिया सदा तेजड़िया के रूप में ही कार्य करता है उसे पक्का तेजड़िया (Staunch or Seasoned Bull) कहते हैं। जबकि तेजड़िये को भाव के सुधार के लिए अपने अनुमानित समय तक प्रतीक्षा करनी पड़ती है और भाव नहीं बढ़ता, तो उसे थका हुआ या पुराना तेजड़िया (Tired or Stale Bull) कहते हैं और यदि फिर उसे सौदे के निबटारे की तिथि तक प्रतीक्षा करनी पड़े और भाव न बढ़े तो उसे हताश या घबड़ाया हुआ तेजड़िया (Disappointed or Disgruntled Bull) कहते हैं। जो तेजड़िया दाम गिरने पर तेजी वाले सिद्धान्त से हटकर मन्दी की आशा करने वाले लोगों में सम्मिलित हो जाता है अथवा माल को बेचना आरम्भ कर देता है तो उसे कमजोर तेजड़िया (Weak Bull) कहा जाता है। अमेरिका में तेजड़िये को Long कहते हैं और उसके सौदे को Long deal।

फंसा तेजड़िया (Trapped Bull)— भावों के बढ़ने की आशा में कभी-कभी तेजड़िये भारी सौदा कर लेते हैं। भुगतान के दिन तक जब वे खरीदे हुए माल को नहीं बेच पाते तो भुगतान के दिन उन्हें अपने सौदे कटाने के लिए अपना माल बेचना होता है। जब इस स्थिति का पता अन्य सटोरियों को लग जाता है तो वे उनके माल को नहीं खरीदते और उन्हें बाजार भाव से नीचे माल बेचने के लिए विवश कर देते हैं। ऐसे तेजड़ियों को फंसा हुआ तेजड़िया (Trapped Bull) कहा जाता है। कभी कभी इसके कारण बहुत से तेजड़ियों के दिवाले निकल जाते हैं।

मन्दड़िया या मन्दीवाला (Bear)— वह सटोरिया जो कि इस आशा में माल बेचता है कि भविष्य में भाव गिरने पर वह माल क्रय करके लाभ उठायेगा, मन्दड़िया कहलाता है। इनको अंग्रजी में Short या Bear Operator भी कहते हैं। जो सटोरिया हमेशा मन्दड़िया के रूप में ही कार्य करता है उसे पक्का मन्दड़िया (Tight or Stark Bear) कहते हैं। जब कि मन्दड़िये को भाव की गिरावट के लिए अपने अनुमानित समय तक राह देखनी पड़ती है और भाव नहीं गिरते तो उसे थका हुआ या उखड़ा हुआ मन्दड़िया (Broken or Routed Bear) कहते हैं और यदि उसे माल के निबटारे की तिथि तक प्रतीक्षा करनी पड़े और भाव न गिरे तो उसे निराश मन्दड़िया (Nervous or Confused Bear) की संज्ञा दी जाती है।

फंसा हुआ मन्दड़िया (Squeezed Bear)— जब बाजार में मन्दड़ियों की भारी बिकबाली की जानकारी अन्य सटोरियों को हो जाती है तो वे भारी मात्रा में

खरीद कर भाव बढ़ा देते हैं जिससे कि मन्दड़िये को माल के निबटारे की तिथि को ऊंचे भाव पर माल क्रय करना पड़ता है। ऐसे मन्दड़िये को फंसा हुआ मन्दड़िया कहा जाता है।

तेजड़ियों की खरीद, तेजड़ियों की लेवाली आदि शब्दों के लिए अंग्रेजी में, To go long, bull interest, speculative purchases, bull purchases, bull support, bullish activity आदि शब्दों का प्रयोग किया जाता है और तेजड़ियों की भारी खरीद के कारण बाजार का जो रुख होता है उसे तेजोन्मुख (Bullish) और सटोरियों में जो भावना फैलती है उसे तेजी की भावना (Bullish sentiment) कहते हैं।

मन्दड़ियों की बिकबाली या मन्दड़ियों का विक्रय या बिक्री के लिए to go short, short interest, speculative sales, bear sales, bear support, bearish activity, bear drive, bear sweep आदि शब्द प्रयुक्त किये जाते हैं और मन्दड़ियों की भारी बिक्री के कारण बाजार की जो प्रवृत्ति होती है वह मन्दी की प्रवृत्ति (Bearish) और सटोरियों की भावना मन्दी की भावना (Bearish sentiment) कहलाती है।

तेजीकारक बात (Bull factor)— कोई बात जिससे भाव बढ़ने की सम्भावना हो तेजीकारक बात कहलाती है।

मन्दीकारक बात (Bear factor)— कोई बात जिससे भाव गिरने की सम्भावना हो मन्दीकारक बात कहलाती है।

तेजड़ियों का प्राधान्य (Bull Account)— जब तेजड़ियों की खरीद मन्दड़ियों की बिकबाली से बहुत अधिक होती है तो इसे तेजड़ियों का प्राधान्य कहा जाता है। तेजड़िये जिन क्रय की वस्तुओं का न तो मूल्य ही चुकाते हैं और न उनकी डिलीवरी ही लेते हैं तो उनका वह क्रय तेजड़ियों का अरक्षित प्राधान्य (Uncovered Bull Account) कहलाता है।

मन्दड़ियों का प्राधान्य (Bear Account)— जब मन्दड़ियों की बिकबाली तेजड़ियों की खरीद से अधिक होती है तो इसे मन्दड़ियों का प्राधान्य कहते हैं। अगर मन्दड़ियों ने माल बेचा है और वह उनके पास नहीं है तो इस स्थिति को खुला मन्दड़ियों का प्राधान्य (Open Bear Account) कहा जाता है।

तेजड़ियों की हवाबाजी (Bull Campaign)— जब भाव तेजड़ियों के अनुमान के अनुसार ऊँचे नहीं उठते या ऊँचे होने के स्थान पर गिरने लगते हैं तो कभी कभी तेजड़िये भाव बढ़ाने के लिए तेजीकारक बातों का झूठा प्रचार स्वयं या अपने एजेन्टों द्वारा करते हैं। इसे तेजड़ियों की हवा-बाजी कहा जाता है।

मन्दड़ियों का धावा (Bear Raid)— भावों को गिराने के लिए मन्दड़िये जो प्रयत्न करते हैं उसे मन्दड़ियों का धावा (Bear Raid, Bear Tactics या Bearing the Market) कहा जाता है।

तेजड़ियों की कटान या बिकबाली (Bull Liquidation, unloading by bulls, long liquidation या Distress sales)— जब भावों के बढ़ने की प्रतीक्षा करते करते सौदे के निबटाने की तिथि पास आ जाती है और भाव में सुधार की कोई आशा नहीं रहती तो वायदा पूरा करने के लिए तेजड़ियों को अपना माल बाजार भाव पर बेचना होता है। इस प्रकार की बिक्री को तेजड़ियों की कटान कहते हैं।

मन्दड़ियों का पटान या लेवाली (Bear or Short Covering)— जब मन्दड़ियों को अपने बेचे हुए सौदों का पटान करने के लिए घाटे पर माल खरीदना पड़ता है तो इसे हम मन्दड़ियों की पटान कहते हैं। मन्दड़िये जब तक वह माल नहीं खरीद लेते जोकि उन्होंने बेच रखा है तब तक अरक्षित मन्दड़िये (Uncovered Bears) कहलाते हैं।

बाजार हथियाना (Long Corner)— जब तेजड़ियों का प्राधन्य बाजार में होता है तो कभी कभी धनवान तेजड़िये बाजार का कुल माल खरीद कर उस पर अपना एकाधिकार कर लेते हैं और फिर बाजार को अपनी इच्छा के अनुसार बढ़ा देते हैं। इसे बाजार हथियाना कहते हैं।

मन्दड़ियों की कोरी बिक्री (Short or Blank Sale)— भाव गिराने के लिए मन्दड़िये जो लगातार भारी बिक्री करते हैं, इस आशा से कि बाजार को भुलावे में डाल कर भाव कम होने पर वह माल क्रय करके लाभ उठा लेंगे, उसे मन्दड़ियों की कोरी बिक्री कहते हैं।

भाव-वृद्धि-कारक सौदे (Rigging)— तेजड़िये भावों को बढ़ाने के लिए अफवाहों के फैलाने के साथ-साथ आपस में कुछ नाम-मात्र सौदे भी करते हैं जिससे बाजार वालों को विश्वास हो जाय कि माल के मूल्य अवश्य बढ़ेंगे। ये नाम-मात्र सौदे बड़े संगठित ढंग से किए जाते हैं। इन भाव बढ़ाने वाले सौदों को भाव-वृद्धि-कारक सौदे (Rigging) कहते हैं।

व्यवसायिक गुट तथा संघ (Rings and Pools)— कभी कभी कुछ व्यापारी मिलकर अपना गुट इसलिए बनाते हैं कि माल को रोक कर भाव बढ़ाये जायं और भारी लाभ उठाया जाय। इस प्रकार के ठहराव करने वालों को व्यवसायिक गुट (Ring) कहते हैं। जब उत्पादक अपना संघ इस उद्देश्य से बनाते हैं कि वे मिलकर अपना माल बेचेंगे जिससे आपस में प्रतिस्पर्धा न हो और मिलकर बेचने से जो लाभ होगा आपस में उचित रूप में बांट लेंगे तो ऐसी व्यवस्था को उत्पादक संघ या व्यवसायिक संघ कहते हैं।

आमद (Arrivals)— किसी निर्धारित समय में जो माल बाजार में बिकने के लिए आता है उसे उस समय की माल की आमद (Arrivals) कहते हैं। माल की आमद से माल की पूर्ति बढ़ जाती है।

समायत सौदा (Square Deal)— वायदे के सौदे में जब माल की डिलीवरी

या भुगतान न ले देकर, भाव के अन्तर के अनुसार लेन-देन करके सौदे का निबटारा कर लिया जाता है तो इसे सौदा निबटाना या समायत सौदा (a square deal, settlement or switch off) कहा जाता है। इसके अतिरिक्त तेजड़िये तथा मन्दड़िये अपने क्रय तथा विक्रय को बराबर करने के लिए जो सौदे करते हैं वे समायत सौदे कहलाते हैं।

मध्य भावान्तर सौदे (Arbitrage)— जब कि किसी पदार्थ का भाव विभिन्न बाजारों में मूल्य समता से भिन्न होता है तो व्यापारी लाभ उठाने के लिए दो बाजारों में एक साथ सौदा करता है। जिस बाजार में भाव कम होता है वहाँ क्रय करता है और जिस बाजार में भाव अधिक होता है वहाँ बेचता है। जहाँ तक सम्भव है सौदे एक साथ किये जाते हैं क्योंकि विलम्ब से करने पर भाव के घट बढ़ जाने से सौदे करने वाले को हानि हो सकती है।

भावान्तर बदनी (Straddle)— भावान्तर बदनी के सौदे एक ही बाजार में किसी पदार्थ के भिन्न फ्यूचर्स क्रय या विक्रय करके, भिन्न पदार्थों के फ्यूचर्स को क्रय या विक्रय करके, या भिन्न बाजारों में एक ही पदार्थ के फ्यूचर्स में मूल्यान्तर होने के कारण उनका क्रय-विक्रय करके किये जाते हैं। भविष्य में जब भाव अनुकूल होते हैं तो उनका कटान कर लाभ उठाया जाता है।

सुरक्षा के सौदे (Hedging)— सुरक्षा के सौदे अधिकांश विनिर्माता, मिल-मालिक या माल के स्टाकिस्ट द्वारा किये जाते हैं। एक मिल का मालिक जिसने भविष्य में माल बेच रखा है कच्चे माल का फ्यूचर्स खरीद कर अपने को सुरक्षित कर सकता है। माल की डिलीवरी के समय कच्चे माल का भाव यदि बढ़ भी जाता है तो मिल मालिक को कोई विशेष हानि नहीं होगी। एक सटोरिया भी सुरक्षा का सौदा कर सकता है। यदि वह देखता है कि जिस फ्यूचर्स को उसने क्रय किया है उससे उसे हानि होने की आशा है तो वह दूसरी बार फ्यूचर्स बेच कर अपने को सुरक्षित कर सकता है।

बदली करना (Switch over)— भाव के अनुकूल न होने के कारण जब कोई सटोरिया अपने सौदे की मियाद बदलना चाहता है तो भाव के घट-बढ़ के अन्तर के अनुसार बदलौनी देकर पहिले सौदे का निबटारा हो जाता है और उसी आधार पर दूसरी मियाद का सौदा तय कर लिया जाता है। इसे बदली करना कहते हैं।

विकल्प (Option)— बदनी के सौदों में किसी को जो माल को क्रय करने या बेचने का अधिकार दिया जाता है उसे विकल्प कहते हैं। विकल्प क्रय करने के लिए विकल्प-द्रव्य (Option money) तेजी-मन्दी खाने वाले को देना पड़ता है। जो विकल्प क्रय करता है उसे तेजी-मन्दी लगाने वाला कहते हैं। विकल्प तीन प्रकार का होता है।

तेजी लगाना (Call Option)— तेजी लगाने से तेजी लगाने वाले को तेजी खाने वाले से विकल्प-द्रव्य के भुगतान के अनुसार माल की निश्चित मात्रा एक निश्चित

समय के भीतर क्रय करने का अधिकार मिल जाता है और यह उसकी इच्छा पर है कि क्रय करे या न करे। निश्चित समय के भीतर यदि माल का भाव बढ़ जाता है तो बढ़े हुए भाव पर वह माल बेच कर अनुबन्धित भाव पर क्रय कर लाभ उठा सकता है और यदि इस बीच में भाव नहीं बढ़ते तो वह अपने विकल्प का प्रयोग नहीं करता। इसी प्रकार मन्दड़िये तेजी लगा कर अपनी बिकवाली करते हैं जिससे कि माल का भाव बढ़े तो उन्हें विशेष घाटा न हो। ऐसे मन्दड़ियों को सुरक्षित मन्दड़िया (Protected Bear) कहते हैं।

मन्दी लगाना (Put Option)— मन्दी लगाने से किसी माल को निश्चित मात्रा में निश्चित समय के भीतर एक निश्चित मूल्य पर बेचने का विकल्प प्राप्त होता है। मन्दी लगाने वाला इस आशा से मन्दी लगाता है कि माल का भाव गिरेगा और वह उससे लाभ उठायेगा। अगर माल का भाव इतना गिर जाता है कि वह विकल्प द्वारा निर्धारित माल के भाव में से विकल्प-द्रव्य को घटा कर जो राशि आती है उससे कम है तो मन्दी लगाने वाला अपने विकल्प का प्रयोग करेगा। वह गिरे हुए भाव पर माल क्रय करेगा और उसे अनुबन्धित भाव पर मन्दी खाने वाले को बेच कर लाभ उठायेगा। तेजड़िये मन्दी लगा कर अपने सौदे करते हैं जिससे कि आशा के विपरीत भाव गिरने पर उन्हें कोई विशेष हानि न हो। ऐसे तेजड़िये को सुरक्षित तेजड़िया (Protected Bull) कहते हैं।

तेजी-मन्दी लगाना या नजराना लगाना (Double Option)— तेजी-मन्दी लगाने में इच्छा पर माल को क्रय करने या माल को बेचने का अधिकार प्राप्त होता है। नजराने की दर तेजी लगाने या मन्दी लगाने की दर से अधिक होती है क्योंकि तेजी-मन्दी खाने वाले को अधिक जोखिम उठानी पड़ती है।

घट-बढ़ लगाना (Gale Option)— सौदे के समय के बाजार भाव से ऊँचे या नीचे दर पर तेजी-मन्दी लगाने को घट-बढ़ लगाना (Gale Option) कहते हैं।

दलालों के प्रकार

आढ़तिया (Factor)— वह व्यक्ति होता है जो सौदे अपने निजी नाम पर कर सकता है और उस माल का क्रय-विक्रय भी अपने नाम पर कर सकता है।

दलाल (Broker)— इसका क्रेता और विक्रेता को आपस में मिलाने का कार्य है। इसे दोनों ओर से दलाली मिलती है।

क्रय दलाल (Purchasing Agent)— ये लोग अपने स्वामी के नाम पर आदेशानुसार माल क्रय करते हैं।

विक्रय दलाल (Selling Agent)— ये लोग अपने स्वामी के नाम पर सौदे विक्रय करते हैं।

प्रकरण
४

बाजार समाचार तथा अध्ययन

आधुनिक बाजार-संगठन की एक विशेषता यह है कि बाजार समाचार और बाजार-भाव का प्रकाशन नियमित रूप से किया जाता है जिससे कि बाजार की गति-विधि में रुचि रखने वाले बाजार की खबरों से अवगत होकर उन से लाभ उठा सकें। व्यवसायियों, सटोरियों, उत्पादकों, विनिर्माताओं तथा उपभोक्ताओं के लिए बाजार के समाचार विशेष महत्व रखते हैं। बाजार समाचार किसी पदार्थ के बाजार की या कई पदार्थों के बाजार की एक निश्चित समय की स्थिति पर प्रकाश डालते हैं। बाजार-समाचार में साधारणतया नीचे लिखी बातों की चर्चा रहती है :—

(१) व्यवसाय का स्थान और तारीख।

(२) आलोच्य समय— दिन, सप्ताह या माह।

(३) क्रय-विक्रय के पदार्थ और उनकी किस्में।

(४) मांग-पूर्ति की स्थिति।

(५) व्यापार की मात्रा तथा स्टाक।

(६) लेन-देन जो हुआ, डिलीवरी और भुगतान की शर्तें।

(७) भाव तथा उनमें घटा-बढ़ी और उसके कारण।

(८) समाचार देने वाले की राय और भविष्यवाणी।

बाजार-समाचार का मुख्य उद्देश्य किसी बाजार में माँग और पूर्ति के नियम द्वारा निर्धारित कीमतों का प्रकाशन है। यह किसी दिन, सप्ताह या माह की किसी पदार्थ के या पदार्थों के बाजार की व्यापारिक स्थिति की झलक है। एक दैनिक बाजार समाचार में भावों के प्रकाशन के साथ साथ उनके घटने और बढ़ने के कारणों पर प्रकाश डाला जाता है। खुलने और बन्द होने के भाव दिये रहते हैं और पिछले दिन के बन्द भाव भी दिये जाते हैं जिससे कि उससे तुलना करके बाजार का रुख ज्ञात हो सके। साप्ताहिक समाचार सोमवार से लेकर शनिवार तक हुए व्यापार की खबरें देते हैं और इनका प्रकाशन समाचारपत्रों में सोमवार के दिन अधिकांशतः होता है। साप्ताहिक विवरण में पिछले सप्ताह के बन्द होने के भाव, आलोच्य सप्ताह के खुलने के भाव तथा बन्द होने के भाव, सप्ताह में सब से ऊँचे जाने वाले भाव तथा सबसे नीचे जाने वाले भाव का उल्लेख रहता है और उसकी समीक्षा दी जाती है। विवरण समाचार-लेखक के निष्कर्ष के साथ समाप्त होता है। इसी प्रकार जिन पदार्थों के बाजार अधिक व्यवस्थित तथा स्थायी हैं उनक सामयिक विवरण तैयार किया जाता है और प्रकाशित होता है।

बाजार-समाचारों का अध्ययन

बाजार-समाचारों की भाषा विशिष्ट होती है। अतः बाजार-समाचारों को समझने के लिये बाजार-शब्दावली तथा उसके अर्थों से भली भाँति परिचित होना आवश्यक है। बाजार-समाचारों में प्रयुक्त होने वाले बहुत से शब्दों का विवेचन हम पिछले प्रकरण में कर चुके हैं और कुछ का यथास्थान यहाँ तथा अन्यत्र करेंगे। भाषा में परिवर्तन होता रहता है। बाजार शब्दावली भी परिवर्तनशील है। अतः प्रयोगहीन शब्दों तथा नये शब्दों के विषय में जानकारी के लिये बाजार-समाचारों को पढ़ते रहना चाहिए। बाजार-समाचारों को पढ़ने की कला अभ्यास और प्रशिक्षण से बहुत कुछ सीखी जा सकती है लेकिन प्रयोगात्मक अभ्यास द्वारा अधिक। बाजार-समाचारों को ठीक से समझने के लिये नीचे लिखी बातों पर विचार करना चाहिये—

(१) **समाचार की किस्म**— सब से पहले यह देखना है कि विवरण दैनिक है, साप्ताहिक है या मासिक। इसके बाद देखना चाहिये कि बाजार-समाचार किस प्रकार के बाजार का है यानी पदार्थ बाजार, शेयर बाजार, द्रव्य बाजार या विदेशी विनिमय का। बाजार के स्थान को भी ध्यान देकर देखने की जरूरत है क्योंकि माल की डिलीवरी की मात्रायें विभिन्न स्थानों पर विभिन्न हैं।

(२) **रुख**— बाजार के व्यापार की स्थिति बाजार के रुख को सूचित करती है और इसको व्यक्त करने के लिये अनेक शब्दों का प्रयोग किया जाता है। बाजार में जब ऊँचे भाव चलते हैं और निकट में गिरने की आशा नहीं होती तो बाजार की टोन को दृढ़, तेज, गरम (Firm); प्रबल, मजबूत (Strong); अथवा स्थिर (Steady) कहा जाता है। ऊँचे भाव और कारोबार अधिक मात्रा में होने पर बाजार में मजबूती (Better या Improvement in the tone या to be toned up), प्रफुल्ल या चमकीला (Cheerful or bright) आदि शब्दों का प्रयोग किया जाता है।

भाव नीचे हों व कारोबार कम मात्रा में हो तो रुख मन्द (Dull), शान्त (Quiet) व बेरङ्गत (Featureless) कहा जाता है।

भावों में गिरावट के रुख को बाजार में मुलायमी आना (To be toned down), कमजोर (Weak), मुलायम (Easy) या अवसन्न (Depressed) कहा जाता है।

नीचे भाव तथा कारोबार की कमी के रुख को व्यक्त करने के लिये Diffident शब्द का प्रयोग करते हैं।

(३) **बाजार की प्रवृत्ति**— इससे भावों की प्रवृत्ति का पता लगता है। भावों की बढ़ने की प्रवृत्ति को Upward, Rising, Hardening, Optimistic आदि शब्दों से व्यक्त करते हैं। थोड़े समय के लिये बड़ी वृद्धि होने पर Spurt तथा बड़ी गिरावट होने पर Dips or Recessions शब्द का प्रयोग किया जाता है। गिरे हुए भावों में

तेजी से वृद्धि को Rallying tendency कहते हैं। भावों में वृद्धि की आशा से प्रतीक्षा करना Reserved tendency कहलाती है। साधारणतया गिरावट की प्रवृत्ति को Falling, Pessimistic, Down Trend, Softening आदि शब्दों से व्यक्त किया जाता है। भावों के रुख में गिरावट की प्रवृत्ति की आशंका हो और भविष्य अनिश्चित हो तो उस स्थिति को घबराहट की प्रवृत्ति (Nervous Tendency) कहते हैं। जब बढ़ते हुए भावों में गिरने और गिरते भावों में उठने की प्रवृत्ति आती है तो वह प्रतिकारक प्रवृत्ति (Reactionary Tendency) कहलाती है।

अन्दरूनी रुख (Under-tone या Under-current) बाजार के भविष्य के रुख को व्यक्त करता है।

भावों के नीचे की ओर धीरे २ खिसकने की प्रवृति को (Sagging Tendency) कहते हैं।

अनिश्चित तथा अस्थिर प्रवृति के लिये In the doldrums या Erratic शब्दों का प्रयोग किया जाता है।

(४) **सौदों की किस्म**—किस प्रकार के व्यापार का विवरण बाजार समाचार में है। तैयार माल के सौदों को ready demand; near positions; on spot; local deliveries; ready lots अदि शब्दों से व्यक्त किया जाता है। वायदे के सौदों को Forward या Future business कहा जाता है और बदनी के सौदों को Contracts, Distants या Positions शब्दों से व्यक्त किया जाता है।

(५) **व्यापार की मात्रा**—केवल बाजार-भाव ही बाजार की अवस्था का वास्तविक परिचय नहीं दे सकते। व्यापार की मात्रा का भी बाजार पर असर पड़ता है। जब बाजार में कारोबार थोड़ी मात्रा में होता है तो उसे dull, stagnant, irregular, uncertain, on small account, small lots, odd lots आदि शब्दों से तथा जब कारोबार खूब होता है तो उसे heavy, brisk, on large account, on broad scale शब्दों से व्यक्त किया जाता है।

(६) **बाजार-उद्धरण**—विभिन्न बाजारों में बाजार-उद्धरण देने की विभिन्न प्रथायें हैं जिनकी जानकारी आवश्यक है।

पदार्थ बाजार में, अनाज का भाव ४० सेर के मन का, जूट और रूई का भाव ४४० पौंड की गांठों का, चाय का भाव १०० पौं० से लेकर ८०० पौं० तक के बक्सों का, रबर और खालों का भाव एक पौंड का, तेलों का भाव प्रति पौण्ड या हन्डरवेट का और सोने और चाँदी का भाव प्रति तोला उद्धरित किया जाता है।

द्रव्य बाजार तथा विनिमय बाजारों में बाजार भाव सूद और बट्टे के अनुसार उद्धरित किये जाते हैं।

शेयर बाजार में प्रतिभूतियों के उद्धरण बाजार मूल्य में दिये जाते हैं। ये प्रतिभूतियां सम मूल्य, अधिक मूल्य, या घटे मूल्य की हो सकती हैं। इनका अंकित मूल्य स्टाक्स और शेयर्स की डाईरेक्टरी से ज्ञात किया जा सकता है।

बाजार भावों को विभिन्न शब्दों से व्यक्त किया जाता है। सर्वोच्च भावों के लिये Peak, Top, Cap, Record, Levels, Ceiling आदि शब्दों का प्रयोग किया जाता है और निम्नतर भाव Base, Floor, Bottom या Rock Bottom शब्दों द्वारा व्यक्त किए जाते है। भावों में वृद्धि व्यक्त करने के लिए Advance, marked up, look up, harden, brighten, to be lifted up, to gather, to gain ground, to put on, to gather momentum, to forge ahead, strengthen अदि शब्दों का प्रयोग होता है। भावों की मध्य स्थिति Medium, moderate, on level अदि शब्दों द्वारा व्यक्त की जाती है। भावों के एकाएक तेजी से बढ़ने के लिये Shoot up, flare up, jump, leap, spurt, तथा एकाएक काफी गिरने के लिये Precipitous fall आदि शब्दों को प्रयोग में लाते हैं। कम गिरावट या कम वृद्धि a shade या a trifle द्वारा, सीमित दायरे में घटत-बढ़त को within narrow margins, within narrow limits, within a narrow range से, उल्लेखनीय तेजी से घट-बढ़ को अप्रत्याशित, तीव्र, तीखी, sharp, sudden या smart द्वारा, भावों में अचानक परिवर्तन को Abrupt, तथा उल्लेखनीय परिवर्तन को Marked द्वारा व्यक्त करते हैं।

भावों की गिरावट Sag, ease, to give way, shed, to be marked down, to lose ground, decline, loss, to deteriorate, depress, dampen, to yield, to lose, break in values अदि शब्दों द्वारा व्यक्त की जाती है। जब मन्द पड़े हुए बाजार में अचानक मांग बढ़ जाने से क्रय-विक्रय बड़े पैमाने पर होने लगता है और भावों में वृद्धि आ जाती है तो इसे Boom कहते हैं। जब भाव पर्याप्त समय तक ऊंचे बने रहते है तो उन्हें Pegged high होना कहते हैं। भावों में असाधारण तथा अनियमित वृद्धि के लिये Bulge या Soar शब्द का प्रयोग किया जाता है। भाव गिरते रहे और व्यापार कम हो तो इस स्थिति को भारी मन्दी (slump) कहते हैं।

(७) **पूर्वानुमान या धारणा**—बाजार समाचार के अन्त में समाचार लिखने वाला अपनी धारणा और पूर्व अनुमान व्यक्त करता है। इसी के आधार पर बाजार समाचार पढ़ने वाला भविष्य में व्यापार के रुख का अनुमान लगाता है। अतः बाजार समाचार की वास्तविक उपयोगिता इससे प्रगट होती है कि लेखक कहाँ तक अपना पूर्वानुमान ठीक ठीक लगाने में सफल हुआ है।

उपरोक्त बातों पर विचार करने के लिये तथा बाजार-समाचार को ठीक से समझने के लिए उसे कम से कम तीन बार अवश्य पढ़ना चाहिये। प्रथम वाचन से पाठक को उसके विषय में साधारण जानकारी प्राप्त होगी। द्वितीय वाचन में पाठक को कुछ खोजपूर्ण प्रश्नों का उत्तर ढूंढना चाहिये और तृतीय वाचन में उसे अच्छी तरह समझने का प्रयत्न करना चाहिए। अगर समाचार में कुछ नवीन शब्दावली या शब्द हों तो उससे घबराना नहीं चाहिए, बल्कि प्रसंग को ध्यान में रखकर उसका अर्थ समझने की कोशिश करनी चाहिए। ऐसा करने से बाजार-समाचार को भली

प्रकार समझा जा सकता है और उसकी व्याख्या की जा सकती है।

अच्छी तरह पढ़ने के बाद, विवरण को उसके अंगभूत भागों में विभाजित करो और फिर एक सूची के रूप में प्रस्तुत करो। लेखक के प्रत्येक कथन के लिए समाचार में कारण ढूंढो और अगर उसमें न दिया हो तो स्वयं बतलाओ। प्रत्येक लेन देन को एक दूसरे के साथ कारण-कारक से विचार करो और इसके बाद समीक्षक के निष्कर्षों का परिवीक्षण करो। अगर वे प्रमाणित न हों तो अपने निष्कर्ष निकालो जोकि उस समाचार के अध्ययन से ठीक-ठीक निकलते हों।

इतना करने के बाद पाठक इस अवस्था में पहुँच सकता है कि वह बाजार-समाचारों की ठीक-ठीक व्याख्या कर सके। बाजार-समाचारों की व्याख्या करने में नीचे लिखे चरण अन्तर्निहित हैं :—

(अ) मूल विचारों को ठीक-ठीक समझना, (आ) प्रसंगानुसार मुख्य विचार की व्याख्या करना, (इ) पारिभाषिक तथा असाधारण शब्दों का प्रसार करना, (ई) भाषा को सरल करना, (उ) कठिन तथा गूढ़ विचारों का विस्तार करना, (ऊ) अपने तरीके से उन्हें पुनः लिखना।

अधिकांश परीक्षाओं में बाजार-समाचारों के कुछ अंश व्याख्या करने के लिये दिये जाते हैं या उनको सरल भाषा में या परीक्षार्थी की भाषा में पुनः लिखाया जाता है। कठिन समाचारों की व्याख्या करना आसान है क्योंकि उनके स्थान पर सरल शब्द प्रयोग किये जा सकते हैं लेकिन सरल भाषा वाले समाचारों की व्याख्या करना कठिन होता है क्योंकि सरल को और सरल भाषा में लिखना एक कठिन कार्य है। बाजार-समाचार की व्याख्या करने वाले को इस बात की पूर्ण स्वतन्त्रता है कि वह अपनी व्याख्या में अपनी विवेचना और प्रस्तावना दे सकता है और अपने निष्कर्ष निकालकर लिख सकता है। आगे के प्रकरणों में हम कुछ बाजार-समाचारों की व्याख्या करेंगे।

———

प्रकरण
५

पदार्थ बाजार समाचार

खण्ड (क) कच्चा माल बाजार

(१) हापुड़ मण्डी

हापुड़, १४ नवम्बर। गल्ला व दालें : गेहूँ २३·७५ से २४·७५, चना १८·३२, जौ १७, बेझड़ १७, मक्का १४·२५ से १४·७५, बाजरा १६, ज्वार १४·२५, ग्वार १४, चावल बासमती ३०, मैनपुरी २२·७५, मटर दड़ा हरा १७, सफेद १८·५०, मटर दाल १८·५०, अरहर २०·५०, अरहर दाल २५, उड़द १८·७५, मूंग २२·५० से २३·२५, मसूर १८।

तिलहन : सरसों २६, तारामीरा २१, मूंगफली १८, बिनौला १·४।

(हिन्दुस्तान, शनिवार, ता० १५ नव०, १९५८)

विवेचन— ये बाजार-भाव हापुड़ मण्डी के दैनिक समाचार से सम्बन्ध रखते हैं। हापुड़ कई पदार्थों का बाजार है अत: इस समाचार में गल्ला व दालों से सम्बन्ध रखने वाले सभी भाव दिये गये हैं। भाव की दर रुपये और नये पैसों में प्रति मन दी गई है।

ये भाव तैयार माल के हैं। गेहूँ किस्म के अनुसार २३·७५ रु० मन से लेकर २४·७५ रु० प्रति मन तक बिका। चना १८·३२ रु० प्रति मन, जौ १७ रु० प्रति मन, बेझड़ १७ रु० प्रति मन, बाजरा १६ रु० प्रति मन, ज्वार १४·२५ रु० प्रति मन, ग्वार १४ रु० प्रति मन, चावल बासमती ३० रु० प्रति मन, चावल मैनपुरी २२·७५ रु० प्रति मन बिके। मक्का का भाव उसकी किस्म के अनुसार १४·२५ रु० प्रति मन से लेकर १४·७५ रु० प्रति मन तक रहा। इसी प्रकार दूसरी चीजों का दाम दिया हुआ है। तारामीरा, तिलहन की एक किस्म है।

(२) दिल्ली बाजार

दिल्ली, १४ नवम्बर। स्थानीय आटा मिलों की देसी गेहूँ की **मांग खत्म हो जाने की खबर से** आज स्थानीय गल्ला मण्डी में गेहूँ के भावों में **नरमी आई।** काबुली चने की **पूछ ताछ कम होने से** उसके भाव भी लगभग ५० नये पैसे प्रति मन **टूट गये,** लेकिन बाजरे की **सामयिक मांग शुरू हो जाने की वजह से** उसके भावों में

दृढ़ता आई। दालों में छिलका मूंग तथा मसूर की माँग अधिक होने के कारण उनके भाव ५० नये पैसों से १·५० रु० प्रति मन ऊँचे हो गये ... ...

(हिन्दुस्तान, ता० १५ नवम्बर, १९५८)

१. **विवेचन**— यह भाव विवरण दिल्ली गल्ला बाजार के दैनिक समाचार से है। विभिन्न पदार्थों के भावों के घटने-बढ़ने तथा उनके कारोबार पर इसमें प्रकाश डाला गया है।

२. **विश्लेषण**—

(क) **मांग खत्म हो जाने की खबर से**— खरीद बन्द होने की सूचना से।

(ख) **नरमी आई**— कम हुए, गिरावट आई।

(ग) **पूछताछ कम होने से**— माँग कम होने के कारण।

(घ) **टूट गये**— गिर गये, कम हो गये।

(ङ) **सामयिक माँग शुरू हो जाने की वजह से**— समय की बिक्री आरम्भ हो जाने के कारण।

(च) **दृढ़ता आई**— ऊँचे उठे, बढ़े।

३. **सारांश**— मिलों की देशी गेहूँ की खरीद बन्द होने की सूचना से गेहूँ के भाव कम हुए। काबुली चने की माँग न होने के कारण उसके भाव में ५० नये पैसे प्रति मन कमी आई। बाजरा की ऋतु की बिक्री आरम्भ हो जाने से उसके दाम कुछ बढ़े। मूंग की छिलका दाल तथा मसूर की अच्छी बिक्री होने की वजह से उनके भाव में ५० नये पैसे से लेकर १·५० रु० प्रति मन तक तेजी आई।

४. **शीर्षक**— गेहूँ के भावों में नरमी।

(३) दिल्ली गल्ला बाजार

दिल्ली, १४ नवम्बर।

वायदा भाव	खुले	बन्द	ऊँचे	नीचे
सरसों नवम्बर	२६·३०	२६·६७	२६·७०	२६·२५
मई	२२·८६	२३·४१	२३·४५	२२·८६

१. **विवेचन**— ये उद्धरण दिल्ली गल्ला बाजार के दैनिक समाचार से सम्बन्ध रखते हैं। दिल्ली बाजार में गल्ले का भाव रुपये और नये पैसे में प्रति मन की दर से व्यक्त किया जाता है।

२. **सारांश**— सरसों के नवम्बर फ्यूचर्स का भाव व्यापार आरम्भ होने पर २६·३० रु० खुला और बाजार बन्द होते समय उसका भाव २६·६७ रु० रहा यानी ·३७ रु० अधिक रहा। यह प्रगट करता है कि सरसों के नवम्बर फ्यूचर्स में कारोबार अच्छा रहा जिससे बाजार का रुख तेजोन्मुख हुआ। इसका सबसे ऊँचा भाव

२६·७० रु० तथा सबसे नीचा भाव २६·२५ रु० इसके भाव के घटत-बढ़त के दायरे की ओर संकेत करते हैं जो कि ·३५ रु० है। सरसों नवम्बर फ्यूचर्स का भाव इसके मई फ्यूचर्स से ३·२६ रु० प्रति मन अधिक बन्द हुआ। मई फ्यूचर्स का भाव इसलिए कम है क्योंकि वह इसकी फसल का समय है। उनके खुलने के भावों में ३·४४ रु० प्रति मन का अन्तर था। इस प्रकार वे दोनों १८ नये पैसे के कम अन्तर पर बन्द हुये। वैसे मई फ्यूचर्स स्वयं ·५५ रु० प्रति मन के अन्तर से बन्द हुआ। इसके घटत-बढ़त के दायरे के बिन्दुओं में ·५६ रु० अंतर है। यह इस बात का द्योतक है कि मई फ्यूचर्स का कारोबार नवम्बर फ्यूचर्स से अधिक रहा और मई के भाव में अधिक तेजी आई।

खण्ड (ख) विनिर्मित माल बाजार

(४) अमृतसर तेल तथा गुड़ बाजार

अमृतसर, १३ अक्टूबर। तेल महुआ ७०), नीम ५३), बिनौला ६१), गिरी ८६) से ६५॥), मूंगफली ६६॥), तोरिया मशीनी ६५॥।), तोरिया कोल्हू ६६), अलसी ५६), अण्डी ५७), सरसों ६७)।

गुड़ वायदा (खुलता, बन्द, ऊँचा और नीचा) फाल्गुन १४·६०, १४·०२, १४·६०, १४·०२; गुड़ मार्च १४·६५, १४·०७, १४·६५, १४·०६।

(नवभारत टाइम्स, दिनांक १५ अक्टूबर, १९५८)

१. विवेचन— उपरोक्त भाव अमृतसर तेल तथा गुड़ बाजार के हैं। तेल के भाव रुपया-आनों में प्रति मन की दर से और गुड़ वायदे का भाव रुपया तथा नये पैसों में प्रति मन की दर से व्यक्त किये गये हैं। भाव दैनिक समाचार से सम्बन्ध रखते हैं।

२. सारांश— तेल के भाव तैयार डिलीवरी के हैं। इस दिन तेल महुआ ७० रु० प्रति मन, नीम का तेल ५३ रु० प्रति मन, बिनौले का तेल ६१ रु० प्रति मन, गिरी का तेल माल के अनुसार ८९ रु० से लेकर ९५ रु० ८ आने प्रति मन, मूंगफली का तेल ६६ रु० ८ आने मन, तोरिया मशीनी तेल ६५ रु० १२ आने मन, तोरिया कोल्हू तेल ६६ रु० मन, अलसी का तेल ५६ रु० मन, अण्डी का तेल ५७ रु० मन तथा सरसों का तेल ६७ रु० मन बिका।

गुड़ के भाव वायदे के भाव हैं। फाल्गुन गुड़ १४·६० रु० मन खुल कर १४·०२ रु० मन बन्द हुआ। इस प्रकार बन्द होने पर ५८ नया पैसा प्रति मन कम रहा। इससे बाजार का रुख मन्दी की ओर संकेत करता है। इसके सब से ऊंचे और नीचे भाव भी खुलने और बन्द होने के भाव हैं। इससे प्रगट होता है कि बाजार का कारोबार कम हुआ। गुड़ मार्च के भाव भी उपरोक्त वातावरण की प्रामाणिकता सिद्ध करते हैं।

(५) बम्बई बाजार

बम्बई १४ अक्टूबर । बन्द भाव ये रहे :—

नकली रेशम— स्पेशल अक्टूबर ६१३, दिसम्बर ६२०, १२० स्पोट जापान ५।≈), १५० स्पोट जापान ६), १२० स्पोट इटली ६), १५० स्पोट इटली ६) ।

धातु— पीतल की फट १४४, अलमूनियम की फट १·७३ रु० प्रति पौण्ड, तांबे की फट २०० रु०, जस्ता इले० तैयार ७०·५०, सीसा ६८·५० टन (प्रति क्वा०) तैयार १३६ ।

(नवभारत टाइम्स, अक्टूबर १६, १९५८)

विवेचन— उपरोक्त उद्धरण बम्बई के धातु तथा रेशम बाजार के दैनिक बाजार समाचार से सम्बन्ध रखते हैं और मूल्य रुपयों में विभिन्न जिन्स की विभिन्न निर्धारित मात्रा की दर से व्यक्त किये गये हैं ।

सारांश— प्रथम भाग में नकली रेशम के भाव दिये हैं। नकली रेशम वायदे के भाव अक्टूबर के कम हैं और दिसम्बर के अधिक। इसका कारण रेशम की सप्लाई का समय हो सकता है । जापानी तथा इटली के रेशम की कई किस्में हैं और उनके तैयार माल के बन्द भाव बतलाये गये हैं ।

दूसरे भाग में धातुओं के भाव दिये हैं । मूल्य रुपयों में स्थानीय निर्धारित मात्रा में व्यक्त किये गये हैं ।

(६) दिल्ली मण्डी

दिल्ली १९ अक्टूबर

तेल तथा तिलहन— गत सप्ताह तेलों में **दोतरफा धारणा रही** और कारोबार सन्तोष-जनक रहा । मालों का स्टाक यातायात से अच्छा बना रहा । सरसों तेल (कच्ची घानी) ७४ रु० से घट कर ७२ रु० हो गया और **आमदनी अच्छी रही** । स्टाक स्थिति भी खासी थी । तेल सरसों (पक्की घानी) में माँग अच्छी होने पर भी ५० नये पैसे का **ढीलापन था** ।

त्यौहारों की मांग पूरा करने के लिए वनस्पति मिलों की ओर से **उठाव अच्छा होने के कारण** तेल मूंगफली और तेल तिल के भाव १ रु० प्रति मन तेज हो कर ६७ रु० और ६७·५० रु० व ६३ रु० और ६५ रु० क्रमशः हो गये। तेल बिनौला व तेल महुवा में आमदनी साधारण होने से **खामोशी रही** । तेल गोला (नं० २) ८५·५० रु० और ८९·५० रु० से टूट कर ८५ रु० और ८८ रु० हो गया । बम्बई से मन्दी के समाचार आते रहे । दूसरे तेलों में खामोशी रही । तिलहन मार्केट में बहुत ही मामूली घटा बढ़ी थी और कारोबार साधारण रहा ।

(१) **विवेचन**— उपरोक्त विवरण दिल्ली मण्डी के तेल तथा तिलहन विभाग

की साप्ताहिक समीक्षा है। विवरण-वेत्ता ने भावों की घट-बढ़ तथा बाजार के वातावरण पर प्रकाश डाला है।

(२) **विश्लेषण**—

दोतरफा धारणा रही— तेजी व मन्दी दोनों की ओर रुख रहा।

आमदनी अच्छी रही— तेल अच्छी मात्रा में बाहर से बाजार में आया।

ढीलापन था— भाव कम था।

उठाव अच्छा होने के कारण— खरीद अच्छी होने की वजह से।

खामोशी रही— बाजार में बहुत कम चहल-पहल रही और कारोबार कम हुआ।

(३) **सारांश**— आलोच्य सप्ताह में तेजी और मन्दी दोनों की ओर ध्यान होने की वजह से अच्छा व्यापार होता रहा। माल की आमद से स्टाक अच्छा रहा और कच्ची घानी के सरसों के तेल में २ रु० मन की कमी आई। तेल सरसों (पक्की घानी) की बिक्री अच्छी होते हुए भी भाव ५० नये पैसे से कम हो गया। त्यौहारों के कारण वनस्पति मिलों ने तेल मूंगफली तथा तेल तिल काफी खरीदा और उनके भाव १ रु० प्रति मन तेज हो गये। तेल बिनौला और तेल महुवा के भाव शान्त रहे क्योंकि उनकी आमद साधारण रही। गोले के तेल में ५० नये पैसे तथा १·५० रुपये की कमी आई। बम्बई से मन्दी की खबरें मिलती रहीं। दूसरे तेलों के भाव शान्त रहे और तिलहन बाजार में मामूली घटा बढ़ी हुई और व्यापार साधारण रहा।

खण्ड (ग) कच्चा माल बाजार तथा विनिर्मित माल बाजार (मिश्रित)

(७) दिल्ली बाजार

दिल्ली, १६ नवम्बर। **आलोच्य सप्ताह में** जिन्स वायदों में गुड़ वायदों के भाव और **कमजोर हुए।** किन्तु कपास तथा खल सरसों वायदों में **मजबूती आई।** उत्तर प्रदेश की प्रमुख मण्डियों में नये गुड़ की **आमद बढ़ने से** तेजड़ियों ने **भारी कटान की।** इससे गुड़ वायदों में **गिरावट आई।**

इसके विपरीत पंजाब की मण्डियों में कपास की फसल कम होने के विचार से कपास वायदे में मजबूती आई। खल सरसों वायदे में सरसों वायदे की **सहानुभूति में सप्ताहान्त में दृढ़ता आई।**

तेल तथा तिलहन वायदे— तेल तथा तिलहन वायदों में **मिला जुला रुख रहा।** तेल मूंगफली वायदों में मुलायमी थी जबकि सरसों वायदों में मजबूती आई।

आरम्भ में बाजार मुलायम था। मध्य सप्ताह में उत्पादन वाले क्षेत्रों की खबरों से भावों में **और गिरावट आई**। सप्ताह के अन्तिम दिनों में सरसों वायदे में खरीद के **नये समर्थन से उल्लेखनीय सुधार हुआ**। सरसों के साथ साथ तेल मूंगफली वायदों में भी **थोड़ा सुधार हुआ**। इसके बावजूद अन्त में बाजार **मिश्रित रुख पर रहा**।

प्रश्न १. मोटे अक्षरों में छपे वाक्यांशों का अर्थ समझाकर लिखो।

२. उपरोक्त बाजार-समीक्षा को अपने शब्दों में लिखो।

उत्तर— १. आलोच्य सप्ताह में— समीक्षा किये जाने वाले सप्ताह में अर्थात् १६ नवम्बर को समाप्त होने वाले सप्ताह में।

और कमजोर हुए— पहिले गिरे थे उसके बाद फिर गिरावट आई।

मजबूती आई— भाव बढ़े।

आमद बढ़ने से— बाजार में अधिक माल आने के कारण।

भारी कटान की— अपने सौदे निबटाने के लिए भारी मात्रा में माल बेचा।

गिरावट आई— भाव में कमी आई।

सहानुभूति में सप्ताहान्त में दृढ़ता आई— जब किसी जिन्स या जिन्सों की कीमत घटने या बढ़ने पर दूसरी जिन्स का भाव घटता या बढ़ता है तो इसे सहानुभूति में घटना या बढ़ना कहते हैं। यहाँ पर सरसों वायदे के भाव बढ़ने के कारण खल सरसों वायदे के भाव सप्ताह के अन्त में बढ़े।

मिला जुला रुख रहा— इसका तात्पर्य है कि तेल या तिलहन के वायदों के भाव कभी मन्दी की ओर और कभी तेजी की ओर रहे।

और गिरावट आई— भाव पहिले कम हुए थे, उसके बाद फिर कम हुये।

नये समर्थन से उल्लेखनीय सुधार हुआ— माल की खरीद करने को समर्थन करना कहते हैं। यहाँ नये समर्थन से तात्पर्य नई खरीद से है। जब गिरा हुआ भाव ऊँचा उठता है तो उसे सुधार कहा जाता है अतः इस वाक्यांश का तात्पर्य यह हुआ कि सरसों वायदों की नई खरीद के कारण गिरे हुए भाव पर्याप्त ऊँचे उठे।

थोड़ा सुधार हुआ— गिरे हुए भाव कुछ ऊँचे उठे।

मिश्रित रुख पर रहा— इसका अर्थ है कि बाजार का रुख तेजी और मन्दी दोनों की ओर रहा।

२. सोलह नवम्बर को समाप्त होने वाले सप्ताह में गुड़ वायदों के दाम और कम हुए लेकिन कपास और खल वायदों के भाव ऊँचे उठे। उत्तर प्रदेश की मण्डियों में गुड़ की आमद बढ़ जाने के कारण तेजड़ियों ने अपने क्रय के सौदों का निबटारा करने के लिए भारी मात्रा में माल बेचा। इससे गुड़ वायदे के भाव और अधिक कम हो गये।

इस समाचार से कि पंजाब की मंडियों में कपास की फसल कम आ रही है कपास वायदों के भाव ऊँचे उठे। सरसों वायदों के भाव बढ़ने के कारण खल वायदों के भाव भी सप्ताह के अन्त में ऊँचे उठे।

तेल तथा तिलहन वायदों का रुख तेजी तथा मन्दी दोनों ओर रहा। तेल मूँगफली वायदों के भाव नरम रहे पर सरसों वायदों के भाव ऊपर उठे।

सप्ताह के आरम्भ में मन्दी थी। मध्य में उत्पादन क्षेत्रों के समाचारों से भाव और कम हुए। सप्ताह के अन्तिम दिनों में सरसों वायदों के नई खरीद के कारण गिरे हुए भाव पर्याप्त ऊँचे उठे। सरसों वायदों की वजह से तेल मूँगफली वायदों के गिरे भाव कुछ ऊपर उठे। यह सब होते हुए बाजार का रुख तेजी तथा मन्दी दोनों ओर रहा।

खण्ड (घ) सराफा (मूल्यवान पदार्थ) बाजार

(८) दिल्ली सराफा

दिल्ली, १४ नवम्बर। आज स्थानीय सराफा बाजार में प्रारम्भिक नरमी के पश्चात् सुधार हुआ। नीचे भावों पर खरीदारों के नये समर्थन तथा मन्दड़ियों की पटान से ही भावों में मजबूती आई।

आज भाव इस प्रकार रहे।

चाँदी वायदा: कार्तिक सुदी पंचमी खुली १८७·५०, बन्द १८८·१२, ऊँची १८८·२५, नीची १८७·५०।

सोना वायदा: नवम्बर खुला १११·३१; बन्द ११२, ऊँचा ११२·२५; नीचा १११·१९.

वायदा बाजार: चाँदी ११८·२५; सोना ११२; चाँदी तैयार (९९९) १८८·५०; (९९६) १८७·५०; तेजाबी १८४·३७; गट्टी १८१·३७; सिक्का १६७·५०.

सोना तैयार: पासा १११·५०; बिट्टूर ११०·५०; रवा १०९·७५; गिन्नी राजा ७३.

(हिन्दुस्तान, १५ नवम्बर, १९५८)

१. **विवेचन**— उपरोक्त भाव दिल्ली सर्राफा बाजार के दैनिक समाचार से सम्बन्ध रखता है। सोने और चाँदी के भाव रुपये और नये पैसों में व्यक्त किये गये हैं। सोने का भाव प्रति तोला दिया गया है और चाँदी का भाव प्रति १०० तोला। भावों के आरम्भ में विवरण-वेत्ता ने अपनी सूक्ष्म समीक्षा दी है।

(९९९), (९९६), तेजाबी, गट्टी, सिक्का ये चांदी की किस्में हैं और पासा, बिट्टूर, रवा सोने की किस्में। राजा की गिन्नी का भाव अलग दिया है।

चाँदी वायदा बाजार— चाँदी के वायदा बाजार के अन्तर्गत क्रेता-विक्रेता के बीच सौदा हो जाने पर माल की डिलीवरी भविष्य की एक निश्चित तिथि तक स्थगित कर दी जाती है और व्यापारियों को नियमों के अन्तर्गत यह सुविधा रहती है कि वे केवल मूल्यों के लेन-देन द्वारा सौदे बराबर कर सकें।

(२) **विश्लेषण— प्रारम्भिक नरमी के पश्चात् सुधार हुआ**— इसका तात्पर्य यह है कि आरम्भ में भाव मुलायम रहे फिर बाद में गिरे हुए भाव कुछ बढ़े।

नीचे भावों पर खरीदारी के नये समर्थन— इसका आशय है कि नीचे भाव पर जब नई खरीद हुई।

मंदड़ियों की पटान से— सौदे निबटाने की दृष्टि से जब मन्दड़िये खरीद करते हैं तो इसे मंदड़ियों की पटान कहते हैं।

भावों में मजबूती आई— भाव ऊँचे उठे।

३. सारांश— चांदी वायदा कार्तिक सुदी पंचमी का भाव आरम्भ में १८७·५० रु० रहा और बाजार बन्द होने पर १८८·१२ रु० हो गया यानी ६२ नया पैसा अधिक रहा जोकि स्पष्टतः भाव के मजबूती के रुख का सूचक है। भावों के घटत-बढ़त का दायरा ७५ नया पैसा है और इससे बाजार में अच्छा कारोबार होने की सूचना मिलती है।

सोना नवम्बर का भाव १११·३१ रु० खुलकर ११२ रु० पर बन्द हुआ और ६९ नये पैसे बढ़कर बिका। घटत-बढ़त का दायरा १·०६ रु० रहा। इससे यह स्पष्ट है कि भाव का रुख बढ़ने की ओर रहा और कारोबार अच्छा हुआ।

वायदा बाजार के अन्तर्गत सोने और चांदी के भविष्य की डिलीवरी के भाव ११२ रु० तथा १८८·२५ रु० दिये गये हैं।

इसके बाद तैयार माल के भाव दिये गये हैं। तैयार माल के भाव आगे की डिलीवरी के भाव तथा वायदों के भावों से अधिक हैं।

(६) दिल्ली सर्राफा बाजार

दिल्ली १५ अक्टूबर। आज स्थानीय सर्राफा बाजार में **सोना वायदा के नेतृत्व में मजबूती का रुख रहा**। कारोबार अच्छा हुआ और भावों में, खास तौर से सोना वायदे में, **उतार चढ़ाव अच्छा हुआ**।

बाजार स्थिर खुलकर खरीद के नये समर्थन से मजबूत हो गया। **अनधिकृत सोने की आमद** में कमी होने से ही भाव ऊंचे हुए। हालांकि **चांदी की आमद की तुलना में खपत कम थी,** किन्तु सोने के साथ साथ उसमें भी मजबूती आई।

स्थानीय महालक्ष्मी एक्सचेन्ज में खरीदारों ने **असोज के सौदों के प्रति** ८० सिल्लियों की डिलीवरी की **मांग** की है, जबकि विक्रेताओं ने ४१॥ सिल्लियों की डिलीवरी प्रस्तुत की है।

आज चांदी की सिल्लियों की आमद लगभग ४० सिल्लियों की थी, लेकिन बिक्री १२ सिल्लियों की हुई। (नवभारत टाइम्स, १६ अक्टूबर, १९५८)

१. विवेचन— यह समीक्षा दिल्ली सर्राफा बाजार के दैनिक समाचार से सम्बन्ध रखती है। इसमें रिपोर्टर ने सोने और चांदी के भावों में घटत-बढ़त, उनकी आमद, मांग तथा पूर्ति के सम्बन्ध में विवेचना की है।

२. विश्लेषण— सोना वायदा के नेतृत्व में मजबूती का रुख रहा। इसका तात्पर्य है कि सोना वायदा के भाव बढ़ने पर जो चहल-पहल हुई उससे भाव ऊंचे उठने की ओर रहे।

उतार चढ़ाव अच्छा हुआ— इसका आशय है कि भावों में अच्छी घटा-बढ़ी हुई।

बाजार स्थिर खुल कर— जब भावों में कोई घटा-बढ़ी नहीं होती तो बाजार स्थिर कहा जाता है अतः दिए हुए वाक्यांश का अर्थ हुआ कि बाजार जब आरम्भ हुआ तो भावों में घटा-बढ़ी नहीं हुई।

अनधिकृत सोने की आमद में— आजकल लगभग सभी देशों में सोने और चांदी के आयात-निर्यात पर प्रतिबन्ध है। भारतवर्ष में सोने का आयात-निर्यात रिजर्व बैंक आफ इण्डिया की स्वीकृति के बिना नहीं हो सकता। इसके लिए उससे लिखित स्वीकृति पहले से ही लेनी होती है अन्यथा कस्टम अधिकारी सोने या चांदी को देश के अन्दर नहीं आने देंगे। फिर भी कुछ लोग अनुचित लाभ उठाने के हेतु चोरी छिपे सोना विदेशों से लाने का प्रयत्न करते हैं। इस प्रकार जो सोना चोरी से लाया जाता है उसे अनधिकृत सोना कहते हैं।

चांदी की आमद की तुलना में खपत कम थी— इसका अर्थ है कि चांदी बाजार में बाहर से अधिक आई पर मांग उतनी नहीं थी।

असोज के सौदों के प्रति— वायदे के सौदे डिलीवरी की तिथि के नाम से पुकारे जाते हैं। अतः वे वायदे के सौदे जिनका निबटारा असोज माह में होता है।

३. सारांश— सोना वायदा के भाव बढ़ जाने की वजह से बाजार में खूब सौदे हुए और भावों में वृद्धि हुई। यद्यपि बाजार आरम्भ में स्थिर खुला परन्तु नई खरीदारी से भाव बढ़े। सोने के भाव चोरी के सोने की कम आमद होने के कारण ही बढ़े। चांदी की आमद अधिक होने पर भी सोने के भाव बढ़ने से उसके भाव ऊंचे उठे। स्थानीय महालक्ष्मी बाजार में चांदी की मांग पूर्ति से बहुत अधिक रही। ४० सिल्लियां बाजार में आईं और कुल १२ बिकीं।

(१०) बम्बई सर्राफा बाजार

बम्बई, २० जुलाई। पूर्व सप्ताह की कमजोरी के पश्चात् आलोच्य सप्ताह में स्थानीय सराफे में **उल्लेखनीय सुधार हो गया।**

लेबनान और जोर्डन की गम्भीर घटनाओं से महायुद्ध का भय बढ़ जाने के कारण मंदड़ियों में घबराहट फैली और उन्होंने अपनी उस बिक्री का **पटान करना शुरू कर दिया** जो उन्होंने पूर्व सप्ताह में कर डाली थी। **पेशेवरों** के दिमाग में यह भावना थी कि महायुद्ध छिड़ जाने से अरब राष्ट्रों से तस्कर सोने की आमद एकदम बन्द हो जायेगी। इसके अलावा बाजार में सोने और चांदी की **मांग में सुधार हो जाने से भी सटोरियों नें समर्थन किया** जिससे दोनों **कीमती धातुओं के दाम ऊंचें उठ गयें।**

चांदी श्रावण प्रथम रु० १७९·८७ पर खुलकर मध्य सप्ताह में रु० १८४·३१

तक ऊँची जाने के बाद मुनाफा वसूली के कारण रु० १८२·८७ पर बन्द हुई। तैयार चाँदी के भाव भी रु० १७७·८७ से रु० १८३·५० तक ऊँचे जाकर रु० १८२·१६ पर बन्द हुए। इसी प्रकार सोना श्रावण रु० १०४·२५ पर खुल कर रु० १०८·२५ तक ऊँचा जाने के बाद रु० १०६·७५ पर बन्द हुआ। तैयार सोना श्रावण १०४·२५ पर खुल कर रु० १०८·२५ तक ऊँचा जाने के बाद रु० १०६·७५ पर बन्द हुआ। तैयार सोना **श्रावण वायदे के स्तर पर** खुल कर रु० १०८·५६ तक ऊँचा जाकर बन्द होते समय रु० १०६·७५ पर रहा।

आलोच्य सप्ताह में दोनों कीमती धातुओं की **आमद खपत से अधिक रही**। इस कारण सप्ताहांत तक बाजार में सोने और चांदी का स्टाक बढ़ कर क्रमशः ३० हजार तोला तथा ६५० सिल्लियों के इर्दगिर्द आ गया।

(हिन्दुस्तान, मंगलवार, २२ जुलाई, १६५८)

प्रश्न १. मोटे अक्षरों में छपे शब्दों का अर्थ विस्तारपूर्वक समझाइये।

२. मंदड़ियों ने पटान करना क्यों आरम्भ किया ?

३. तस्कर सोना क्या है ?

४. बाजार में सोने व चाँदी का स्टाक क्यों बढ़ा ?

५. बाजार समाचार के लिए उपयुक्त शीर्षक दीजिये।

उत्तर (१)— मोटे अक्षरों में छपे शब्दों का अर्थ।

उल्लेखनीय सुधार हो गया— गिरे हुए भाव पर्याप्त ऊंचे उठे। गिरे हुए भाव जब ऊंचे उठते हैं तो इसे सुधार कहते हैं।

पटान करना शुरू कर दिया— मंदड़िये जब यह देखते हैं कि भाव गिरने के स्थान पर बढ़ते जा रहे हैं या बढ़ने वाले हैं तो वे विक्रय किये हुए माल की डिलीवरी देने के लिए खरीद करते हैं। इसे मन्दड़ियों की पटान कहते हैं।

पेशेवरों— यहाँ पर तात्पर्य है उन व्यवसायियों से जोकि सोने चांदी का व्यापार करते हैं।

मांग में सुधार हो जाने से— गिरी हुई मांग बढ़ जाने के कारण।

सटोरियों ने समर्थन किया— सोना चांदी खरीदी।

कीमती धातुओं के दाम ऊंचे उठ गये— सोने और चांदी के भाव बढ़ गये।

श्रावण वायदे के स्तर पर— सोना वायदा श्रावण के भाव के बराबरी पर।

आमद खपत से अधिक रही— मांग से अधिक माल बाजार में आया।

उत्तर (२)— मन्दड़ियों ने पटान करना इसलिए आरम्भ किया क्योंकि उन्हें यह डर हुआ कि कहीं जोर्डन और लेबनान की गम्भीर घटनाओं के कारण महायुद्ध न छिड़ जाय और माल के दाम अनाप-शनाप न बढ़ जायें। भाव बढ़ने पर मन्दड़ियों को हानि होती है और घटने पर लाभ क्योंकि ये बिना पास में हुए माल

पहिले बेच देते हैं और बाद में खरीद कर डिलीवरी देते हैं यानी सौदे का निबटारा करते हैं।

उत्तर (३)— **तस्कर सोना**— जो सोना चोरी-छिपे विदेशों से देश में लाया जाता है उसे तस्कर सोना कहते हैं। सोने और चांदी को बाहर से रिजर्व बैंक ऑफ इण्डिया की आज्ञा के बिना नहीं लाया जा सकता। कस्टम अधिकारी उन्हें देश में नहीं लाने देते जब तक कि बैंक का लिखित आदेश उन्हें नहीं दिखा दिया जाता है।

उत्तर (४)— बाजार में सोने व चांदी का स्टाक इसलिए बढ़ा क्योंकि उनकी मांग कम थी और मांग से अधिक सोना-चांदी बाजार में बिकने आया।

उत्तर (५)— 'मंदड़ियों की पटान से वायदों में अच्छा लाभ।'

खंड (ङ) पदार्थ बाजार-समाचारों पर अभ्यास

अभ्यास १

नीचे लिखे बाजार-समाचारों में मोटे अक्षरों में छपे वाक्यांशों का अर्थ स्पष्ट करिये :—

(क) चांदी १८६ से लेकर १८८ रुपये के (प्रति सौ तोले) भावों में **अनियमित रूप से घटती बढ़ती रही।** शीतकाल के शुरू हो जाने से तिब्बत से भारत में आने वाली चांदी की मुद्राओं की **आवक घटने के सम्बन्ध में** अफवाहें उड़ने के कारण **सट्टे वालों** ने चांदी की खरीद जोरों से शुरू कर दी जिसके परिणामस्वरूप भाव एक बार तो १९० पर जा पहुँचा था। किन्तु सोने की कीमत में **खामोशी रही।** (उद्यम, माह जनवरी, १९५८)

(ख) शक्कर तथा गुड़ का भाव हापुड़, दिल्ली तथा मद्रास मण्डियों में **स्थिर रहा। कोटा पद्धति** से लाभ उठाकर कुछ शक्कर मिलों ने अपनी अपनी शक्करों के भाव कुछ बढ़ा दिए। (उद्यम, माह मार्च, १९५८)

(ग) विदेशी व्यापारियों की **दिलचस्पी** नहीं रहने के कारण, **निर्यात-कर्ताओं ने भी चुप्पी साध ली।** परिणामस्वरूप गत महीने से भी कम इस महीने में **निर्यात हो सका।** (नवभारत टाइम्स, १ सितम्बर, १९५८)

(घ) सर्राफे में **उल्लेखनीय तेजी आई। कारोबार बहुत ज्यादा होने से** भावों में घटा-बढ़ी भी बहुत हुई।

बाजार थोड़ा मजबूत खुला और बाहर के **उत्साहवर्धक समाचारों** से भावों में थोड़ी और वृद्धि हुई। पश्चिमी एशिया में राजनीतिक स्थिति खराब होने से बाजार

में अच्छी तेजी आई। **तेजड़ियों** का भारी समर्थन प्राप्त हुआ और **मन्दड़ियों ने पटान की**। बीच में **मुनाफा वसूली की बिक्री** से भावों में **थोड़ी नरमी आई थी** लेकिन ईरान की सीमा पर रूसी फौजें जमा होने की खबर से बृहस्पतिवार को भावों में फिर **अकस्मात् उल्लेखनीय तेजी गई**। सप्ताह के अन्तिम दिनों में **तेजड़ियों की थोड़ी कटान से** भावों में मुलायमी आई। इसके बावजूद बाजार पूर्व सप्ताह की तुलना में तेज रहा।

(हिन्दुस्तान, २२ जुलाई, १६५८)

(ङ) दिल्ली २५ मई। **आलोच्य सप्ताह में** स्थानीय मंडियों में **अनियमितता रही**। गल्ले में काबुली चने तथा चावल के सिवाय **मजबूती का रुख रहा**। इसके अतिरिक्त तिलहनों में भी मजबूती दिखाई दी, जब कि तेलों में **मिश्रित रुख रहा**। बारदाना तथा चीनी में **मुलायमी की धारणा रही**।

सराफे में **उल्लेखनीय मन्दी आई**, किन्तु **शेयर बाजार में मिला जुला रुख था**। जिन्स वायदों में तेजी आई। सरसों वायदे के भाव भी मजबूत थे, मगर तेल मूंगफली वायदों में **मुलायमी आई**।

अभ्यास २

बम्बई, २८ जून। आलोच्य सप्ताह में तेल व तिलहन बाजार में तेल व तिलहनों के भाव काफी मजबूत रहे, लेकिन, **अरण्डी के भाव अपरिवर्तित थे**, यद्यपि **उनमें २ रु० की सीमा में उतार-चढ़ाव हुआ**।

तैयारी में सुधार के रुख के कारण मूंगफली वायदे मध्य सप्ताह में रु० ३ से अधिक ऊंचे चढ़ गए, परन्तु तिलहन उत्पादक क्षेत्रों में संतोषजनक वर्षा होने के कारण जो **मुनाफा वसूली की गई** उससे भाव कुछ गिर गए, परन्तु मिलों तथा वनस्पति घी के निर्माताओं की मांग अच्छी होने से मूंगफली के भाव दृढ़ रहे, जिसका प्रभाव वायदों पर भी पड़ा।

अगस्त सेटिलमेंट गत सप्ताह में लगभग रु० ३ ऊंचा रहा।

अरण्डी वायदे लगभग रु० २ ऊंचे उठने के बाद विदेशों की कम पूछताछ तथा अच्छी वर्षा के कारण नीचे गिर गए।

ब्रिटेन से पूछताछ होने पर अलसी के भावों में मजबूती रही। इसके अलावा तेल अलसी के लिए आस्ट्रेलिया द्वारा पूछताछ की गई। वायदे ५० नये पैसे से ऊपर बन्द हुए।

बिनौला सितम्बर **मन्दड़ियों की पटान से ऊंचे गए**।

(हिन्दुस्तान, दिनांक २० जून, १६५८)

प्रश्न १. मोटे अक्षरों में छपे शब्दों तथा वाक्यांशों का अर्थ स्पष्ट करो।
२. उपरोक्त बाजार-समाचार को अपनी भाषा में लिखो।
३. इस समाचार के लिए एक उपयुक्त शीर्षक दो।
४. बाजार का रुख कैसा रहा ?

अभ्यास ३

कलकत्ता, १६ नवम्बर। गत सप्ताह **स्थानीय पटसन बाजार** केवल तीन दिन के लिए खुला था और इन तीन दिनों में जो कारोबार हुआ उसमें सामान के भावों में **कुल मिला कर स्थिरता रही।** वायदा बाजार के **बेहतर समाचारों के कारण** तैयार बाजार में **निर्यातकों ने पटान की** जिससे भाव ऊंचे उठ गए। भावों में यह वृद्धि बोरों की अपेक्षा टाट में अधिक हुई। इसका कारण अक्तूबर माह में अमरीका में टाट की खपत में २० लाख गज की और वृद्धि होना तथा आस्ट्रेलिया से टाट की मांग आना था। **टाट की सहानुभूति में बोरों में भी कुछ सुधार हुआ था** किन्तु खरीद का समर्थन न मिलने से वह **खामोश ही बन्द हुए।**

(हिन्दुस्तान, १८ नवम्बर, १९५८)

प्रश्न— १. मोटे छपे शब्दों तथा वाक्यांशों का तात्पर्य बताओ।
२. उपरोक्त बाजार-समीक्षा के लिए एक उपयुक्त शीर्षक दो।
३. उपरोक्त समीक्षा का सारांश अपनी भाषा में लिखो।
४. उपरोक्त समीक्षा किस बाजार से सम्बन्ध रखती है ?

अभ्यास ४

बम्बई, १६ नवम्बर। स्थानीय सराफे में गत सप्ताह में वायदों में मजबूती रही और वे सप्ताह भर ऊंचे स्तर पर कायम रहे।

बाजार में ऊंचे की भावना मुख्य रूप से दो कारणों से आई। इसका प्रथम कारण तो पाकिस्तान के प्रतिकूल राजनीतिक समाचार थे और दूसरा कारण तस्कर व्यापारियों पर कड़ी निगरानी रखने के कारण कीमती धातुओं की आमद कम हो जाना था।

तैयार सोने की उपलब्धि कम पड़ जाने के कारण तैयार बाजार के व्यापारियों ने सोने पर शिकंजा कस लिया। परिणामस्वरूप तैयार सोना जो वायदे से नीचा था सप्ताहांत तक बढ़कर वायदे से ऊंचा हो गया।

तैयार सोने की मजबूती के कारण वायदों में भी सटोरियों की खरीद बढ़ गई जिससे सोना वायदा गत बन्द भावों से रु० २·५० ऊंचा उठ गया। गत छः मास में सोने के भाव पहली बार इतने ऊंचे स्तर पर पहुंचे हैं। सोने की सहानुभूति से चांदी में भी दृढ़ता आ गई।

प्रश्न— १. उपरोक्त बाजार-समाचार किस बाजार का है ?
२. उपरोक्त समाचार को अपनी भाषा में व्यक्त करो।
३. बाजार के ऊंचे उठने के क्या कारण हैं ?

अभ्यास ५

दिल्ली, २६ जून। **आलोच्य सप्ताह में** वैसे तो अधिकांश **स्थानीय मण्डियों में मजबूती का रुख था,** लेकिन व्यापारियों का ध्यान **विदेशी मुद्रा विनिमय** स्थिति पर हो रहे मन्त्रि-मण्डल के विचार की ओर लगा हुआ था । **निर्यात बढ़ने की आशा**

से देसी चीजों में मजबूती आई। निर्यात वाली चीजों के बदले में सरकार सम्भवतः विदेशी चीजों के आयात की आज्ञा देगी। इस ख्याल से **आयातित चीजों के** भावों में आलोच्य सप्ताह में गिरावट दिखाई दी। जिन व्यापारियों ने स्टाक रोक रखा था, **अब वे निकालने लगे हैं।**

(हिन्दुस्तान, १ जुलाई, १९५८)

प्रश्न— १. मोटे अक्षरों में छपे अंशों का अर्थ समझाकर लिखो।

२. आयात और निर्यात से बाजार पर क्या प्रभाव पड़ता है ?

३. व्यापारियों ने रोका हुआ स्टाक क्यों निकालना आरम्भ कर दिया ?

अभ्यास ६

दिल्ली सराफा बाजार

दिल्ली, १७ अक्तूबर। आज स्थानीय सराफा बाजार में **प्रारम्भिक दृढ़ता के बाद अकस्मात् मुलायमी आई।** कारोबार अच्छा था, जिससे भावों में **उतार-चढ़ाव भी अच्छा हुआ।**

बाजार थोड़ा दृढ़ खुला था। अधिकांश समय **सीमित घटा-बढ़ी से घूमने के बाद** भावों में अकस्मात् नरमी आई। तिब्बत से चांदी के लिए लगभग ५४,००० सिक्कों का आयात शुल्क भरे जाने से **मन्दड़ियों ने भारी कटान की।** हाजिर सोने में ऊंचे भाव देखकर ग्राहकी कम थी। इससे उसमें मुलायमी आई। इसलिए अन्त में बाजार मंदी की ओर रहा।

आज चांदी की आमद तथा खपत का अनुमान क्रमशः ३० तथा २० सिल्लियों का रहा।

बन्द भाव इस प्रकार रहे :—

चांदी तैयार (९९९) १८७·७५ (९९६) १८६·७५ तेजाबी १८४·७५ गद्दी १८१·७५ सिक्का १६७·२५

सोना—तैयार पासा १०९, विट्ठर १०७·६३, रवा १०७·६२, गिन्नी ७२·००

चांदी वायदा खुलता १८८·३१ बन्द १८७·६२ ऊंचा १८८·४४ नीचा १८७·५६

सोना वायदा खुलता १०९·३७ बन्द १०९·०० ऊंचा १०९·७५ नीचा १०८·९४

बाजारू— चांदी वायदा १८७·६२ सोना वायदा १०८·९४

प्रश्न— १. उपरोक्त बाजार-समाचार पर नीचे लिखी बातों के आधार पर विचार व्यक्त करो :—

(क) बाजार के विषय में टीका।

(ख) भावों की व्याख्या।

(ग) बाजार का कारोबार तथा रुख।

२. मोटे अक्षरों में छपे अंशों का अर्थ सरल हिन्दी में लिखो।

अभ्यास ७

दिल्ली, २८ जून। आज स्थानीय एक्सचेंजों में जिन्स वायदों में **गुड़ वायदे के नेतृत्व में उल्लेखनीय गिरावट आई**। कारोबार अच्छा हुआ।

चीनी के निर्यात कोटे से हुई निराशा के फलस्वरूप ही भाव नरम हुए। व्यापारियों का यह विचार था कि सरकार दो लाख टन चीनी का निर्यात कोटा देगी और **उत्पादन कर बढ़ेगा,** मगर निर्यात कोटा केवल ५० हजार टन का ही मिलने और उत्पादन कर न बढ़ने से सटोरियों ने भारी बिक्री की। **इससे बाजार टूटा।** आज की बिक्री में नरेला, मुजफ्फरनगर तथा कासगंज के सटोरिए प्रमुख हैं। नीचे भावों पर बाद में **थोड़ा सुधार दिखाई दिया।**

हाजिर मण्डियों में भी चीनी का आयात कोटा आशा से कम होने के कारण चीनी के भाव नरम थे। फार्म गेहूँ तथा मसूर की **ग्राहकी अच्छी होने से** उनके भावों में थोड़ी और मजबूती आई, मगर चने में पंजाब के समाचारों के आधार पर पूछताछ कम थी, इससे भाव थोड़े नरम हुए। तेल नीम तथा महुवा की भी **मांग ढीली** होने से उनमें भी थोड़ी नरमी आई। अन्य मण्डियों में स्थिरता रही।

(हिन्दुस्तान, ३० जून, १९५८)

प्रश्न— १. मोटे अक्षरों में छपे अंशों का अर्थ सरल हिन्दी में व्यक्त करो।
२. क्या उपरोक्त समाचार पूर्ण बाजार-समाचार है ? यदि नहीं तो क्यों ?
३. उत्पादन कर तथा निर्यात कोटा न बढ़ने पर जिन सटोरियों ने भारी बिक्री की उन्हें आप क्या कह कर पुकारेंगे ?
४. मसूर के भाव क्यों बढ़े ?

अभ्यास ८

बम्बई सराफा

बम्बई, १८ नवम्बर। वायदे (बन्द भाव)— चांदी कार्तिक १८९; मंगसिर १८९·९४; सोना कार्तिक ११२·९४; मंगसिर ११२·६२

तैयार चांदी : (९९६) खुली १८८·३१; बन्द १८८·९४; (९९६ से नीची) खुली १८८·१९; ऊंची १८९·०६; नीची १८८·१२; बन्द १८८·८१; (९१६) खुली १८७·३१; बन्द १८७·९४

तैयार सोना : बुलियन खुला ११३·०९; ऊंचा ११३·३४; नीचा ११३·०३; बन्द ११३·१९; मैसूर खुला ११३·४१; ऊंचा ११३·६६; नीचा ११३·३४, बन्द ११३·५०; गिन्नी ७३·२५।

(हिन्दुस्तान, २०—११—५८)

प्रश्न— १. उपरोक्त भावों की व्याख्या करो और उसके आधार पर इसके लिए अपनी प्रस्तावना लिखो।

अभ्यास ९

नीचे लिखे बाजार समाचार के अंशों में मोटे अक्षरों में छपे वाक्यांशों का अर्थ स्पष्ट करो:—

(क) **बम्बई रूई**

रूई वायदे में लाभ

बम्बई, १२ जुलाई। रूई वायदे **बहुत स्थिर खुले** लेकिन शीघ्र ही भावों का रुख नीचे की ओर हो गया। अकोला और अहमदाबाद के कारोबारियों और एक स्थानीय प्रमुख कारोबारी की **कटान के कारण** जरीला वायदे दिन के उच्चतम स्तर से रु० ७ गिर गए और **निम्नतम भावों पर बन्द हुए**। गुजरात और सौराष्ट्र में रूई उत्पादक क्षेत्रों में अनुकूल वर्षा और अनेक क्षेत्रों में बुवाई शुरू होने की खबर से रूई **वायदों में कमजोरी आई**। जरीला अगस्त में रु० ५ से अधिक की गिरावट आई। कारोबार १५००० गाँठों का हुआ बताया जाता है।

एक सदस्य की मृत्यु के कारण **तैयार बाजार** आज बन्द रहा।

(हिन्दुस्तान, १४ जून, १९५८)

(ख) बम्बई, १८ नवम्बर। सराफा वायदे गत बन्द भावों के इर्द-गिर्द स्थिर खुलने के बाद **समर्थन की कमी के कारण** कुछ मुलायम हो गए, किन्तु बाद में पुनः समर्थन मिल जाने से वे गत बन्द भावों के **इर्द-गिर्द आ गये**। तैयार बाजार के **समाचार उत्साहवर्द्धक** नहीं थे।

कल की तुलना में चांदी वायदे में ३ नए पैसे गिरावट आई किन्तु सोना वायदा ९ नये पैसे **बहतर रहा**।

चांदी की आमद १० सिल्लियों की रही तथा खपत १४ सिल्लियों की हुई। कच्ची चांदी की आमद १५ सिल्लियों की थी। सोने की आमद तथा खपत क्रमशः ४ हजार तथा ३ हजार तोला रही। अशुद्ध सोने की आमद ३ हजार तोला थी।

(हिन्दुस्तान, २० नवम्बर, १९५८)

(ग) **जिंस वायदे**

जिन्स वायदों में **मजबूती का रुख रहा। कारोबार में भी सुधार हुआ।**

बाजार स्थिर खुलने के बाद सटोरियों की खरीदारी से थोड़ा मजबूत हुआ, मगर बाद में उसी दिन **बिक्री के दबाव से भाव नरम हुए**। अगले दिन कासगंज तथा पंजाब के सटोरियों की खरीदारी से भावों में मजबूती आई। कानपुर में खाण्डसारी मजबूत होने से भी भावों में वृद्धि हुई। सप्ताह के अन्तिम दिनों में **मुनाफा वसूली की बिक्री** तथा बम्बई के नरमी के समाचारों से मुलायमी आई, लेकिन बाजार फिर भी मजबूती की ओर रहा। तेल मूंगफली वायदों में **दिसावरों के नरमी के समाचारों से** मुलायमी आई, लेकिन सरसों वायदे में पंजाब तथा कलकत्ता के सटोरियों की खरीदारी से मजबूती आई।

(हिन्दुस्तान, २७ मई, १९५८)

अभ्यास १०

दिल्ली, १५ नवम्बर। स्थानीय मंडियों में आज **खामोशी रही।** अधिक खरीदारी या बिक्री न होने से भावों में कोई **विशेष परिवर्तन नहीं हुआ।** चना तथा घटिया सरसों में बाहर के **उत्साहवर्द्धक समाचारों के आधार पर** उनके भावों में वृद्धि हुई। लौंग तथा दालचीनी में दिसावरों की खबरों तथा ऊंचे भावों पर खरीदारों के अभाव से उनके भाव कई दिनों के बाद **आज कमजोर हुए।**

जिंस वायदों में, गुड़ वायदों में और मुलायमी आई, जबकि खल, सरसों तथा कपास वायदों **में दृढ़ता बनी रही।** गुड़ वायदों में हाजिर के नरमी समाचारों से **बिक्री के दबाव से मुलायमी आई,** जबकि अन्य जिन्सों में विक्रेताओं का अभाव था।

(हिन्दुस्तान, १७ नवम्बर, १९५८)

प्रश्न १. उपरोक्त बाजार समाचार किस प्रकार के बाजार का है ?

२. उपरोक्त बाजार समाचार का सारांश अपने शब्दों में लिखो।

३. इसके लिये एक उपयुक्त शीर्षक दो।

अभ्यास ११

कलकत्ता पटसन :—

सप्ताह के उत्तरार्ध में बाजार सुधरा

कलकत्ता, २९ जून। मध्य सप्ताह में **अस्थायी रूप से गिरावट के अलावा** गत सप्ताह पटसन के सामान का बाजार साधारणतः मजबूत रहा। सप्ताह के अन्त में **भावों में सुधार** बोरियों की अपेक्षा टाट में अधिक हुआ। बाजार स्थिर रुख के साथ खुला और मध्य सप्ताह तक **सीमित उतार-चढ़ाव होता रहा** जबकि मिलों ने टाट और बोरियों की बिक्री की जिससे बाजार में भाव गिर गए। गोदी कर्मचारी हड़ताल की समाप्ति, और अरजनटाइना से कुछ नया कारोबार होने की खबर से बृहस्पतिवार को **बाजार बेहतर हो गया** जबकि नीचे स्तर पर पटान के कारण बन्द होते समय **तेजी से सुधार हुआ।**

भारत सरकार द्वारा बी० ट्विल सितम्बर डिलीवरी की १०,००० गांठों की खरीदारी का आर्डर देने की खबरों ने बाजार को ऊंचा उठाने में सहायता दी। यदि मिलें **ऊंचे स्तर पर बिक्री का दबाव नहीं डालतीं** तो बाजार सप्ताह के उच्चतम स्तर पर बन्द होता।

(हिन्दुस्तान, १९५८)

प्रश्न १. मोटे अक्षरों में छपे अंशों का अर्थ स्पष्ट करो।

२. इसका सारांश सरल हिन्दी में लिखो।

अभ्यास १२

दिल्ली, १७ नवम्बर। आज स्थानीय तेल मण्डी में मिश्रित रुख रहा। तेल मूंगफली तथा महुवा में सप्लाई अच्छी होने के कारण उनके भावों में लगभग ५० नये पैसे प्रति मन की और मन्दी आई, मगर तेल गोले की ग्राहकी अच्छी होने तथा दिसावरों के तेजी के समाचारों के आधार पर उसके भाव लगभग रु० २ प्रति मन और तेज हो गये। तेल तिल की मांग निकल आने से उसमें भी रु० १ की वृद्धि हुई। तिलहनों में मूंगफली की नई फसल आने से उसमें मुलायमी आई। इसके अतिरिक्त दखनी बिनौले के भाव भी नरम थे।

गल्ले में गेहूँ की पूछताछ कम होने से दड़ा माल के भाव थोड़े और नरम हुए, जबकि चने के भाव और बढ़कर रु० १९·७५ प्रति मन हो गये। मसूर का उठाव कम था। चीनी की आमद लगभग ४०० बोरियों की थी, मगर भाव अपरिवर्तित रहे।

जिन्स वायदों में मजबूती का रुख रहा। कारोबार कम था।

रूई के निर्यात की खबर से बाजार कपास वायदे के नेतृत्व में मजबूत खुला। बाद में कासगंज तथा हाथरस के सटोरियों की खरीदारी से गुड़ वायदे के नेतृत्व में भावों में और बढ़ोतरी हुई। बन्द होने से पहले मामूली नरमी आने के बावजूद बाजार मजबूत रहा।

प्रश्न १. उपरोक्त बाजार समाचार किस बाजार का है ?

२. इसके लिये उपयुक्त शीर्षक दो।

३. कपास बाजार के भाव क्यों बढ़े ?

४. मूंगफली के भाव क्यों मुलायम हुए ?

अभ्यास १३

दिल्ली, १२ जुलाई। आज स्थानीय तेल मण्डी में **तेजी का दौर रहा**। सरकार के निर्यात को बढ़ाना सम्बन्धी प्रयत्नों से व्यापारियों ने खरीदारी **में अच्छा दिलचस्पी दिखाई**। तेल मूंगफली की वनस्पति घी की मिलों से मांग अच्छी होने के कारण उसमें तेजी थी। तेल महुवा का स्टाक कम था। इसके अलावा तेल अलसी का **विदेशों को निर्यात हो रहा है**। इसलिए आज विभिन्न तेलों के भावों में लगभग ५० नये पैसों से १ रु० मन की तेजी आई।

गल्ले में गेहूँ, चना तथा जौ की मांग ज्यादा बनी हुई थी। स्टाक कम था। इससे उनमें आज थोड़ी और तेजी आई।

जिन्स वायदों में अनिश्चितता रही। कामकाज ज्यादा होने से भावों में घटाबढ़ी अच्छी हुई।

मौसम खुश्क होने से बाजार खासा तेज खुलकर खरीदारी के समर्थन से थोड़ा और ऊंचा हुआ। मगर बाद में कासगंज, नरेला तथा हापुड़ के **सटोरियों की भारी बिक्री से भावों में खासी गिरावट आई।** इसके बावजूद बाजार मिश्रित रुख पर था।

बन्द होते समय आगरा तथा स्थानीय सटोरियों की ताजा खरीदारी से भाव फिर ऊंचे हो गये। इसलिये अन्त में **बाजार तेजी की ओर रहा।**

प्रश्न १. उपरोक्त बाजार समाचार पर अपनी टीका करो।

२. मोटे अक्षरों में छपे अंशों का विश्लेषण करो।

३. इसके लिए एक उपयुक्त शीर्षक दो।

४. इसका सारांश सरल भाषा में लिखो।

प्रकरण
६

द्रव्य-बाजार समाचार

द्रव्य बाजार एक व्यवस्थित संस्था है। इसमें 'द्रव्य' और 'उधार' का लेनदेन होता है। द्रव्य या उधार का प्रयोग बेचने वाले ऋणदाता तथा प्रयोग खरीदने वाले ऋणी कहलाते हैं। जिस कीमत पर द्रव्य का प्रयोग करने का अधिकार क्रय किया जाता है, उसे सूद कहते हैं। जैसा कि बतला चुके हैं द्रव्य-बाजार पूंजी बाजार का ही एक अभिभूत अंग है जिसमें द्रव्य का लेन-देन एक अल्प अवधि के लिए ही होता है। यह अवधि आम तौर पर १२ माह से अधिक नहीं होती।

दूसरे बाजारों की तरह द्रव्य का लेनदेन भी प्रतिस्पर्धा से होता है। जिस प्रकार किसी पदार्थ की कीमत निर्धारित होती है उसी प्रकार सूद की दर भी निश्चित होती है। जब बेचे जाने वाले द्रव्य की मात्रा खरीदने वालों की आवश्यकताओं से अधिक होती है तो सूद की दर गिर जाती है और इसके विपरीत जब द्रव्य खरीदने वालों की आवश्यकतायें द्रव्य बेचने वालों की पूर्ति से अधिक होती हैं तो सूद की दर बढ़ जाती है। जब पूर्ति अधिक होने पर सूद की दर कम होती है उस स्थिति में द्रव्य बाजार मुलायम (Easy) कहा जाता है और जब पूर्ति से मांग अधिक होने पर सूद की दर अधिक होती है तो मुद्रा बाजार कड़ा कहलाता है। इसे हम निम्न प्रकार से व्यक्त कर सकते हैं:—

मांग से पूर्ति अधिक→सूद की दर नीची→द्रव्य बाजार मुलायम→द्रव्य सस्ता

पूर्ति से मांग अधिक→सूद की दर ऊंची→द्रव्य बाजार कड़ा→द्रव्य तेज

भारतवर्ष के मुख्य द्रव्य बाजार कलकत्ता और बम्बई में स्थित हैं और छोटे छोटे बाजार अन्य बड़े शहरों में। द्रव्य बाजार के अभिभूत अंग अनेक हैं। एक तरफ वे सब साहूकार, बैंक, महाजन तथा अन्य संस्थायें आती हैं जो कि द्रव्य की पूर्ति करते हैं और दूसरी ओर वे सब जो कि द्रव्य क्रय करते हैं। द्रव्य क्रय करने वाले अधिकांश में उद्योग-पति, व्यवसायी, उद्यमकर्ता, शेयर-विनिमय-कर्ता तथा बिल-दलाल होते हैं। देश के द्रव्य-बाजार की धुरी रिजर्व बैंक आफ इण्डिया है क्योंकि यह द्रव्य बाजारों की स्थिति पर पूर्ण प्रभाव रखता है। यह बैंकों का बैंक है और देश में मुद्रा, उधार तथा विनिमय के संचलन में सहयोग देता है।

कुछ पारिभाषिक शब्द

द्रव्य की दर (Money Rate)— जिस सूद की दर पर अल्प अवधि के लिए द्रव्य का क्रय या विक्रय होता है उसे द्रव्य की दर कहते हैं। यह प्रत्येक ऋण की

किस्म के लिए अलग होती है और मांग और पूर्ति के घटने-बढ़ने के साथ-साथ कम या अधिक हो जाती है।

बैंक-दर (Bank rate)— यह वह कम से कम सूद की दर है जिस पर कि रिजर्व बैंक आफ इण्डिया सरकारी प्रतिभूतियों पर या तीन माह की अवधि के प्रथम श्रेणी के विनिमय बिलों की जमानत पर द्रव्य देता है। यह दर रिजर्व बैंक स्थिति के अनुसार घोषणा द्वारा बदलता रहता है। मिश्रित-पूंजी बैंक इस दर पर अपने पास की प्रतिभूतियों और बिलों को पुनः भुना सकते हैं।

बाजार-दर (Market rate)— बैंकों को छोड़कर द्रव्य बाजार के अन्य सदस्य जिस सूद की दर पर हुंडी या छोटे व्यवसायियों के बिलों की जमानत पर ऋण देते हैं, बाजार दर कहलाती है। इसको बिल-दलालों की बट्टे की दर (Bill Brokers' Discount Rate) भी कहते हैं।

जमा की दर (Deposit rate)— बैंक जिस दर से अपने ग्राहकों के जमा धन पर सूद देता है उसे जमा की दर कहते हैं। जमा की दर विभिन्न खातों के लिए अलग-अलग होती है और बैंक द्वारा लिए जाने वाले सूद से कम होती है।

बैंक बट्टा दर (Bankers' Discount rate)— जिस दर से बैंक विनिमय बिलों पर बट्टा लेकर उन्हें भुनाते हैं उसे बैंक बट्टा-दर कहते हैं। यह दर बिल की अवधि के अनुसार कम या अधिक होती है और आम तौर पर बाजार दर से कम होती है।

दैनिक दर (Overnight rate)— बैंक जिस सूद की दर से चौबीस घंटे के लिए दिए गए ऋण पर सूद लेते हैं वह दैनिक दर कहलाती है। यह दर बाजार में सब से कम होती है और ऋण को दूसरे दिन बैंक की सुविधानुकूल वापिस करना पड़ता है।

मांग ऋण दर (Bankers' call rate)— वह सूद की दर है जो कि बैंक उस ऋण पर लेता है जिसको मांगने पर वापिस करना होता है। ऋण को वापिस करने की मांग २४ घंटे बाद ही की जा सकती है। यह दर दैनिक-दर से कुछ अधिक होती है और अंग्रेजी में इस प्रकार के ऋण को Short Accommodation, Call Money, Inter-Bank Call Money, Money at Call and Short Notice आदि कहकर पुकारते हैं।

सप्ताह सूचना दर (Seven Day Rate)— यह वह सूद की दर है जो कि ऐसे ऋण पर ली जाती है जो कि सात दिन की सूचना मिलने पर लौटाना पड़ता है। इसे अल्प-अवधि ऋण कहते हैं। सप्ताह-सूचना दर साधारणतया बैंक-मांग दर तथा दैनिक दर से अधिक होती है।

बिल दलाल (Bill-Broker)— यह एक कमीशन एजेन्ट होता है। इसका कार्य द्रव्य-बाजार में ऋण-दाताओं तथा ऋण लेने वालों से सम्पर्क रखना है और एक दूसरे को कार्य-हेतु मिलाना है। यह स्वयं भी बट्टे पर बिल लेता है और

फिर उन्हें पुनः मिश्रित-पूंजी बैंकों से भुना लेता है। वह इस प्रकार लाभ उठाता है।

सामयिक ऋण (Time Money)— बैंक जो ऋण मितीकाटा-भुगतान गृहों को, बैंकों को या बिल-दलालों को एक माह से ६ माह तक के लिए देते हैं सामयिक ऋण कहलाते हैं।

काम चलाऊ ऋण (Ways and Means Advances)— सरकार को अपना दिन प्रतिदिन का कार्य चलाने के लिए अल्प समय के लिए रिजर्व बैंक ऑफ इण्डिया से ऋण लेना पड़ता है। इसे काम चलाऊ ऋण कहते हैं।

स्फीति (Inflation)— जब द्रव्य की पूर्ति देश की मांग से जान-बूझकर बढ़ा दी जाती है तो इसे स्फीति कहते हैं। इस प्रकार की स्फीति में द्रव्य का मूल्य गिर जाता है और पदार्थों का बढ़ जाता है। इससे उत्पादकों तथा विनिर्माताओं को लाभ होता है और उपभोक्ताओं को हानि। व्यापारी वर्ग तथा कर्जदार भी इससे लाभ उठाते हैं और सरकार को भी इससे बहुत लाभ होता है।

अव-स्फीति (Deflation)— जब मांग की तुलना में द्रव्य का संकुचन इतना अधिक हो जाता है कि पदार्थों की कीमत गिरने लगती है, तो इसे मुद्रा-अवस्फीति कहते हैं। अवस्फीति में द्रव्य का मूल्य बढ़ जाता है और उपभोक्ता तथा लेनदार को लाभ होता है तथा कर्जदार, उत्पादक तथा विनिर्माताओं को हानि होती है।

परिवर्तित ऋण (Conversion Loan)— जब सरकार को लम्बी अवधि का ऋण चुकाना होता है तो यह दूसरा लम्बी अवधि का ऋण लेती है जिसकी सूद की दर पहले वाले से कम होती है। ऐसी अवस्था में ऋण-पत्रों के धारकों को सरकार यह विकल्प देती है कि या तो पुराने ऋण-पत्रों का भुगतान नकद ले लें और चाहे उनके बदले में नये ऋण-पत्र। इस प्रकार लिया जाने वाला ऋण परिवर्तित ऋण कहलाता है।

राजकोष-पत्र— भारतीय सरकार आम तौर पर जनता से अल्प अवधि के लिए बिलों द्वारा धन उधार लेती है। इन बिलों को राजकोष-पत्र कहते हैं। राजकोष-पत्र अधिकतर तीन महीने के होते हैं लेकिन ये छः माह, नौ माह तथा बारह माह के भी हो सकते हैं। इन पर सूद नहीं मिलता, अपितु ये बट्टे पर बिकते हैं। इसके लिए टेण्डर माँगे जाते हैं और जिसका टेण्डर सबसे कम बट्टे का होता है उसे स्वीकार कर लिया जाता है। भुगतान की तिथि पर इनका भुगतान सम मूल्य पर होता है। इसके लिए टेण्डर प्रति मंगलवार को आमन्त्रित किये जाते हैं। मिश्रित-पूंजी बैंक प्रमुख रूप में राजकोष-पत्रों को खरीदते हैं। क्रेताओं को टेण्डर में राजकोष-पत्रों को लेने की तिथि लिखनी होती है जो कि सात दिन के अन्दर की होनी चाहिये।

राजकोष-पत्र दर (Treasury Bill Rate)— बट्टे की जिस दर पर राजकोष-पत्र बाजार में क्रय किये जाते हैं राजकोष-पत्र दर कहलाती है। यह दर द्रव्य बाजार की स्थिति की सूचक होती है।

मध्यकालीन राजकोष-पत्र (Intermediary Treasury Bills)— नियमित राजकोष-पत्रों के लिये टेण्डर माँगने का दिन मंगलवार निश्चित है, फिर भी यदि आवश्यकता पड़ती है तो सरकार सप्ताह के किसी दूसरे दिन भी टेण्डर माँग सकती है। इस प्रकार के टेण्डर के राजकोष-पत्रों को मध्यकालीन राजकोष-पत्र कहते हैं। ऐसे पत्रों के लिए बट्टे की दर सरकार द्वारा घोषित की जाती है। यह दर पिछली बार बेचे गये राजकोष-पत्रों की बट्टे की औसत दर के आधार पर निश्चित की जाती है। यह दर सरकारी दर (Tap rate) कहलाती है। सस्ते द्रव्य का लाभ उठाने के लिए सरकार बहुधा इस प्रकार के राजकोष-पत्र जारी करती है।

बैंक सूचनायें (Bank Return)— यह रिजर्व बैङ्क ऑफ इण्डिया के दायित्व तथा सम्पत्ति का साप्ताहिक प्रकाशन है जिसमें मुद्रा-प्रचलन विभाग तथा बैङ्क विभाग सम्बन्धी सूचनायें स्पष्ट रूप से व्यक्त की जाती हैं जिससे द्रव्य-बाजार की वास्तविक स्थिति प्रकट होती है। यह प्रकाशन द्रव्य-बाजार के लिये महत्त्वपूर्ण है, क्योंकि रिजर्व बैङ्क द्रव्य-बाजार का मुख्य अङ्ग है और बाजार के उतार-चढ़ाव में बैङ्क विशेष हाथ रखता है।

भारतीय स्टर्लिङ्ग ऋण (Indian Sterling Loan)— वह ऋण है जो कि भारतीय सरकार विलायत में लेती है। जो ऋण भारत में लिया जाता है उसे रुपये का ऋण (Rupee Debt) कहते हैं।

अल्पकालीन ऋण (Short Term Loan)— सरकार द्वारा अत्यन्त थोड़े समय के लिये लिये गये ऋण जो किसी भी समय ऋण-दाता को उसकी आवश्यकतानुसार वापिस कर दिये जाते हैं 'अल्पकालीन ऋण' कहलाते हैं। ये ऋण प्रायः राजकोष-पत्र, डाकखाना बचत-खाता, रोकड़-पत्र आदि द्वारा प्राप्त धन के रूप में होते हैं। इनको चालू ऋण (Floating Loans) या आधार-रहित ऋण (Unfunded Loans) भी कहते हैं।

दीर्घकालीन ऋण (Long Term Loan)— वे ऋण हैं जो कि सरकार एक बड़ी अवधि के लिए लेती है। इनको आधारित ऋण (Funded Loans) भी कहते हैं। सरकार ये ऋण सरकारी प्रतिज्ञा-पत्र (Government Promissory Notes or G. P. Notes) जारी करके लेती है। इनसे सरकार दीर्घकालीन योजनायें पूरी करती है।

मांग-ऋण (Call Money)— बैङ्क द्वारा दिये गये वे अल्पकालीन ऋण हैं जिनको माँगने पर वापिस करना पड़ता है। इसके लिए बैङ्क को एक निश्चित सूचना देनी पड़ती है। सूचना के मिलने पर ऋणी समय के भीतर ऋण चुका देता है।

बन्धक-पत्र (Floaters)— दलाल जिन पत्रों की सहायता से बैङ्क से ऋण प्राप्त करते हैं उनको बन्धक-पत्र कहते हैं। स्कन्ध, राजकोष-पत्र, प्रतिज्ञा-पत्र, रेल की बिल्टी आदि बन्धक-पत्र का कार्य करते हैं।

नीचे पाठकों की सुविधा के लिए द्रव्य-बाजार के कुछ समाचारों की व्याख्या दी जाती है।

उदाहरण १

बम्बई द्रव्य-बाजार

बम्बई, २० अक्तूबर। बम्बई द्रव्य-बाजार में आज भी मुलायमी रही। द्रव्य के लिए मांग कम थी और पूर्ति का आधिक्य था। सूद की दरें निम्न प्रकार से बन्द हुईं :—

अन्त:बैंक कॉल मनी (विनिमय तथा बड़े भारतीय बैंक) $१\frac{३}{४}$ प्र. श., छोटे भारतीय बैंक $२\frac{१}{४}$ प्र. श., (इने-गिने लेन-देन $२\frac{१}{२}$ प्र. श. पर), हाउस मनी सात दिन की सूचना पर $३\frac{१}{४}$ प्र. श. से $३\frac{७}{८}$ प्र. श., सामयिक ऋण : १ से ६ माह तक $३\frac{१}{२}$ से ४ प्र. श.।

(क) **विवेचन**— यह बाजार समाचार बम्बई द्रव्य-बाजार का दैनिक समाचार है। आरम्भ में बाजार की स्थिति पर प्रकाश डाला गया है और उसके बाद सूद की दरें दी गई हैं। दरें प्रति सैंकड़ा प्रति वर्ष के रूप में हैं और वे विभिन्न प्रकार के अल्पकालीन ऋण से, जिनमें कि बम्बई द्रव्य-बाजार में लेन-देन होता है, सम्बन्ध रखती हैं। जिन ऋणों के भुगतान की अवधि कम हैं उनकी सूद दर कम है और जिनकी अवधि अधिक है उनकी सूद दर अधिक है। अन्त:बैंक मांग ऋण या अन्त:बैंक कॉल मनी की दो दरें हैं। एक दर बड़े बैंकों की है, दूसरी छोटे बैंकों की। छोटे बैंक की दर बड़े बैंकों की दर से कुछ अधिक है क्योंकि बड़े बैंकों का स्थायित्व छोटे बैंकों की अपेक्षा अधिक दृढ़ होता है।

(ख) **व्याख्या**— अन्त:बैंक कॉल मनी या अन्त:बैक माँग-ऋण की सूद दर सब से कम है क्योंकि लेनदार बैंक देनदार बैंक से कभी भी ऋण वापिस मांग सकता है। साधारण व्यवहार में देखा जाता है कि बड़े बड़े साहूकारों के यहाँ सूद की दर कम ली जाती है और छोटों में कुछ अधिक। यह अन्तर द्रव्य-बाजार में भी हमें देखने को मिलता है। अतः बड़े बैंकों और छोटे बैंकों के बीच अन्त:ऋण की दरों में कुछ अन्तर है। इस ऋण की सूद की दर स्थिर रही। यह इस बात का सूचक है कि ऋण की मांग और पूर्ति भी स्थिर रहे। छोटे बैंक की दर में $२\frac{१}{२}$ प्रतिशत पर कुछ ही ऋणों का सौदा हुआ।

(ग) **हाउस मनी सात दिन की सूचना पर**– इस ऋण की सूद दर $३\frac{१}{४}$ प्र. श. से लेकर $३\frac{७}{८}$ प्रतिशत तक रही। इससे इसकी सूद की दर में उतार-चढ़ाव का पता लगता है। यह उतार-चढ़ाव केवल $\frac{५}{८}$ प्र. श. है जिससे स्पष्ट है कि माँग या पूर्ति में कोई विशेष अन्तर नहीं आया और चूंकि बाजार मुलायम जारी रहा यह इस बात का द्योतक है कि माँग कम रही।

(घ) **सामयिक ऋण**— एक माह से लेकर ६ माह तक के सामयिक ऋणों

की दर ३½ प्रतिशत से लेकर ४ प्रतिशत तक रही यानी इसमें ½ प्रतिशत का उतार-चढ़ाव हुआ। सामयिक ऋण हाउस मनी या अन्तःबैंक मांग-ऋण से अधिक अवधि के लिए होते हैं अतः इनकी सूद की दर भी सब से अधिक है।

उदाहरण २

कलकत्ता, १९ जुलाई। **आलोच्य सप्ताह** में अल्प-अवधि द्रव्य-बाजार **मुलायम जारी रहा। मांग अच्छी होने पर भी पूर्ति के आधिक्य के कारण बाजार दबा रहा।** आरम्भ में बाजार कुछ **तेजोन्मुख** था लेकिन मध्य में **रुख परिवर्त्तन हुआ** और अन्त तक वही **नरमी की धारणा बनी रही**।

(क) **विवेचन**— यह बाजार समीक्षा कलकत्ता द्रव्य-बाजार की साप्ताहिक समीक्षा से सम्बन्ध रखती है और १९ जुलाई को समाप्त होने वाले सप्ताह की है।

(ख) **विश्लेषण— आलोच्य सप्ताह**— वह सप्ताह जिसकी समीक्षा की जा रही है यानी १९ जुलाई को समाप्त होने वाला सप्ताह।

मुलायम जारी रहा— इसका तात्पर्य है कि पिछले सप्ताह बाजार नरम था और इस सप्ताह में भी नरम रहा।

मांग अच्छी होने पर भी— ऋण लेने वालों के अधिक ऋण लेने पर भी।

पूर्ति के आधिक्य के कारण– अधिक ऋण देने के लिए ऋणदाताओं के तैयार होने के कारण।

बाजार दबा रहा— सूद की दर ऊंची नहीं उठ पाई।

तेजोन्मुख— तेजी की ओर। इसका अर्थ है कि सूद की दर बढ़ने की ओर थी।

रुख-परिवर्तन हुआ— बाजार तेजी की ओर से मुड़कर मुलायमी की ओर फिरा।

नरमी की धारणा बनी रही— मुलायम बना रहा।

(ग) **व्याख्या**— माँग और पूर्ति के साधारण नियमों के अन्तर्गत, जब मांग अच्छी होती है तो पदार्थ का मूल्य बढ़ जाता है लेकिन माँग अच्छी होने पर यदि पूर्ति बढ़ जाती है तो यह नियम लागू नहीं होता। अतः बाजार में सुधार न होकर वह मुलायमी पर बना रहा।

उदाहरण ३

बम्बई, ६ जुलाई। द्रव्य-बाजार की परिस्थितियों से प्रकट होता है कि **मन्दी की ऋतु प्रारम्भ हो गई है**। आलोच्य सप्ताह में गत सप्ताह की अपेक्षा अधिक मन्दी रही। बाजार का **कारोबार ढीला पड़ गया** है और **निराशा के बादल छा रहे हैं**। **बैंक दर** २ रु० तक गिर गई और कारोबार २ रु० से लेकर २⅛ प्रतिशत तक चला। **सामयिक ऋण** की दर भी ⅜ प्रतिशत गिर गई।

प्रश्न १. मोटे अक्षरों में छपे शब्दों का अर्थ समझाकर लिखो।

२. मन्दी की ऋतु के क्या लक्षण होते हैं ?

उत्तरः— १. मन्दी की ऋतु प्रारम्भ हो गई— भारतवर्ष में वर्षा ऋतु में व्यापार शिथिल पड़ जाता है क्योंकि वर्षा के कारण तथा यह समय किसी फसल का न होने के कारण, कारोबार कम हो जाता है। अतः बैङ्क दर भी गिर जाती है।

कारोबार ढीला पड़ गया है— लेन देन कम हो गया है।

निराशा के बादल छा रहे हैं— बाजार भाव में सुधार होने की कोई आशा दिखाई नहीं देती।

बैङ्क दर— यह सूद की वह दर है जिस पर रिजर्व बैङ्क ऑफ इण्डिया तीन माह की अवधि के प्रथम श्रेणी के विनिमय-बिल तथा सरकारी प्रतिभूतियों की जमानत पर ऋण देता है। यह सूद की कम से कम दर होती है और मिश्रित-पूंजी बैङ्कों को इससे यह सुविधा होती है कि अगर द्रव्य की आवश्यकता पड़े तो प्रतिभूतियों का पुनः भांजन कर द्रव्य उपलब्ध कर सकते हैं।

सामयिक-ऋण— ये ऋण एक से लेकर ६ माह तक के होते हैं और ये बैङ्कों द्वारा मितीकाटा-भुगतान-गृहों, बिल-दलालों को तथा अन्य बैङ्कों को दिये जाते हैं। इन पर सूद की दर अन्य अवधि के ऋणों की अपेक्षा अधिक होती है।

२. मन्दी की ऋतु में व्यापार शिथिल हो जाता है। द्रव्य की मांग कम हो जाती है क्योंकि यह ऋतु फसल की ऋतु नहीं होती। इसके अलावा वर्षा के कारण यातायात भी ठप्प हो जाते हैं जिससे जो कुछ कारोबार हो सकता है वह भी ढीला पड़ जाता है। किसानों को फसल बो जाने के बाद ऋणों की आवश्यकता नहीं रहती और व्यापारियों के कारोबार भी कम हो जाते हैं। अतः इस समय में बैङ्क दर कम हो जाती है।

अभ्यास के लिये

अभ्यास १

बम्बई, १६ नवम्बर। **मुहूर्त दिवस पर** जो कारोबार हुआ था उसमें कपड़े की मांग पूर्व वर्ष के इसी दिवस की तुलना में अधिक रहने, **ट्रेजरी बिलों की बिकवाली पुनः चालू हो जाने** और फसल का यातायात शुरू हो जाने के कारण आलोच्य सप्ताह में व्यापारियों में **वित्त की मांग अधिक रही;** इस कारण लघुकालीन द्रव्य बाजार में **मजबूती की धारणा आ गई।** बाजार में सप्ताह के प्रारम्भ में ही मांग इतनी बढ़ गई थी कि वह सप्लाई से अधिक थी। इसका परिणाम यह हुआ कि **कॉल मनी की अन्तः बैङ्क ब्याज दर** जो पूर्व सप्ताह के अन्त में १·५ प्रतिशत थी आलोच्य सप्ताह के अन्त तक बढ़कर २·७५ प्रतिशत पर आ गई। छोटे बैङ्कों में यह दर २·२५ प्रतिशत से बढ़कर ३ प्रतिशत हो गई।

(हिन्दुस्तान, १८ नवम्बर, १९५८)

प्रश्न—१. मोटे अक्षरों में छपे अंशों का अर्थ स्पष्ट करो।
२. इस समाचार के लिए एक उपयुक्त शीर्षक दो।
३. द्रव्य की पूर्ति क्यों कम हो गई ?

अभ्यास २

आलोच्य सप्ताह में ट्रेजरी बिलों के लिए रु० ७·२ करोड़ के प्रार्थनापत्र आये जबकि पूर्व सप्ताह ये प्रार्थनापत्र रु० १० करोड़ के थे। **स्वीकृति प्रार्थनापत्रों की औसत ब्याज की दर** २·४३ प्रतिशत प्रति वर्ष रही। आगामी सप्ताह के लिये भी अधिकारियों ने रु० ४ करोड़ के ट्रेजरी बिलों के लिये **प्रार्थनापत्र आमन्त्रित किए हैं।**

हाल ही में रिजर्व बैङ्क ने जो रिपोर्ट प्रकाशित की है उसके अनुसार **सक्रिय नोटों में** रु० ३८·१२ करोड़ की वृद्धि हुई।

स्वर्ण-पत्रों के बाजार में आलोच्य सप्ताह में खामोशी आ गई और वहाँ कम कारोबार हुआ। **द्रव्य बाजार में उपलब्धि कम पड़ जाने** से कुछ बैङ्कों ने अपने स्टाक में से, सिक्यूरिटियां बेच कर अपने **नकदी साधनों में वृद्धि की।**

(हिन्दुस्तान, १८ नवम्बर, १९५८)

प्रश्न—१. मोटे अक्षरों में छपे शब्दों का अर्थ समझाकर लिखो।
२. रिजर्व बैङ्क की रिपोर्ट से क्या समझते हो ?
३. सिक्यूरिटियां क्या होती हैं ?

अभ्यास ३

बम्बई, २९ जून। आलोच्य सप्ताह में अल्पकालीन द्रव्य बाजार में **सरल स्थिति जारी रही।** रुपये की मांग कम हो गई है और देश के बैङ्कों के पास जो कोष जमा हो गया है उससे **मांग में कमी प्रकट हो जाती है।** बैङ्कों का रिजर्व बैङ्क से कम ऋण लेना जारी है। ब्याज की दरों में परिवर्तन नहीं हुआ है। बड़े बैङ्कों के बीच इन्टर-बैङ्क कॉल मनी की दर ३ प्रतिशत जारी है। एक महीने से ६ महीने तक के लिए जमा की दर ४—$\frac{१}{८}$ से ४—$\frac{३}{८}$ प्रतिशत तक जारी है।

वर्तमान स्थिति २० जून, १९५८ को समाप्त सप्ताह के रिजर्व बैङ्क के विवरण से प्रकट हो जाती है जिसके अनुसार सक्रिय नोटों के प्रचलन में रु० १८·०७ करोड़ की कमी आई है। **बैङ्कों की जमा में** रु० १२·५८ करोड़ की वृद्धि हो गई है।

सरकारी सिक्यूरिटियों का बाजार **सप्ताह भर मजबूत रहा** और अल्प तथा मध्यम अवधि वाली सिक्यूरिटियों की अच्छी मांग थी। रिजर्व बैङ्क ने ३॥ प्रतिशत (१९६४) का बिक्री भाव रु० ९८·५५ से बढ़ाकर रु० ९८·६५ कर दिया है।

(हिन्दुस्तान, १ जुलाई, १९५८)

प्रश्न—१. मोटे अक्षरों में छपे शब्दों का अर्थ सरल हिन्दी में लिखो।
२. उपरोक्त समीक्षा को अपने शब्दों में लिखो।
३. माँग की कमी सिद्ध करने के लिए क्या प्रमाण प्रस्तुत किया गया है ?

अभ्यास ४

बम्बई, २८ सितम्बर। रुपए की **पर्याप्त उपलब्धि और सीमित मांग** के कारण आलोच्य सप्ताह अल्पकालीन द्रव्य-बाजार में कोई उल्लेखनीय बात नहीं थी। लेकिन यह आशा की जा रही थी कि **सक्रिय मौसम शुरू होने** पर रुपये की मांग बढ़ जायगी। इस सिलसिले में **अनुसूचित बैंकों की जमा** के ढंग और ढांचे में हाल ही में जो परिवर्तन किया गया है वह महत्वपूर्ण है। अतः क्रमशः दूसरे सप्ताह निश्चित अवधि वाली जमा में कमी हुई है **जबकि मांग पर वापस होने वाली जमा बढ़** गई है। बैंक अपना रुपया तैयार रखना चाहते हैं और सम्भवतः इसी लिए उन्होंने ट्रेजरी बिलों और सरकारी सिक्यूरिटियों में उतनी **दिलचस्पी नहीं ली** जितनी पूर्व सप्ताहों में ली थी।

प्रश्न :— १. मोटे अक्षरों में छपे शब्दों का अर्थ सरल हिन्दी में लिखो।

२. एक उपयुक्त शीर्षक दो।

३. आलोच्य सप्ताह की मुख्य-मुख्य बातें क्या हैं?

विदेशी विनिमय समाचार

विदेशी विनिमय एक संगठित बाजार है जिसमें विदेशी मुद्राओं का क्रय-विक्रय होता है। आज की अर्थ व्यवस्था में विदेशी व्यापार भी उतना ही महत्वपूर्ण हो गया है जितना कि देशी। संसार के देश आर्थिक दृष्टि से एक दूसरे पर निर्भर हैं जिससे पदार्थों के आयात तथा निर्यात की आवश्यकता होती है। इसके अतिरिक्त मनुष्य एक देश से दूसरे देश में भ्रमण के लिये, शिक्षा के लिये, प्रशिक्षण के लिये, सांस्कृतिक विचार-विनिमय के लिये तथा अन्य कारणों से आते जाते रहते हैं जिसमें विभिन्न देशों की मुद्राओं की आवश्यकता पड़ती है। इन सब से उत्पन्न लेनदेन के निबटारे के लिये विदेशी विनिमय की आवश्यकता होती है।

हर देश की मुद्रा दूसरे देश की मुद्रा से विभिन्न है अतः एक दूसरे से सीधा मुद्रा-व्यवहार नहीं हो सकता। फिर आजकल तो कागज-मुद्रा का युग है। यह बात और भी असम्भव है। इसलिए दो देशों के बीच वस्तु-विनिमय (Barter system) के आधार पर ही लेनदेन होता है या बहुमूल्य पदार्थ सोना और चांदी द्वारा लेनदेन का निबटारा होता है क्योंकि सोना और चांदी ही अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा हैं। वास्तविक व्यवहार में ये भुगतान सोने और चांदी द्वारा नहीं किये जाते क्योंकि इनका भेजना अधिक खर्चीला होता है। अतः आपस के लेनदेन का भुगतान अधिकांश में साख-पत्रों द्वारा होता है। विदेशी भुगतान के निम्नलिखित तरीके हैं:—

विदेशी विनिमय-पत्र या विदेशी विपत्र (Foreign Bill of Exchange, B/E)— यह एक लिखित आदेश होता है जिसमें लेनदार देनदार को एक निश्चित द्रव्यराशि उसके दिखाने पर या निर्धारित समय के बाद किसी व्यक्ति को या उसके आदेशानुसार दूसरे व्यक्ति को देने की आज्ञा देता है। विदेशों को द्रव्य भेजने का यह मुख्य साधन है। जो विपत्र व्यापारियों द्वारा लिखे जाते हैं और स्वीकार किये जाते हैं वे व्यापारिक विपत्र तथा जो विपत्र बैंकों द्वारा लिखे जाते हैं उन्हें बैंक-विपत्र कहते हैं। भारतीय निर्यातकों द्वारा इङ्गलैंड के माल मंगाने वालों के ऊपर लिखे गये पत्र स्टर्लिंग बिल या निर्यात-विपत्र और अमरीका के माल मंगाने वालों के ऊपर लिखे गये पत्र डालर-बिल कहलाते हैं।

बैंक-ड्राफ्ट (Banker's Draft or B, D. or O. D.)— यह बैंक का रुक्का भी कहलाता है। जब कोई बैंक अपनी दूसरी शाखा को या अपने प्रतिनिधि के माँगने पर एक निश्चित द्रव्य-राशि उसमें लिखे व्यक्ति को देने का लिखित आदेश करता है, तो इसे बैंक ड्राफ्ट कहते हैं। बैंक ड्राफ्ट एक स्थान से दूसरे स्थान को द्रव्य भेजने का एक बड़ा प्रचलित साधन है। इसे चैक की भाँति रेखांकित भी किया जा सकता है। O. D. On Demand का संक्षिप्त रूप है।

विदेशी डाक द्वारा भुगतान (Foreign Mail Transfer)— भुगतान की शीघ्रता न होने पर बैंक भुगतान का आदेश डाक द्वारा अपने प्रतिनिधि को भेजता है। इसे विदेशी डाक द्वारा भुगतान कहते हैं। जब बैंक एक निश्चित समय के भीतर भुगतान होने की गारन्टी दे देता है तो इसे Guaranteed Mail Transfer या G. M. T. या विदेशी डाक द्वारा पक्का किया भुगतान कहते हैं।

तार द्वारा भुगतान (Telegraphic Transfer or T. T.)— यह भुगतान करने का सब से शीघ्र साधन है। इसमें विनिमय बैंक अपनी शाखा को या प्रतिनिधि को तार द्वारा भुगतान करने की आज्ञा भेजता है।

स्टाक-विनिमय प्रतिभूतियों द्वारा— जिन प्रतिभूतियों का मान अन्तर्राष्ट्रीय होता है उनके क्रय-विक्रय के द्वारा भी विदेशी भुगतान किया जाता है।

सोने चांदी द्वारा— सोने और चांदी द्वारा भुगतान तभी किया जाता है जब कि दूसरे साधनों से सोने और चाँदी का यातायात सस्ता पड़ता है।

विदेशी विनिमय के उद्धरण

विदेशी विनिमय के उद्धरण दो प्रकार से दिये जाते हैं। प्रथम प्रकार में देशी मुद्रा की एक यूनिट को विदेशी मुद्रा की समान द्रव्य-राशि के बराबर दिखाया जाता है जैसे रु० १=१ शि० ३ पें०। दूसरे ढंग में विदेशी मुद्रा की एक निश्चित यूनिट को देशी मुद्रा की समानता में दिखाया जाता है जैसे रु० १६=१ पौं० या रु० ५००=१०० डालर। इङ्गलैंड में भारत की मुद्रा के साथ द्रव्य दर स्टर्लिंग में व्यक्त की जाती है और अन्य देशों के साथ उनकी मुद्रा में जैसे १५ पें०=१ रु० या १ पौं०

=३ डालर। विभिन्न विदेशी विनिमय-पत्रों के लिए अलग अलग विनिमय दर उद्धरित की जाती हैं।

तार द्वारा भुगतान दर (T. T. Rate)— यह दर बैंक द्वारा देनदारों के लिए उद्धरित की जाती है। यह भुगतान करने का सब से महंगा साधन है।

मांगने पर भुगतान दर (Sight or D. D. Rate)— यह दर बैंक ड्राफ्ट तथा ऐसे विपत्रों के लिए उपयोग की जाती है जिनका भुगतान दिखाने पर मिलता है। यह दर तार की दर से कम होती है।

अल्प-दर (Short Rate)— यह विनिमय दर अल्प अवधि वाले विपत्रों के लिए उद्धरित की जाती है। प्रायः ऐसे विपत्र १० दिन के भीतर भुगतान के लिए परिपक्व हो जाते हैं।

लम्बी अवधि-दर (Long Rate)— जिन बिलों की अवधि १० दिन से लेकर ९० दिन तक की होती है उनके लिए लम्बी अवधि दर उद्धरित की जाती है। यह सब से कम तथा सस्ती होती है।

समतुलित दर (Tel Quel Rate)— जिन विपत्रों की अवधि कुछ समाप्त हो जाती है और कुछ रह जाती है उनके लिए अवधि का हिसाब लगाकर जो दर उद्धरित की जाती है उसे समतुलित दर कहते हैं।

क्लाइव स्ट्रीट (Clive Street)— कलकत्ता का द्रव्य और विनिमय बाजार यहाँ पर स्थित है।

रुपया-दर (Rupee Rate)— एक रुपये के बदले में जितनी विदेशी मुद्रा मिले उसे रुपया दर कहते हैं जैसे रु० १=१५ पें०।

प्रति दर (Cross Rate)— जब दो देशों की विनिमय दर तीसरे देश में उद्धरित की जाती है तो तीसरा देश उसे प्रति दर (Cross Rate) कहकर व्यक्त करता है। अमेरिका, भारत और इंगलैंड की विनिमय दर को रुपया-स्टर्लिङ्ग प्रति दर रु० १=१ शि० ३ पें० (Rupee-Sterling Cross Rate, Re. 1=1 s 3 d) के रूप में व्यक्त करेगा।

भारत विपत्र संग्रह दर (India B. C. Rate)— बिलों का भुगतान तिथि से पहिले करने के लिए जो दर उद्धरित की जाती है। उसे विपत्र संग्रह दर (B/C Rate) कहते हैं।

विनिमय की टकसाल दर (The Mint Par of Exchange)— जिन दो देशों में धात्वीय प्रमाप एक ही मूल्यवान धातु का होता है, उनकी मुद्रा में विनिमय की टकसाल दर सरलता से निकाली जा सकती है। उन दोनों देशों के धात्वीय प्रमापों की सरकार द्वारा निर्धारित शुद्ध धातु-वजन में जो अनुपात होता है, वह उनकी विनिमय की टकसाल दर कही जाती है। अगर एक देश में धात्वीय प्रमाप सोने का है और दूसरे में चांदी का, तो इस प्रकार की तुलना का कोई आधार नहीं

है। उस हालत में हमको किसी दिन सोने का मूल्य चांदी में या चांदी का मूल्य सोने में मालूम करके यह दर निकालनी होगी।

स्वर्ण बिन्दु (Gold or Specie Points)— अगर दो देशों के बीच सोने द्वारा भुगतान करने में कोई व्यय न हो या समय अधिक न लगे तो उन देशों में विनिमय की दर टकसाल दर होगी, लेकिन सोने को भेजने में भाड़ा लगता है, बीमा व्यय तथा अन्य व्यय करने पड़ते हैं। अतः दो स्वर्ण प्रमाप के देशों की विनिमय की दर सोने को भेजने में व्यय होने वाली रकम से टकसाल दर के ऊपर नीचे बढ़-घट सकती है, इस प्रकार स्वर्ण प्रमाप के दो देशों की विनिमय दर जिन दो विन्दुओं से निर्धारित सीमा में घट बढ़ सकती है उन्हें स्वर्ण बिन्दु कहते हैं। इस दर के भीतर सोने के अलावा जिससे सुविधा हो अन्य रूप में भी भुगतान किया जा सकता है। जिस बिन्दु दर पर सोने का निर्यात आरम्भ हो जाता है उसे निर्यात स्वर्ण बिन्दु (Export Specie Point) कहा जाता है और जिस बिन्दु दर पर आयात होने लगता है उसे आयात स्वर्ण बिन्दु (Import Specie Point) कहते हैं। ये स्वर्ण बिन्दु वास्तव में तभी कार्य करते थे जबकि देशों में सोने का प्रमाप होता था और सोने के आयात निर्यात पर कोई रोक टोक नहीं थी।

हाजिर भाव या प्रस्तुत भाव (Spot Rate)— विनिमय की वह दर है जिस पर उसी समय एक देश की मुद्रा दूसरे देश की मुद्रा से बदली जाती है।

भावी-दर (Forward Rate)— इस दर पर मुद्रा की डिलीवरी भविष्य में होती है इसका अर्थ यह है कि विदेशी मुद्रा का सौदा कर लिया जाता है लेकिन मुद्रा की सुपुर्दगी किसी आगे की तिथि पर की जाती है। अगर कोई व्यापारी विदेश में अभी सामान खरीदता है और वह उसका भुगतान माल के आने पर करना चाहता है तो वह विनिमय की दर के घटने-बढ़ने से होने वाली सम्भावित हानि से बचने के लिए किसी विनिमय बैंक से भविष्य की डिलीवरी के लिए वांछित विनिमय खरीद लेगा और इस तरह से अपने को हानि से सुरक्षित कर लेगा।

हाजिर और भावी विनिमय के सौदे विनिमय बैंकों द्वारा बड़ी मात्रा में किये जाते हैं। विनिमय बैंकों के लिए एक देश में किसी देश की मुद्रा बेचकर उसी-देश में उसकी मुद्रा खरीदना आवश्यक हो जाता है क्योंकि मुद्रा बिना क्रय किये हुए पहिले देश को दूसरे देश की मुद्रा कहां से देगा। इस प्रकार के सौदे विनिमय बैंकों को अनेक करने पड़ते हैं। इसके कारण विनिमय बाजार में तेजी और मन्दी आती रहती है।

भावान्तर सौदे (Arbitrage)— विनिमय बाजार में जब कोई व्यापारी दो या अधिक विनिमय बाजार की विनिमय दरों में अन्तर होने के कारण लाभ उठाने की दृष्टि से विनिमय का क्रय-विक्रय करता है तो इसे भावान्तर सौदे कहा जाता है। भावान्तर सौदे दो प्रकार के होते हैं– एक साधारण और दूसरे मिश्रित। साधारण सौदे केवल दो बाजारों से ही सम्बन्ध रखते हैं जब कि मिश्रित दो से अधिक से।

भावान्तर बदनी (Straddling)— विनिमय बाजार में भी भावान्तर

बदनी के सौदे होते हैं। जब कोई विनिमय व्यापारी भिन्न प्रकार के बिलों की विनिमय दरों में भारी अन्तर होने के कारण लाभ उठाने की दृष्टि से उन बिलों का क्रय-विक्रय करता है तो इसे भावान्तर-बदनी रहा जाता है।

बाजार भावों का अर्थ लगाना

उदाहरण **विनिमय दरें**

शुक्रवार के उद्धरण

लण्डन-भारत १/५·९७ से १/६·०३, लण्डन-न्यूयार्क २·८०/२ से २·८०/८, न्यूयार्क-लण्डन सरकारी २·७८ से २·८१, स्वतन्त्र २·८०—१/८ से २·८०—३/१६ न्यूयार्क इण्डिया सरकारी २१·००, स्वतन्त्र २१·०० से २१·०३ (दी हिन्दुस्तान टाइम्स, १५ सित० १९५८)।

विवेचन— उपरोक्त उद्धरण विनिमय बाजार दैनिक दरों से सम्बन्ध रखते हैं। इसमें सरकारी व स्वतन्त्र दोनों प्रकार की दरें दी हुई हैं। लण्डन भारत तथा न्यूयार्क भारत के उद्धरण विनिमय दरें हैं जबकि लण्डन-न्यूयार्क या न्यूयार्क लण्डन प्रति दरें हैं।

अर्थ— लण्डन और भारत की विनिमय दर भारतीय प्रमाप को स्थाई इकाई मानकर उद्धरित की गई है। १ रुपये की विनिमय दर १ शि० ५·९७ पें० से लेकर १ शि० ६·०३ पें० के बीच में रही। लण्डन तथा न्यूयार्क के बीच विनिमय दर में डालरों का मूल्य स्टर्लिङ्ग से व्यक्त किया गया है। एक स्टर्लिङ्ग की विनिमय दर लण्डन में न्यूयार्क के लिये २·८०/२ डालर से लेकर २·८०/८ डालर के बीच में रही जबकि न्यूयार्क के विनिमय बाजार में लण्डन के लिए विनिमय दर सरकारी क्षेत्र में २·७८ डालर से लेकर २·८२ डालर के बीच प्रति स्टर्लिङ्ग रही। लेकिन स्वतन्त्र क्षेत्र में यह दर २·८०—$\frac{१}{८}$ डा० से लेकर २·८०—$\frac{३}{१६}$ डा० के बीच में रही। न्यूयार्क में भारत के लिए १०० रु० की विनिमय दर सरकारी २१ डालर तथा स्वतन्त्र क्षेत्र में २१ डालर से लेकर २१·०२ डालर तक रही।

प्रकरण
७

शेयर बाजार समाचार

पिछले प्रकरण में हम पूंजी बाजार के दो अङ्गों यानी द्रव्य बाजार तथा विदेशी विनिमय का तथा उनसे सम्बन्धित बाजार-समाचारों का वर्णन कर चुके हैं। इस प्रकरण में हम पूंजी बाजार के तीसरे अङ्ग शेयर बाजार का अध्ययन करेंगे।

द्रव्य तथा विदेशी विनिमय की भाँति शेयर बाजार भी एक संगठित पूंजी बाजार है जिसके द्वारा उद्योगपतियों, उद्यमकर्त्ताओं, व्यवसायियों, विनिर्माताओं तथा सरकार इत्यादि की लम्बी अवधि के ऋणों की आवश्यकतायें पूरी होती हैं। शेयर बाजार में सभी प्रकार की प्रतिभूतियों का क्रय-विक्रय होता है। इसके बहुत से सदस्य होते हैं। शेयर बाजार के कारोबार में ये सदस्य या इनके द्वारा मनोनीत कुछ व्यक्ति ही भाग ले सकते हैं। इन सदस्यों में से एक समिति बनती है जो कि शेयर बाजार का कार्य अत्यन्त वैज्ञानिक ढंग से सम्पादित करती है। समिति द्वारा स्वीकृति-प्राप्य शेयर, स्टाक तथा प्रतिभूतियाँ ही बाजार में क्रय-विक्रय हो सकती हैं। निर्धारित कार्यों के संचालन के लिए उपसमितियाँ भी होती हैं। शेयर बाजार प्रायः कम्पनी विधान के अन्तर्गत रजिस्टर्ड होते हैं और ये स्वयं बाजार के कारोबार में भाग नहीं लेते। सदस्य बनने के लिए शेयर बाजार के कुछ शेयर प्रवेश-शुल्क के रूप में क्रय करना आवश्यक होता है।

सदस्यों तथा उनके द्वारा मनोनीत कुछ कार्यकर्त्ताओं के अतिरिक्त, शेयर बाजार में बहुत से शेयर-दलाल भी कार्य करते हैं। ये बाजार के सदस्य नहीं होते अपितु क्रय करने वालों और बेचने वालों को आपस में मिला कर ये सौदा कराते हैं और दोनों ओर से कमीशन लेते हैं जिसे दलाली कहते हैं। इसके विपरीत जॉबर (Jobbers) होते हैं। ये अपने नाम से सौदा करते हैं। ये दलाल की तरह कार्य नहीं करते, बल्कि सौदे करके उनसे लाभ उठाते हैं। जो शेयर इनके पास नहीं होते उन्हें बेच देते हैं और कम भाव होने पर क्रय करके डिलीवरी दे देते हैं या पहिले क्रय कर लेते हैं और बिना डिलीवरी लिए भाव बढ़ने पर बेच देते हैं। इस तरह के सौदे से ये लाभ उठाते हैं। ये स्टाक विनिमय के सदस्य होते हैं। जिनके पास प्रतिभूतियां होती हैं वे व्यापारी कहलाते हैं और वे विनिमय के सदस्य हो सकते हैं या नहीं भी हो सकते। अन्य व्यक्ति भी अपनी प्रतिभूतियों का क्रय-विक्रय शेयर बाजार में दलालों

द्वारा करा सकते हैं। समाशोधन घर (Clearing Houses) विनिमय की एक विशेष संस्था होती है जिसके द्वारा लेन-देनों का निबटारा बड़ी शीघ्रता के साथ किया जाता है।

भारतवर्ष में कई शेयर बाजार हैं। कलकत्ता स्टाक एक्सचेन्ज एसोसियेशन लि० एक मिश्रित पूंजी कम्पनी है जिसकी शेयर पूंजी ३ लाख रुपये की है और तीन सौ रुपये के एक हजार शेयरों में बंटी हुई है। केवल सदस्य और उनके एजेन्ट ही कारोबार में भाग ले सकते हैं। सब लेन-देन नकद होता है और सौदों की पूर्ति डिलीवरी देकर होती है। भविष्य के सौदे भी किये जाते हैं, लेकिन विकल्प नहीं लगाया जा सकता। सारे सौदे सदस्यों के नाम पर ही होते हैं और शेयरों की डिलीवरी एक निश्चित मात्रा में होती है। बम्बई शेयर बाजार भारत का सबसे बड़ा वायदे का बाजार है और यह दी नेटिव शेयर एण्ड स्टाक ब्रोकर्स एसोसियेशन, बम्बई के अन्तर्गत कार्य करता है। इसके ४५१ सदस्य हैं और प्रत्येक सदस्य को १०,००० रुपये जमानत के रूप में जमा करने होते हैं। सब कारोबर सदस्यों के बीच ही हो सकता है लेकिन कोई भी सदस्य बाहरी व्यक्ति का दलाल बनकर कार्य कर सकता है। सौदों का निबटारा समाशोधन घर द्वारा माहवारी किया जाता है और अन्तर ले देकर सौदे निबट जाते हैं। दी लण्डन स्टाक एक्सचेन्ज दुनिया का सबसे बड़ा शेयर बाजार है जिसमें दलाल और जाबर्स दो प्रकार के सदस्य हैं। न्यूयार्क स्टाक एक्सचेन्ज में १३७५ सदस्य हैं जो कि दलाल और व्यापारी दोनों रूप में कार्य कर सकते हैं।

प्रतिभूतियों को हम तीन मुख्य भागों में बाँट सकते हैं यानी (१) प्रथम श्रेणी की प्रतिभूतियाँ, (२) न्यासधारी प्रतिभूतियाँ, (३) साधारण प्रतिभूतियाँ।

(१) प्रथम श्रेणी की प्रतिभूतियों को स्वर्ण-कोण प्रतिभूतियाँ (Gilt-edged) भी कहा जाता है। ये वे ऋण के प्रमाण-पत्र हैं जो कि केन्द्रीय सरकार, प्रदेशीय सरकार, निगम या पोर्ट ट्रस्ट द्वारा जारी किये जाते हैं। इनका बाजार सारे संसार तक फैला होता है।

(२) द्वितीय श्रेणी की प्रतिभूतियां या न्यासधारी प्रतिभूतियाँ (Trustee securities)— इनको अर्द्ध स्वर्ण-कोण प्रतिभूतियाँ (Semi Gilt-edged) भी कहते हैं। ये प्रतिभूतियां सरकारी बैङ्क, बीमा कम्पनी, विद्युत् कम्पनी या अन्य अर्द्ध-सरकारी संस्थाओं द्वारा जारी की जाती हैं।

(३) साधारण प्रतिभूतियाँ— इस श्रेणी के अन्तर्गत मिश्रित पूंजी कम्पनियों द्वारा जो विभिन्न प्रकार के शेयर, स्टाक, ऋण-पत्र इत्यादि जारी किये जाते हैं आते हैं। स्वर्ण-कोण या अर्द्ध स्वर्ण-कोण प्रतिभूतियों की अपेक्षा ये प्रतिभूतियाँ कम प्रतिष्ठा वाली होती हैं।

कुछ पारिभाषिक शब्द

रजिस्ट्री शुदा प्रतिभूतियाँ (Registered Securities)— ऐसी प्रतिभूतियों के मालिक के पास उन्हें जारी करने वाली संस्था की ओर से उनके स्वामित्व का प्रमाण-पत्र होता है। अत: उनके हस्तान्तरण के लिए एक लिखित रुक्का क्रय करने वाले को देना पड़ता है जिससे कि वह उन प्रतिभूतियों को अपने नाम में चढ़वाले।

वाहक प्रतिभूतियाँ (Bearer Securities)— जिन प्रतिभूतियों का स्वामित्व हस्तान्तरण करने से दूसरे के हाथ में चला जाता है, वाहक प्रतिभूतियां कहलाती हैं।

लिखित स्टाक (Inscribed Stock)— जब कोई बैङ्क स्वर्ण-कोण या अर्द्ध स्वर्ण-कोण प्रतिभूतियों का निर्गमन अपने ऊपर लेता है तो वह क्रेताओं को कोई स्वामित्व का प्रमाण-पत्र जारी नहीं करता, बल्कि उसका लेख अपनी किताबों में कर लेता है। इस लिखित स्टाक की बिक्री करने पर बेचने वाले को बैङ्क को सूचना देनी होती है जिस से क्रेता के नाम में वह प्रतिभूतियां चढ़ा सकें।

अन्तर बोर्स प्रतिभूतियाँ (Inter Bourse Securities)— यूरोपीय देशों में अन्तर बोर्स प्रतिभूतियां उन्हें कहते हैं जिनका निर्गमन एक देश से अधिक देशों में किया गया हो और जिनके उद्धरण दुनिया के बड़े बड़े शेयर बाजारों में उपलब्ध हों।

स्टाक या स्कन्ध (Stock)— सारी किस्म के चुकती शेयर, ऋण-पत्र, बन्धक-पत्र जिनका क्रय-विक्रय शेयर बाजार में होता है स्टाक कहलाते हैं। शेयर या ऋण-पत्रों पर पूरी अदायगी हो जाने पर उनके स्थान पर कम्पनी द्वारा स्टाक निर्गमित किये जाते हैं जिनका क्रय-विक्रय शेयर बाजार में होता है।

समभाग या इकाइयां (Equities or Units)— साधारण उद्योग कम्पनी के शेयर तथा स्टाक समभाग कहलाते हैं। इनका स्थायित्व बहुत कम समझा जाता है।

उद्योगादि या वर्णनात्मक (Industrials or Descriptions)– उद्योग कम्पनियों के शेयर उद्योगादि कहलाते हैं तथा विद्युत कम्पनी के एलेक्ट्रिक्स (Electrics), इन्जीनियरिङ्ग कम्पनी के इन्जीनियरिङ्गस (Engineerings or Engineering Desctiptions), जूट मिल के जूट्स (Jutes) कहे जाते हैं। इस प्रकार Cottons, Dyeings, Coals तथा Port Shippings आदि नाम से शेयर पुकारे जाते हैं।

निर्गमन का प्रतिभाग (Counter of Issue)— मिश्रित-पूंजी कम्पनी द्वारा निर्गमित सभी प्रकार के शेयरों के लिए इस वाक्यांश का प्रयोग किया जाता है। ये शेयर अच्छी कम्पनी के समझे जाते हैं और नियोजन के लिए ठीक होते हैं।

अपक्व प्रमाण-पत्र (Scrip)— वह रसीद है जो शेयर के कुछ अंश का भुगतान करने पर मिलती है। इसका भी क्रय-विक्रय शेयर बाजार में होता है।

डालर प्रमाण-पत्र (Dollar Scrip)— जब कम्पनी के शेयर डालर में होते हैं तो कम्पनी के शेयर डालर प्रमाण-पत्र कहे जाते हैं।

रुपया-पत्र (Rupee Paper)— भारत सरकार द्वारा जो ऋण-पत्र इंगलैंड में निर्गमित किए जाते हैं और जिनका क्रय-विक्रय लण्डन स्टाक एक्सचेन्ज में होता है रुपया-पत्र (Rupee Paper) या भारतीय स्टर्लिङ्ग ऋण कहलाते हैं।

नियोजन प्रतिभूतियां (Investment Securities)— इस प्रकार की प्रतिभूतियों के भाव में अधिक उतार-चढ़ाव नहीं होता और ये नियोजकों के लिए अधिक सुरक्षित हैं।

बदनी प्रतिभूतियां (Speculative Securities)— वे प्रतिभूतियां हैं जिनके भावों में भारी उतार-चढ़ाव होता है और इनमें बदनी के बहुत सौदे होते हैं। ये प्रतिभूतियां नियोजकों के योग्य नहीं होतीं।

सम मूल्य (Par Value)— इसे यथार्थ मूल्य (Face or Nominal Value) भी कहते हैं। जिस मूल्य पर कोई प्रतिभूति जारी की जाती है वह मूल्य उसका सम-मूल्य होता है।

बाजार मूल्य (Market Value)— जो कीमत किसी प्रतिभूति की शेयर बाजार में उद्धरित की जाती है वह उसका बाजार मूल्य कहलाती है। यह कीमत हमेशा मांग व पूर्ति के घट-बढ़ के अनुसार घटती-बढ़ती रहती है।

फीता कीमत (Tape Price)— दूर-मुद्रण यन्त्र (Teleprinter) फीते पर आकाश-वाणी द्वारा प्रसारित जो भाव छप जाते हैं उन्हें फीता-कीमत कहते हैं। इसके द्वारा दूर दूर के बाजारों के भाव जानकर उनसे लाभ उठाया जाता है।

मार्ग कीमत (Street Price)— विनिमय बाजार के बन्द हो जाने पर बाजार में या बाजार के बाहर प्रतिभूतियों का जिस कीमत पर क्रय-विक्रय होता है उसे मार्ग कीमत कहा जाता है।

लाभांश सहित (Cum. Div. or C. D.)— लाभांश सहित बेची गई प्रतिभूति पर जो लाभ यानी सूद या लाभांश प्राप्त हो जाता है उसका अधिकारी क्रेता होता है।

लाभांश रहित (Ex. Div. or X. D.)— लाभांश रहित प्रतिभूति की बिक्री में जो सूद या लाभांश प्राप्य होता है उसका अधिकारी विक्रेता ही रहता है।

अधिकार सहित (Cum. Right)— बेची जाने वाली प्रतिभूति के साथ सूद के अलावा यदि और कोई लाभ जुड़ा होता है तो उसका अधिकार भी क्रेता के हाथों में चला जाता है।

अधिकार रहित (Ex. Right or Ex. All)— इस प्रकार के विक्रय में क्रेता प्रतिभूति का स्वामी होने के अलावा सब अधिकारों से वंचित कर दिया जाता है।

न्यून सौदे (Small Lots, Small Odd Lots)— जब किन्हीं प्रतिभूतियों में क्रय-विक्रय किसी कीमत पर कम होता है तो इसे न्यून सौदे कहा जाता है।

भुगतान-दिवस (Settlement Day)— अग्रिम व्यापार का निबटारा शेयर बाजार में शेयर बाजार द्वारा निर्धारित तिथियों पर होता है। सौदे का निबटारा तीन दिन तक चलता है। प्रथम दिन सम्बन्धित व्यापारी यह तय करते हैं कि सौदे का भुगतान कर दिया जाय या दूसरे भुगतान दिन के लिये स्थगित कर दिया जाय। अगर क्रेता स्थगन चाहता है तो उसे बदलाई शुल्क देना होता है। इसके विपरीत यदि विक्रेता प्रतिभूतियों की डिलीवरी देने में असफल होता है तो उसे क्रेता को हर्जाना देना पड़ता है। दूसरा दिन नाम दिन कहलाता है और इस दिन क्रेता और विक्रेताओं के नाम दे दिये जाते हैं और स्कन्ध तथा शेयरों के लिए दलालों की रसीद सुपुर्द कर दी जाती है। तीसरे दिन, जिसे भुगतान का दिन कहते हैं, स्कन्ध तथा शेयरों की डिलीवरी दे दी जाती है और उसका भुगतान कर दिया जाता है।

प्राप्ति (Yield)— जो धन प्रतिभूतियों के क्रय करने में लगाया जाता है उस पर यह मालूम करना आवश्यक है कि उनसे क्या प्राप्ति (Yield) होगी। प्रतिभूतियां बाजार में अंकित मूल्य से कम पर या उससे अधिक पर बिका करती हैं। जो प्रतिभूति अंकित मूल्य से अधिक पर क्रय की जाती है उसकी प्राप्ति (Yield) उसके अंकित मूल्य की तुलना में कम हो जाती है। इसी प्रकार जो अंकित मूल्य से कम पर क्रय की जाती है उसकी प्राप्ति बढ़ जाती है।

कमी पूरक कीमत (Making up Price)— जिन प्रतिभूतियों की भुगतान की तिथि आगे को बदलाई जाती है उसके लिए स्टाक विनिमय एक कमी पूरक कीमत निश्चित करता है जिससे अन्तर का लेन-देन करके उनकी तिथि बदली जा सके। एक तिथि से दूसरी तिथि को भुगतान स्थगित करने को बदली करना (Carrying over) कहते हैं।

बिक्री का जिम्मा लेने वाला (Underwriter)— यह वह दलाल होता है जो कि कमीशन पर प्रतिभूतियों की बिक्री का जिम्मा लेता है या नये ऋण के चन्दा के लिए गारण्टी देता है।

नफाखोर भागीदार (Stag)- वह सटोरिया है जो कि नफा खाने के विचार से शेयरों के लिए इस आशा से प्रार्थना-पत्र देता है कि शेयरों की अधिक मांग से शेयरों का दाम बढ़ेगा और वह बेचकर लाभ उठा लेगा।

नगद (For Cash)— जब प्रतिभूतियों की सुपुर्दगी तथा भुगतान सौदा करने के साथ साथ निबटा दिये जाते हैं तो इसे नगद बिक्री कहते हैं।

हिसाब का या लेखे के लिए (For Account)— जब सौदा नगद नहीं होता और भुगतान के दिन तक स्थगित रखा जाता है तो इस प्रकार के सौदे को हिसाब का सौदा या लेखे के लिए सौदा कहते हैं।

शेयर बाजार के समाचार तथा उनकी व्याख्या

उदाहरण १. बम्बई, १८ अक्टूबर।

आज बम्बई शेयर बाजार प्रारम्भ में **नरम खुला,** परन्तु बाद में **टैक्सटाइल शेयरों के नेतृत्व में** बाजार में **काफी सुधार हो गया।** व्यवसाय मन्त्री द्वारा सलाहकार समिति की रिपोर्ट के उल्लेख से **सक्रिय शेयर** काफी लाभ के साथ बन्द हुए।

स्टील शेयर **मजबूत रुख में स्थिर थे,** यद्यपि टैक्सटाइल शेयरों की **सहानुभूति में** उनके भावों में कुछ वृद्धि हुई। बाम्बे डाइंग में काफी तेजी आयी। सेंचुरी और कोहिनूर के भाव भी सुधरे। कम डिवीडेंड की घोषणा से टाटा कैमिकल्स शेयर नरम रुख में खुले, परन्तु बाद में मांग के कारण भाव सुधर गये। पूंजी में वृद्धि की अफवाहों से ग्रेट ईस्टर्न शिपिंग के भाव सुधरे।

अन्य शेयरों में बर्मा और सीमेंट के भाव बढ़े। निरन्तर मांग के कारण नेशनल रेयन के भाव बढ़े। टाटा लोको और वोल्तास की मांग कम थी। शुगर और स्टीमशिप शेयरों का भाव मजबूत रुख में स्थिर था। **नियोजन की मांग के कारण** टायर्स और इण्डियन आक्सीजन शेयरों के भावों में सुधार हुआ।

सिक्योरिटियों के बाजार में **कारोबार कम था** तथा अधिकांश ऋण सिक्योरिटियों के लिये काफी बेचू थे। ३ प्र० श० कन्वर्शन ऋण के ७०·३० रुपये पर काफी बेचू थे।

विवेचन— उपरोक्त समीक्षा बम्बई शेयर बाजार के दैनिक भावों से सम्बन्ध रखती है। बम्बई शेयर बाजार में अनेक प्रकार के शेयरों का लेन-देन होता है। शेयरों के विषय में विशेष जानकारी शेयर डाइरेक्टरी से प्राप्त हो सकती है।

विश्लेषण— नरम खुला— इसका तात्पर्य है कि बाजार खुलने पर शेयरों के भाव पहिले दिन की अपेक्षा कुछ कम थे।

टैक्सटाइल शेयरों के नेतृत्व में— इसका अर्थ है कि कपड़ा मिलों के शेयरों के भाव बढ़ने तथा बिक्री होने की वजह से।

काफी सुधार हो गया— गिरे हुए भाव काफी ऊंचे उठे।

सक्रिय शेयर— इसका तात्पर्य ऐसे शेयरों से है जिनका क्रय-विक्रय खूब होता है।

मजबूत रुख में स्थिर थे— यानी बढ़े हुए भाव ठहरे हुए थे।

सहानुभूति में— टैक्सटाइल शेयरों के भाव बढ़ने के कारण स्टील शेयरों की कीमत कुछ बढ़ी।

नियोजन की माँग के कारण— लाभ प्राप्ति के हेतु द्रव्य का उपयोग करने वालों की सक्रिय चाहना के कारण।

कारोबार कम था— क्रय-विक्रय कम हुआ।

निष्कर्ष— बम्बई शेयर बाजार के भावों में काफी सुधार तथा टैक्सटाइल शेयरों के भाव काफी ऊंचे रुख पर रहे।

उदाहरण २. बम्बई, २० अक्टूबर। बम्बई शेयर बाजार आज उत्साहपूर्ण धारणा लेकर खुला और कारोबार के अधिकांश समय तक बाजार में स्थिति अच्छी देखी गयी। तथापि, कारोबार के अन्त में लेवालों की कटान चलने से भाव थोड़े नर्म हो गये।

आज भी स्टील शेयरों में सब से अधिक रौनक थी। ताजा समर्थन मिलने से टाटा आर्डीनरी और इण्डियन आयरन में अच्छी भाव-वृद्धि हुई।

टैक्सटाइल शेयरों में खरीदारों की उतनी दिलचस्पी न थी। स्टील शेयरों के मुकाबले विविध समूह में उतनी सक्रियता न थी। टाटा लोको, वोल्तास, सीमेंट शेयरों में कोई प्रभावकारी परिवर्तन न था। जहाजरानी शेयरों को छुट-पुट समर्थन मिला।

सरकारी सिक्यूरिटी बाजार सुस्त बना रहा।

प्रश्न १. उपरोक्त बाजार-समाचार को सरल हिन्दी में लिखो।

२. इसके लिये एक उपयुक्त शीर्षक दो।

उत्तर—(१) आज जब बम्बई के शेयर बाजार का कार्य आरम्भ हुआ तो शेयर अच्छे भावों पर खुले जिससे भावों के और बढ़ने की आशा फैली। बाजार में क्रय-विक्रय दिन भर अच्छा चलता रहा लेकिन बाजार बन्द होते समय तेजड़ियों की बिकवाली के कारण कीमतें कुछ कम हो गईं।

स्टील शेयरों में आज भी अच्छा कारोबार हुआ और ताजा खरीद के कारण टाटा आर्डीनरो तथा इण्डियन आयरन शेयरों की कीमतें काफी बढ़ीं।

कपड़ा मिलों के शेयरों की मांग कम थी। विविध समूह के शेयरों में भी स्टील शेयरों की तुलना में कम सौदे हुये। टाटा लोको के शेयर, वोल्तास के शेयर तथा सीमेंट कम्पनियों के शेयरों के भावों में कोई विशेष अन्तर नहीं आया। जहाज कम्पनी के शेयरों का क्रय-विक्रय इना-गिना हुआ। सरकारी प्रतिभूतियों में कोई लेन-देन नहीं हुआ।

(२) एक उपयुक्त शीर्षक– "ताजा समर्थन से टाटा स्टील नई ऊंचाई पर।"

अभ्यासार्थ

अभ्यास १.

बम्बई, १६ नवम्बर। हालांकि दिवाली के समय जो मुहूर्त कारोबार हुआ था **उसमें शेयरबाजार में रौनक थी** किन्तु इसके बावजूद स्थानीय शेयर बाजार में कमजोरी की धारणा रही।

इस समाचार के कारण कि मुहूर्त दिवस के कारोबार में कपड़े का **बहुत अच्छा**

कारोबार हुआ है। शेयरों के भाव मुहूर्त कारोबार में **टैक्सटाइलों के नेतृत्व में काफी ऊँचे उठ गए** किन्तु बाद में छुट्टियों के बाद जो कारोबार हुआ उसमें अनेक प्रतिकूल कारणों से **बाजार की भावना में खामोशी आ गई।**

बाजार में कमजोरी की यह भावना वित्त मन्त्री के इस वक्तव्य के कारण आई कि करों में कमी किये जाने की संभावना नहीं के बराबर है। इसके अलावा राष्ट्रीय विकास परिषद् द्वारा यह निश्चय करने से कि द्वितीय पंचवर्षीय योजना का लक्ष्य रु० ४,५०० करोड़ पर कायम रखा जायेगा बाजार में यह भय बढ़ा कि करों में शायद और वृद्धि की जायगी। **इससे तेजड़ियों ने शेयरों में कटान शुरु कर दी।** भारत पाकिस्तान सीमा से आने वाले प्रतिकूल समाचार और **द्रव्य बाजार में उपलब्धि की कमी** भी इसका एक कारण थे।

प्रश्न १. मोटे अक्षरों में छपे वाक्यांशों का अर्थ समझा कर लिखो।

२. बाज़ार में कमज़ोरी की भावना क्यों आई ?

अभ्यास २.

कलकत्ता, २० जुलाई। स्थानीय शेयर बाज़ार सप्ताह के अन्तिम दिनों में काफी घबराहट की स्थिति से गुज़रने के बाद आलोच्य सप्ताह के अन्त में खामोशी के साथ स्थिर बन्द हुआ। सप्ताह के प्रारम्भ में बाज़ार में रौनक थी और यह रौनक मध्य सप्ताह तक कायम रही, किन्तु जब बाद में पश्चिमी एशिया में अमरीकी हस्तक्षेप का समाचार मिला तो इससे एशिया में युद्ध की आशंका हो गई। परिणामस्वरूप पेशेवरों ने बिकवाली शुरू कर दी जिससे भाव गिरने लगे, किन्तु नीचे की यह भावना सट्टे वाले शेयरों तक सीमित रही।

सप्ताह के प्रारम्भ से ही चाय शेयरों की अच्छी मांग थी और यह मांग सप्ताहांत तक कायम रही। खरीद के अच्छे समर्थन से अनेक कोयला शेयर ऊँचे उठ गए और चुने हुए पटसनों का सटोरियों ने अच्छा समर्थन किया। विविध समूह के औद्योगिकों में भी स्थिरता रही।

प्रश्न १. इस समाचार के लिए एक उपयुक्त शीर्षक दो।

२. इसकी व्याख्या सरल हिन्दी में करो।

अभ्यास ३.

कलकत्ता, १६ नवम्बर। गत सप्ताह स्थानीय शेयर बाजार में बहुत कम सक्रियता रही और नया समर्थन न मिलने के कारण शेयरों में नीचे की भावना आ गई। सप्ताहांत में मंदड़ियों की पटान और खरीद के कुछ समर्थन से भावों में थोड़ा सुधार अवश्य हुआ। केवल पटसन शेयर आम रुख के विपरीत थे जिनमें कुछ स्थिरता रही।

प्रश्न— उपरोक्त बाज़ार-समाचार के अंश की व्याख्या सरल हिन्दी में करो।

अभ्यास ४.

कलकत्ता, २५ मई। स्थानीय शेयर बाजार में सक्रियता केवल पटसन और विविध समूह के शेयरों में थी जिनके अनेक शेयरों ने गत सप्ताह **मजबूती प्रदर्शित की।** सट्टे वाले शेयरों में शुरु में तो **गिरावट आई** लेकिन सप्ताह के उत्तरार्द्ध में उनमें **साधारण सुधार हुआ।** बाजार सप्ताह यत्र तत्र लाभ के साथ बन्द हुआ।

आम तौर पर सप्ताह के मध्य तक बाजार दबा हुआ रहा जबकि कारोबारियों में कुछ उत्साह पैदा हुआ।

मन्दड़ियों की पटान के कारण सप्ताह के उत्तरार्द्ध में **भावों में मामूली सुधार हुआ।** टिस्कों में हड़ताल शीघ्र खत्म होने की आशा की बम्बई से जो खबरें मिलीं उन्होंने **बाजार पर अनुकूल प्रभाव डाला।** वर्तमान भावों पर सटोरिये अच्छे लाभांश देने वाले शेयरों के **समर्थन के लिए तैयार थे।** अतः पटसन, चाय और विविध समूह के ऐसे शेयरों में खरीदारी की गई। कम्पनियों की अच्छी खबरों ने भी भावों को कायम रखने में सहायता दी।

प्रश्न १— मोटे अक्षरों में छपे वाक्यांशों का अर्थ स्पष्ट करो।

२— इसका सारांश सरल हिन्दी में लिखो।

अभ्यास ५.

बम्बई, २९ जून। तेजड़ियों के समर्थन तथा मन्दड़ियों की पटान के कारण आलोच्य सप्ताह शेयर बाजार में तेजी की स्थिति बनी रही। सूची के सम्पूर्ण शेयरों का रुख ऊपर की ओर था और भावों में चहुंमुखी अच्छी वृद्धि हुई। बन्द होते समय बाजार का रुख मजबूत था।

प्रश्न— उपरोक्त बाजार समाचार के अंश की व्याख्या सरल हिन्दी में करो।

अभ्यास ६.

कलकत्ता, २९ जून। गत सप्ताह बाज़ार में चमक जारी रही। मुनाफावसूली के बावजूद शेयर आगे बढ़े और सट्टे वाले शेयरों के नेतृत्व में चुने हुए पटसन और विविध समूह के शेयर एक नये ऊंचे स्तर पर पहुंच गये। बाजार सप्ताह के सर्वोत्तम स्तर पर बन्द हुए।

चाय समूह में कमजोरी रही। बाजार के अन्य समूहों में तेजी रही और कारोबार अच्छा रहा। गोदी कर्मचारियों की हड़ताल की समाप्ति की खबर ने अधिक प्रभाव नहीं डाला। शेयर प्रीमियम हिसाब से रुपया निकाल कर इन्डियन आयरन एण्ड स्टील कम्पनी द्वारा बोनस शेयर जारी करने की सम्भावना की अफवाह से बाजार में उत्साह पैदा हो गया। स्टील और सीमेंट के रिटेंशन भावों में वृद्धि की चर्चा से भावना को सहारा मिला।

प्रश्न १— उपरोक्त बाजार समाचार की व्याख्या सरल हिन्दी में करो।

२— इसके लिए एक उपयुक्त शीर्षक दो।

अभ्यास ७

बम्बई, १९ अक्तूबर। बम्बई शेयर बाजार में पिछले सप्ताह **अनिश्चितता का रुख रहा**। प्रारम्भ में **कुछ सुधार हुआ**। बाद में कम कारोबार से कुछ शेयरों के दाम गिर गये।

सटोरियों ने कुछ चुने हुए शेयरों में काम किया। वायदा के सौदों में **अनियमितता रही**। अधिकांश शेयरों की मांग बढ़ी और वे **काफी लाभ के साथ** बन्द हुए।

विदेशी सहायता में वृद्धि तथा इस्पात के रिटेंशन मूल्य में वृद्धि की घोषणा से बाजार **अच्छी स्थिति में खुला**। इस्पात के भाव संतोषजनक ढंग से आगे बढ़े। सिंधिया पर अधिक डिविडेंड तथा ए. सी. सी. के लिए बोनस की भी आशा से दोनों शेयरों में **दिलचस्पी बनी रहने से रुख स्थिर रहा**। वोल्तास शेयरों की काफी खरीद हुई। सीट टायर, गेस्ट, कीन, विलियम्स, डनलप रबड़ आदि की अच्छी मांग रही।

प्रश्न १— मोटे अक्षरों में छपे शब्दों का अर्थ समझाकर लिखो।

२— बाजार की स्थिति कैसी रही ?

अभ्यास ८

बम्बई, १ जून। आलोच्य सप्ताह के शुरू में जमशेदपुर लोहे के कारखाने से अस्पष्ट खबरें मिलने पर बम्बई शेयर बाजार के भावों में गिरावट रही परन्तु अन्त में बाजार के भाव अधिक मजबूत हुए। टाटा आयरन एण्ड स्टील कम्पनी के कारखाने में मजदूरों द्वारा पुनः काम शुरु कर दिया गया है। अतएव गत दो दिनों के व्यापार में आशाजनक रुख दिखाई पड़ा। इससे यह संकेत मिलता है कि बाजार में पूर्ण मजबूती की स्थितियां आ गई हैं।

टैक्सटाइल और विविध वर्ग के बाजार में तेजी का वातावरण रहा। शिपिंग, शुगर और सीमेंट के शेयर में सामान्य कारोबार हुआ।

प्रश्न— उपरोक्त बाजार समाचार की व्याख्या सरल हिन्दी में करो।

अभ्यास ९

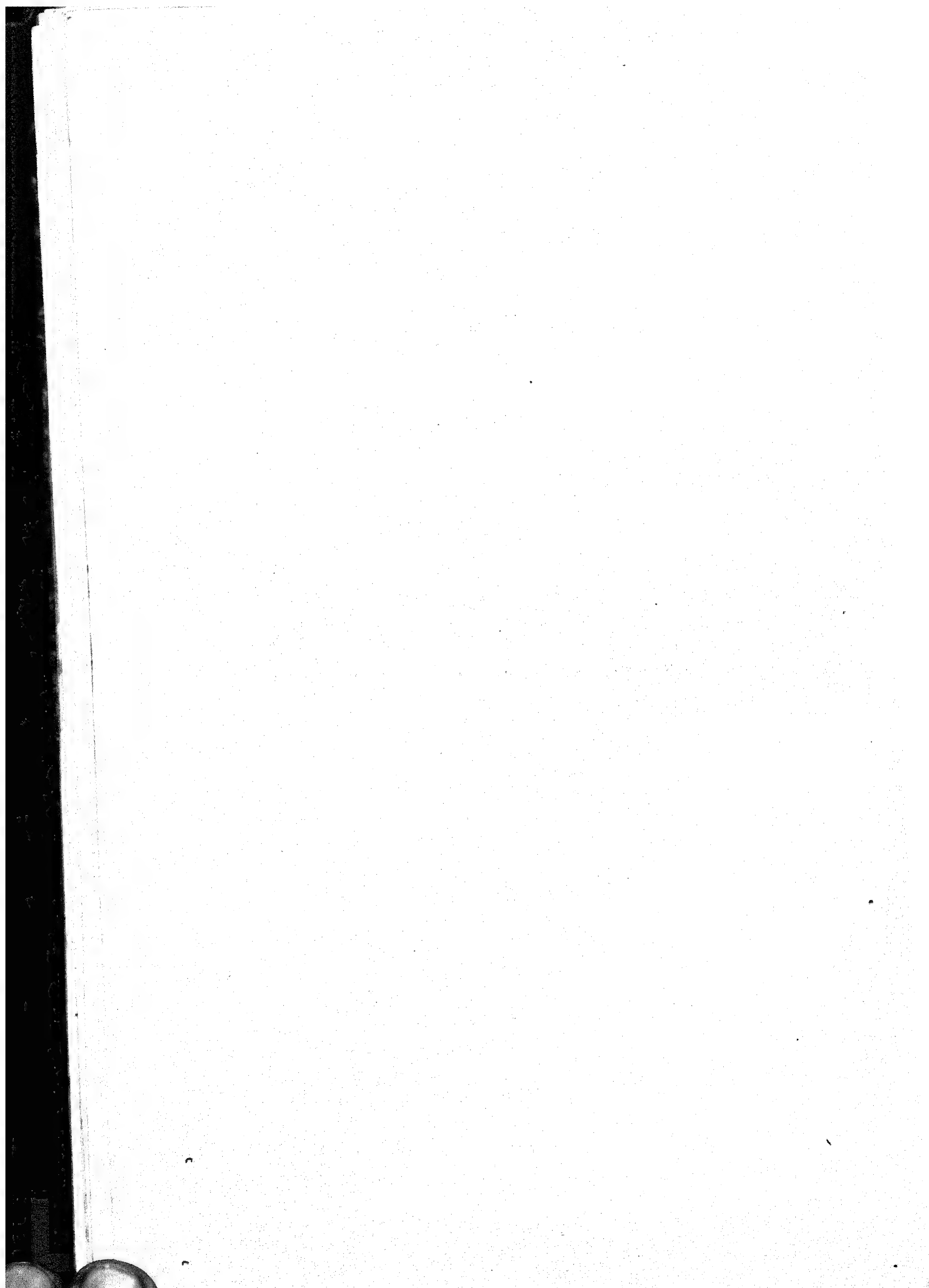
आलोच्य सप्ताह में बम्बई शेयर बाजार में उत्साहजनक धारणा बनी रही। व्यापार अधिक मात्रा में नहीं हुआ और खरीदुओं का सीमित समर्थन मिला।

बाजार राजनीतिक भय का वातावरण लिए खुला। द्विभाषी बम्बई राज्य का प्रश्न पुनः छिड़ने और क्विमोय पर चीनी गोलाबारी की खबरों से तेजड़ियों की कटान के कारण भावों में मुलायमी का रुख नजर आया लेकिन धारणा मजबूती की बनी रहने के कारण भावों में मामूली परिवर्तन हुआ।

टैक्सटाइल शेयरों में कोई खास सक्रियता नहीं थी यद्यपि बम्बई डाइंग और सेंचुरी में स्थिरता बनी रही। इंडियन आयरन, टाटा स्टील, एसोसियेटेड सीमेन्ट और अन्य सीमेन्ट शेयरों, ग्रेट ईस्टर्न शिपिंग, सिंधिया, बम्बई बर्मा और नेशनल रेयन में उल्लेखनीय गतिविधि थी। बृहस्पतिवार की छुट्टी और शुक्रवार को खाता बन्द होने के कारण ऊंचे स्तरों पर मुनाफावसूली चली और बाजार मजबूती की धारणा के साथ बन्द हुआ।

प्रश्न— उपरोक्त बाजार समाचार को अपनी भाषा में व्यक्त करो।

ENGLISH SECTION



Chapter
I

MARKET TERMINOLOGY

The market terminology has already been given in the Hindi Section of this book along with English equivalents. However, it is thought necessary to reproduce it here in order to enable the reader to express himself in English when he is required to do so. Some general terms used almost in all types of markets are given here, and terms used specially in a particular market will be found in the beginning of every Chapter.

Business transactions in a commodity market comprise, (a) **ready business**, and (b) **forward business**. Ready business is a purchase and sale for spot or ready delivery. It is also called as 'trading in actuals'. Contracts for delivery on a specified future date are known as 'forward business'.

When goods are purchased or sold with the intention of earning profit without taking or giving delivery of goods, but to settle the transaction by contra sale or purchase and payment of difference, it is called **dealing in futures** or purely **speculation**. Dealers in speculation are called **speculators**, who are generally classified into two groups, viz., (1) **bulls** and (2) **bears**, and their operations are denoted by various phrases.

When a speculator, hoping for a rise in prices, makes purchases with the intention of selling at a profit before the date of delivery, he is called **bull** in respect of that transaction. Similarly, when a speculator, in the hope of a fall in prices, contracts to sell with the object of making profit by purchasing before the date of delivery when prices fall, he is known as **bear** in respect of that dealing.

When a speculator always acts as a bull, he is called a **staunch** or **seasoned bull** and if a speculator always acts as a bear, he is known as a **tight** or **stark bear**. When a bull fails in his speculation, he is called a **disappointed** or **disgruntled bull** and if he has to wait for a long period for a rise in prices and the prices do not move in his

favour, he is called a **stale** or **tired bull.** In the same way, a bear who fails in his speculation is called *nervous* or *confused*, and if he has to wait for a long period for a favourable trend of prices and prices do not fall, he is called a *broken* or *routed* bear. In America, a bull is called long, and bear, short.

Bull Account— When there is an over-bought position in any commodity in the market, there is said to be a *bull account.* If the bulls have purchased a commodity for which they have neither paid nor taken delivery of, they are said to hold an *uncovered account.*

Bear Account— When speculative sales of a commodity far exceed its speculative purchases, the preponderance of bears over bulls is called a *bear account.* If the bears have sold a commodity which is not possessed by them for delivery, they are said to have *open bear account.*

Bull Liquidation— When a bull has to sell his stock at a loss to settle his previous transactions, it is called a *bull liquidation* or *unloading by bulls.* It only happens when the price of the commodity does not rise upto the date of delivery or the falling trend of the price convinces him that it would not improve.

Bear Covering— When a bear has to make purchases at a loss to meet his previous commitments, it is called a *bear covering.*

Trapped Bull— A bull is said to be trapped when he is forced to liquidate himself at a price lower than that ruling in the market. It happens when the bull, who has made heavy purchases, has to sell to persons who know his over-bought position. The latter, therefore, keep out of the market as long as possible and thus force the bull to accept as low a price as possible.

Squeezed Bear— When a bear has to purchase at a very high price, demanded of him, to make delivery of the commodity heavily sold by him, he is said to be *squeezed.* This situation arises when there exists a bear account and the bear has to make purchases from persons who are aware of his over-sold position. The latter, therefore, secures as much supply as possible near his delivery date to force the bear to purchase of them at a very high price. The bear has now to buy at any price to meet his commitments.

Bull Campaign— Sometimes when a bull goes wrong in his speculation, he tries to influence the movement of prices by artificial means. He circulates bullish news in the market through agents or

some other means. Such tactics on the part of the bull are called as a *bull campaign.*

Bear Raid— When there rules a bear account in any commodity, the bears try to depress its price by spreading bearish news in the market. Such attempts on the part of the bears are called a bear raid.

Bullish— The tone of the market is said to be *bullish* when the atmosphere in the market at any time for a commodity is filled with feelings of rising prices.

Bearish— The market tone is called *bearish* when atmosphere in the market is dominated by pessimistic feelings, expecting a fall in prices.

Bull Factor— A factor which is likely to raise the price of a commodity is called a *bull factor.*

Bear Factor— A factor which is likely to pull down the price of a commodity is known as a *bearish factor.*

Various phrases such as **to go long, bull interest, speculative purchases, bull purchases, bull support, bullish activity** are used to denote purchases made by bulls. The phrase **bullish outburst** is used when heavy purchases are made by bulls, and a **bullish sentiment** is said to prevail in the market when a feeling of rising prices rules amongst the speculators.

Phrases such as **to go short, short interest, speculative sales, bear sales, bear support, bearish activity, bear drive, bear sweep** are used for bear operations. There is said to be **bearish sentiment** in the market when speculators are dominated by pessimistic feelings.

Long Corner— When a bull makes heavy purchases of a commodity, in order to force up its prices against natural tendency, expecting to sell it at the highest price before the date of delivery, the action is called as *cornering the market.* A *corner* is said to exist when complete control of the entire supply is thus secured.

Short or Blank Sale— When a bear makes heavy sales of a commodity, which he does not possess for delivery, to depress its price against natural tendency, hoping to make covering purchases at a very low rate, before the date of delivery, the action is called *a short sale* or a *blank sale.*

Rigging— Sometimes bulls organise themselves to control the market by fictitious dealings in order to manipulate prices in their

favour. Such organized operations are called *rigging.*

Square Deal— When a bull sells what he has purchased before or a bear purchases what he has previously sold to settle his account, the operation is called a *square deal.* On the other hand a forward transaction cancelled by payment of difference in prices is termed as a *square deal, settlement* or *switch off.* The term applies to future contracts.

Commodity Market Terms

Trading in actuals involves delivery of goods. In ready or spot business delivery of goods is effected the same day or the following, but in forward business the mode of delivery differs with the nature of commodity and the place of delivery. An *ex-godown* delivery means goods will be delivered at the godown of the seller, similarly *ex-ship* stands for delivery at the dock, i. e., the place of landing goods from the ship, *ex-factory* means at the factory of the seller, *ex-warehouse* means at the warehouse where goods have been stored. In such deliveries, the purchaser has to incur all sorts of expenses in carrying the goods to the place of his business after taking delivery thereof. Future contracts are also transacted for goods to arrive. In such a deal, delivery of goods is given on safe arrival of the goods. When a transaction involves *in-bond delivery,* the purchaser has to pay customs duty on the goods before taking delivery of the goods. In *ex-bond delivery,* the customs duty is paid by the seller and delivery is taken from the licensed warehouse on presenting a delivery order.

Quotation— A price stated in an offer to supply goods is called a quotation. Quotations are generally supplied on enquiry or are published in a price list or catalogue. A market quotation is a record of prices and terms on which dealings have been contracted on an exchange.

Market value— The market value is the average price of a commodity in a given market during a short period of time. It is that price of a commodity which its seller expects to receive in the market.

Market price— It is the price which is actually given in current market transactions. It also indicates the price per unit of the commodity dealt in.

Turnover— The total amount of sales effected on any day or

during a given period of time in the market is called *turnover.*

Offtake— The total purchases in a commodity in the market during a given time are called offtake, e. g., 1200 bags of sugar or 500 tons of wheat.

Glut— When there is an over-supply of goods to the extent that it cannot be sold at a reasonable price, there is said to be a glut in the market.

Dumping— It is a term which relates to foreign competition. When a country resorts to sell its goods in another country to capture its market at a price much lower than the current market price, it is called dumping the market. Certain countries even resort to sell their goods below the cost of production in their keenness to acquire monopoly in the market.

Haggling— A course of attempts made for arriving at an agreed rate by making offers and counter offers is referred to as haggling.

Section— When a market deals in more than one commodity or in different types of the same commodity, each commodity or type is said to have a section in the market.

Arrivals— This term refers to fresh additions to the total supply available during a specified time.

Ring— It is a combination of dealers for speculative purposes, whose object is to raise the prices artificially by withholding supplies of a commodity and thereby to reap a greater profit.

Pool— It is a combination of producers who join to eliminate competition amongst themselves by dividing the market, total out-put or earnings on an agreed basis.

Tenders—This term signifies the quantity of a certain commodity offered to be delivered by bears in respect of their forward sales. The goods which are available in the market for the purpose of being delivered on account of forward sales are called *tenderable stocks.*

Arbitrage— It is a dealing in difference of prices of a commodity ruling in two markets. When different prices for the same commodity prevail in different markets and the difference in prices at two markets is such that it leaves a favourable margin after covering all the expenses involved in the transit of the goods, a dealer effects simultaneous transactions of purchase and sale in the two markets. He buys in the market where prices are the lowest and sells where they are the highest. The balance left after paying for goods and meeting transit

favour. Such organized operations are called *rigging.*

Square Deal— When a bull sells what he has purchased before or a bear purchases what he has previously sold to settle his account, the operation is called a *square deal.* On the other hand a forward transaction cancelled by payment of difference in prices is termed as a *square deal, settlement* or *switch off.* The term applies to future contracts.

Commodity Market Terms

Trading in actuals involves delivery of goods. In ready or spot business delivery of goods is effected the same day or the following, but in forward business the mode of delivery differs with the nature of commodity and the place of delivery. An *ex-godown* delivery means goods will be delivered at the godown of the seller, similarly *ex-ship* stands for delivery at the dock, i. e., the place of landing goods from the ship, *ex-factory* means at the factory of the seller, *ex-warehouse* means at the warehouse where goods have been stored. In such deliveries, the purchaser has to incur all sorts of expenses in carrying the goods to the place of his business after taking delivery thereof. Future contracts are also transacted for goods to arrive. In such a deal, delivery of goods is given on safe arrival of the goods. When a transaction involves *in-bond delivery,* the purchaser has to pay customs duty on the goods before taking delivery of the goods. In *ex-bond delivery,* the customs duty is paid by the seller and delivery is taken from the licensed warehouse on presenting a delivery order.

Quotation— A price stated in an offer to supply goods is called a quotation. Quotations are generally supplied on enquiry or are published in a price list or catalogue. A market quotation is a record of prices and terms on which dealings have been contracted on an exchange.

Market value— The market value is the average price of a commodity in a given market during a short period of time. It is that price of a commodity which its seller expects to receive in the market.

Market price— It is the price which is actually given in current market transactions. It also indicates the price per unit of the commodity dealt in.

Turnover— The total amount of sales effected on any day or

during a given period of time in the market is called *turnover*.

Offtake— The total purchases in a commodity in the market during a given time are called offtake, e. g., 1200 bags of sugar or 500 tons of wheat.

Glut— When there is an over-supply of goods to the extent that it cannot be sold at a reasonable price, there is said to be a glut in the market.

Dumping— It is a term which relates to foreign competition. When a country resorts to sell its goods in another country to capture its market at a price much lower than the current market price, it is called dumping the market. Certain countries even resort to sell their goods below the cost of production in their keenness to acquire monopoly in the market.

Haggling— A course of attempts made for arriving at an agreed rate by making offers and counter offers is referred to as haggling.

Section— When a market deals in more than one commodity or in different types of the same commodity, each commodity or type is said to have a section in the market.

Arrivals— This term refers to fresh additions to the total supply available during a specified time.

Ring— It is a combination of dealers for speculative purposes, whose object is to raise the prices artificially by withholding supplies of a commodity and thereby to reap a greater profit.

Pool— It is a combination of producers who join to eliminate competition amongst themselves by dividing the market, total out-put or earnings on an agreed basis.

Tenders— This term signifies the quantity of a certain commodity offered to be delivered by bears in respect of their forward sales. The goods which are available in the market for the purpose of being delivered on account of forward sales are called *tenderable stocks*.

Arbitrage— It is a dealing in difference of prices of a commodity ruling in two markets. When different prices for the same commodity prevail in different markets and the difference in prices at two markets is such that it leaves a favourable margin after covering all the expenses involved in the transit of the goods, a dealer effects simultaneous transactions of purchase and sale in the two markets. He buys in the market where prices are the lowest and sells where they are the highest. The balance left after paying for goods and meeting transit

expenses is his gain. Such an operation is known as arbitrage. To have dealings in arbitrage, parity prices have to be calculated in order to arrive at a correct and favourable decision.

Hedge— It is a dealing for protection. When a dealer in futures finds himself in difficulty, he can cover himself by effecting a counter deal in futures. Hedging operations are generally resorted to by manufacturers and industrialists. A manufacturer, who has sold manufactured goods to-day for delivery at a future date at a specified price, runs the risk of undergoing a heavy loss in case the price of raw materials turns unfavourable. He can protect himself by purchasing futures of the same commodity to the extent he has made sales of the manufactured goods. Thus he is safe from the risk involved in wild fluctuations in prices and is assured of smooth running of his business, and is free to devote the whole of his time to the industry without caring for a rise or fall in prices.

Straddle— It is a form of speculation. In this kind of operation, a speculator seeks to make profit by transacting business on the gaps between the prices of different futures of a commodity in the same market or on the difference between the prices of the same future of a commodity in different markets and so on. It also takes the form of speculative dealings on the gaps between the prices of different qualities of commodities or between the future prices of a commodity. This latter type of bussiness is done by *spreaders* and the former type of business by speculators called *straddlers.*

Pit Trader— A speculator who buys or sells in large quantities during the trading season with the object of squaring the deal by the end of the season is called a *pit trader*.

Switch over— In the futures market, when an operator seeks transfer from one future position to the other, it is known as a switch over or a change over. For this sort of transfer, the first deal is squared up and a similar deal, on the basis of the previous contract on payment of a premium fixed for the purpose, is gone through.

Option Dealings

Option— It is a term used in the futures market. An option is a right to purchase or sell certain goods within a specified time at an agreed price. The seller of the option is called an *option dealer* and the purchaser of it is called an *option buyer, option holder* or *option applier*. This right is bought and sold by paying what is called option

money. Four types of option are in use in the market namely Call, Put, Double and Gale.

Call option— The purchaser of this right gets option to purchase or not at his choice a certain commodity within a specified time at an agreed rate. When the prices move higher, the call option holder can call on the option dealer to give him the delivery of the goods contracted for at the agreed rate and sell it in the market at the price prevailing. The difference between the two prices minus the call option money will be his profit. When a bear operator carries on his operations after applying call option, he is known as a *protected bear*.

Put option— The holder of the put option has the right to sell or not at his choice a certain commodity within a specified time at the rate settled at the time when option was applied. In case the prices go down, he exercises his option and gains by making counter purchases in the market. If the prices remain standstill or move higher, he only loses his option money.

When a speculator who has applied put option acts as a bull, he is called a *protected bull* because in case prices fall instead of moving up, he can sell his stock at the agreed rate.

Double option— A double option gives the right either to buy or to sell at the choice of the holder a certain commodity within a given time at a rate agreed upon when the option was purchased. Here the option applier has to pay a greater premium which is nearly equal to the premia of call and put option both. The option holder has the choice to exercise his right any time, when he sees that the bargain would be profitable to him.

Gale option— By gale option, the option holder secures the right to buy or to sell a certain commodity at a price higher or lower than that ruling on the day of the option purchase. Premium charged for gale option is less than what is charged for other options.

Chapter II

COMMODITY MARKET REPORTS

As discussed in the Hindi Section of this book, commodity market comprises three branches namely Produce Exchange, Manufactured Goods Market and Bullion Market. Fortunately India has to-day some of the biggest commodity markets of the world. The organization of all the Exchanges is almost uniform. In each Exchange traders are brought together for the transaction of business as well as for mutual protection. Dealings are conducted on well defined lines so that they may be affected with a minimum of formality and trouble. Membership of most of the Exchanges is very exclusive and its privileges are cautiously guarded. A high standard of business morality is maintained and the interests of the public are properly safeguarded.

Reports of these Markets or Exchanges are prepared by specialist reporters, newspaper correspondents and business representatives. The art of writing them has become highly specialized and the language used is generally technical. Most of the general terms have already been given in the preceding chapter to enable the reader to have a proper understanding of the market reports. A host of words and phrases is used to show the tendency of the price, the market tone and the business transacted on the market. It is not possible to give here an exhaustive list of them, as new words and phrases are introduced and some old ones go out of use, but some usually employed in the market reports are given below.

Peak, top, cap, record levels, ceiling etc. are used when the price is the highest that can be paid by the buyers, and the lowest prices are indicated by words such as **base, floor, bottom, rock bottom** etc. The normal price is also denoted by words such as **moderate, medium,** and **on level.** A sudden rise in price by a wide margin is expressed by words such as **shoot up, flare up, jump, leap, spurt, rally** etc., and for a sudden deep fall in price, **dip, nosedive** or **recessions** is used. The word **precipitous** is used for a great sudden fall.

A rise in price is indicated by words such as **advance, marked up, look up, harden, brighten, to be lifted up, to gather, to gain ground, to put on, to gather momentum, to forge ahead, strengthen** etc. and a fall in price is expressed by words such as **sag, ease, to give way, shed, to be marked down, to lose ground, decline, loss, to soften, to deteriorate, depress, dampen, to yield, to lose, break in values.** A slight fall or rise in price is denoted by words such as a **shade or a trifle,** and its limited fluctuation is expressed by phrases such as **within narrow margins, within narrow limits** or **within a narrow range.** A marked quick rise in price is called as **sharp, sudden** or **smart** and a sudden change is known as **abrupt.** When a price remains high for a long period, it is said to be **pegged high.** An unusual and unaccounted for rise in price is expressed by the word **bulge or soar.** The phrase **with buyers over** is used when there are more buyers than sellers in a rising market ; and **with sellers over** when the sellers are more than buyers in a falling market.

The word **boom** indicates a period of rising prices and heavy business, and against this **slump** is a period of slack business and falling prices. For a fall in price after a healthy business the word **set back** is used and when a price becomes as low as almost reaching the bottom, it is called as **flat.** The phrase **to shed the advance** is used when prices fall by the margin of advance over previous rates. When a price rises after dull conditions, it is said **to improve** and when the rise becomes so high that good business is effected, it is known **to reach attractive levels.** The word **move** is used for a usual rise or fall in a price, and when a fallen price regains its usual level, it is said to have **recovered or gained recovery.** Recovery may be partial. The word **react** or **reaction** is used to denote a turn in prices. When a rising price comes back to its old level, it is called **to recede, relapse** or **slip back.** When a price remains the same for a long period, it is called **sticky** and when a price fluctuates in either direction oft and on and returns to its old level again and again, it is said **to hover round.** When a price rises or falls due to a rise or fall in price of some other commodity, the movement is called **sympathetic** or **in sympathy.** A commodity, price of which falls very heavily, is called the **lame duck of the market.**

The tone of the market indicates the state of the market in respect of the usual and natural course of business. It depicts the essence of business conditions in a nutshell. Various words and phrases are being employed to indicate difference in the tone of the

market. When prices rule high and there is no likelihood of a fall in the near future, the tone of the market is known as **firm, strong** or **steady**. When prices are ruling high and there is a large volume of transactions, it is expressed by words or phrases such as **improvement in the tone, to be toned up, cheerful** or **bright**. On the contrary, **dull, quiet** or **featureless** tone states dull business and low prices. When prices begin to fall the tone is called **weak, depressed, easy** or **the market toned down**. The state of low prices and absence of business is called **a diffident tone**.

The tendency of the market indicates the present trend or movement of prices. It depicts to the mind the probable change in prices and the outlook of business. For example **upward tendency** of the market suggests rising prices, good demand and a good business ; and it is expressed by phrases such as **rising, hardening** or **optimistic**. On the contrary, a *downward tendency* of the market indicates falling prices, a poor demand and slack business. Words and phrases such as **falling, softening, pessimistic** or **down trend** are preferred to express it. A *buoyant tendency* or the *buoyancy* of the market indicates a tendency of marked rise in prices, whereas *spurting tendency* stands for a heavy rise for a short period and *rallying tendency* is used for a sudden rise in the fallen prices. When the market is uncertain, the tendency is said to be **hesitant. Nervous tendency** indicates a fear of fall in prices and an uncertain future. When dealers wait in hope for a rise in price, the tendency becomes **reserved.** A reactionary tendency shows a turn in rising or falling prices. The words **under-current** and **undertone** are used in the sense of tendency only to show a future trend of prices.

Words and phrases like **dull, stagnant, irregular, small lots, odd lots, uncertain,** and **on small account** are used to indicate business in small quantities. On the contrary, **heavy, brisk, on broad scale** and **on large account** stand for business done in large quantities.

Goods available for sale are termed as **offerings, floating stock** or **mobile stock.** Words like **attention** and **support** are used for common purchases. **A thirst for goods** signifies a great demand for goods. When there is a shortage of supply and buyers compete amongst themselves to purchase them, goods are said **to be snatched.** Words like **passing, doing, trade passing, bussiness put through, done, to change hands, being dealt in, being transacted** are used to denote business transactions in the market. **Mill interest, mill support, mill buying, trade interest, trade support, trade buying**

are used for commercial demands of the goods.

When a price fluctuates due to rumours in the market, it is called **the prey of rumour** and when purchases are made when the market is falling, it is known as **buying down the market.**

As pointed out above, the above is not the exhaustive list of words used in the market reports. Besides these, there are others and a constant reading alone can help one to acquire a fuller knowledge about them. Some Market Reports and their explanations are given below to help the reader to proceed on proper lines in analysing them. The various contents of the market report and how to study it have been explained in Chapter IV of the Hindi Section of the book.

PRODUCE EXCHANGE

Example 1.

Hapur Wheat Market

15th January.

To-day's opening (ready) Rs. 15·25, closing Rs. 15·26, highest Rs. 15·27, lowest Rs. 15·20; yesterday's closing 15·22; Ready Khattis Rs. 15·45; Nazrana Chet 40 nP.; Baisakh 75 nP.; Jeth Re. 1·00; Arrivals 1500 mds. Stock Chamber Khattis 600, Private Khattis 700; closed steady.

Comments. The above Market Quotations are from the Hapur Wheat Market Day Report. The rates are quoted in Rupees and Naya Paisa per bazar maund of 40 standard seers.

Explanation. On the day under report, wheat opened with a quotation of Rs. 15·25 per maund for ready delivery and closed with a little higher quotation of Rs. 15·26. It shows a slight improvement in the trade. The highest and the lowest rates in the day indicate the course of the price fluctuations, which shows that the range of fluctuations in price is not wide. Therefore, the sales and purchases done seem to be steady. A comparison with yesterday's closing rate shows that there is an upward tendency on the day, and prices may go higher in future.

In future contracts, delivery of wheat is made in Khattis. Khatti wheat for ready delivery is graded and of standard quality, according to the terms and conditions of the Chamber of Commerce

of the Market. Here the rate for Ready Khatti is higher than other rates.

Nazrana rates are quoted for dealers in Double Option. It gives the option holder the right either to buy or to sell, at his choice, a certain commodity at an agreed price upto an agreed future date. This type of bargain can be entered into for not less than the minimum unit of transaction fixed for the purpose. The above Nazrana Quotations for Chet, Baisakh and Jeth indicate that a Double Option can be bought for these periods by paying option money at 40 nP., 75 nP. and Re. 1·00 per maund respectively for the quantity desired to be contracted for. The rate of purchase and sale is indicated by the rates for Ready Khattis.

The Wheat Market Reports also contain a mention of the approximate total quantity available for supply and the arrivals which increase the existing stock during the course of the business day. This information helps in the determination of prices of the commodity.

Conclusion— Steady business is going on in the market. Within a very narrow limit, prices have moved upward. The arrivals are fairly sufficient to replenish the existing supply. The demand being fair, it is likely that prices may go upward.

Example 2.

Bombay Cotton Market

Bombay— October 28, 1958.

	Previous Closings	Tuesday's Openings	High	Low	Tuesday's Closings	Rise or fall
Cotton Jarilla March	608·25	606·00	609·50	604·75	607·25	1·00

Comment— The above quotations refer to prices of futures in Jarilla variety of Cotton on the Bombay Cotton Market. There are different varieties of Cotton, viz., Bengal Cotton, Oomera Cotton, Baroch Cotton, etc., in which dealings are done in the Market. These are rates from the daily report quoted in Rupees and Naya Paisa per Candy of 484 lbs. for delivery in March.

Explanation— The Jarilla variety of Cotton was quoted at Rs. 606·00 per Candy for March delivery when the market started business, but at the end of the business day, the rate closed at Rs. 607·25.

After fluctuating within a range of about five points, the market closed on a weak note. The fluctuations indicate that there was a heavy covering by some option dealers. A comparison with the previous closing rate indicates that Jarilla Cotton closed one rupee lower and the market started trading at a lower level this day.

Conclusion—The quotations of Jarilla cotton indicate a week trend in cotton futures. It may be due to lack of any enthusiasm in the export section, poor demand from spinners and continued delay in the announcement of any relief in regard to the cotton export duty or step either to improve export of cloth or decrease the mounting unsold cloth stocks lying with the mills.

Example 3.

Commodity Markets (*Miscellaneous*)

(i) Oilseeds (Hapur): Sarson 26·50: Cake 13·31: Taramira 22: Groundnut 20: Cotton seed 14·50: Mustard oil 59 to 70: Groundnut oil 67: Cake 11·50.

(ii) (a) Cotton (Bhatinda): 1958–59 Bhatinda Circle Kapas Desi 18 to 24: Narma 25 to 29: Cotton Desi 50 to 56: 320F 70 to 71: L. S. S. 72 to 72·50: 216F 70·50 to 71·00.

(b) Futures. Sarson Jeth opening 24·02 High 24·32: Low 23·97: Closing 24·20: Sarson Manghar Opening 25·75: High 25·90: Low 25·62: Closing 25·67.

(iii) Groundnuts (Madras) (Per candy of 330 lbs., loose, ex-seller's godown): Summer Crop 192: New Crop 188.

(iv) Grains and Pulses (Hathras). Wheat farm 24·50: Dara 24: Red 24: Gram 19: Barley 17·50: Peas 17: Arhar 22·50: Moong 25: Urad 25: Bajra 16: Maize 14·50: Dal Arhar 27: Dal Moong 33 to 35: Dal Urad 25·50.

Comment— These quotations have been taken from the miscellaneous Commodity Markets in India and are produced here to give the beginner an idea of customary practices of quoting rates in different markets for different deliveries.

Interpretation— (i) These are the quotations from the Hapur Daily Oilseeds Market reports. The rates have been quoted in Rupees and Naya Paisa per maund of 40 standard seers. Sarson and Taramira are varieties of oil-seeds.

(ii) (a) These are the quotations from daily Cotton Market Reports

of Bhatinda. The rates have been quoted in Rupees and Naya Paisa per maund of 40 standard seers. 1958–59 Bhatinda circle Kapas Desi, Narma, Cotton Desi, 320F, L. S. S., 216F are the different varieties of cotton, sorted and graded according to the terms and conditions of the Bhatinda Cotton Market.

(b) The quotations relate to Sarson Futures for delivery in Jeth and Manghar. The quotations for Manghar delivery are higher than those for Jeth delivery, the latter being a crop time of the commodity. The course of fluctuations is indicated by the highest and lowest quotations for the two deliveries and the range of fluctuations is 35 nP in the first case and 28 nP in the second. The fluctuation is not wide and it indicates a steady trend of the market.

(iii) In the Madras Oilseeds Market, groundnuts are sold in candies of 330 lbs. each. Here the rates quoted are for loose groundnuts, delivery of which is to be given at the godown of the seller. Rates for Summer crop groundnuts are higher than for New crop.

(iv) These quotations refer to the rates of grains and pulses prevailing in the Hathras Grain Market on a certain day. The rates have been Quoted in Rupees and nP per maund of 40 standard seers as above. The rate for farm wheat is higher than for Dara wheat or red wheat. Dal Moong has been quoted at Rs. 33 to Rs. 35. It indicates that rates are different for different qualities.

Manufactured Goods Market

Example 4.

Kanpur Bardana

KANPUR, October 18: Bardana (per hundred bags): Spot J. K. Standard 92; Katihar 87·4. Market quiet.

(The Times of India, October 20, 1958).

(a) **Comment**—This is a statement of prices current in the Kanpur Bardana Market on October 18, 1958. The rates are given in Rupees and Annas per hundred bags. The quotations are from the ready market.

(b) **Explanation**— 100 bags of J. K. Standard have been quoted at Rs. 92, and 100 bags of Katihar Quality at Rs. 87 and Annas four. Market quiet indicates that business in the commodity was dull and prices were very low.

Example 5. KANPUR, September 14: The Kanpur cotton

piecegoods market witnessed *dormant conditions* throughout the last fortnight in the absence of *buying interest.* Both local mills and the trade *were still burdened with heavy stocks* of unsold cloth as a result of which the market experienced *acute financial stringency.*

Dealers in fine and superfine manufactures of Bombay and Ahmedabad were offering stocks on a loss. They were prepared *to forego freight charges* from manufacturing centres to Kanpur in order *to liquidate their stocks.* In certain cases goods were offered at prices which included only excise duty and *the ex-mill rate.* But even these concessions failed to attract *buying support.*

Prices of coarse and medium piecegoods *lay unchanged.* Market circles say that reduction in prices was not likely *to give any fillip to fresh demand.* One local mill had decided to offer its goods to a dealer who came forward *to lift supplies.*

Meanwhile, arrivals of winter requirements like coarse and medium shirtings had begun from Bombay and Indore. But due to *the tight position of money supply,* many dealers were unable to accept deliveries. (The Times of India, Sept. 15, 1958)

Questions (1) Give a suitable heading to the report.

(2) Explain the italicised portions.

Answers :

(1) Suitable heading to the report is 'Dull Cottons in Piecegoods'.

(2) Dormant conditions— It indicates absence of business activity.

Buying interest— It means here purchasers of cotton piecegoods.

Were still burdened with heavy stocks— that is, a large stock of cloth was lying unsold with the mills and traders.

Acute financial stringency— A pressing shortage of funds.

To forego freight charges— Ready to give delivery of goods at Kanpur.

To liquidate their stocks— To clear their stocks.

The ex-mill rate— Rate quoted for delivery at the mill.

Buying support— Purchases.

Lay unchanged— Prices remained the same as they were before.

To give any fillip to fresh demand— It means that reduction in price of the goods will not encourage the fresh purchases to any extent.

To lift supplies— Ready to take delivery of the goods purchased.

The tight position of money supply— that is, money being very dear or the rate of interest being high.

Bullion Market

Example 6. *Delhi Bullion*

Heavy Liquidation By Longs

After resuming with sizeable over-night losses, the foward bullion market *declined further* in Delhi on Saturday due to continued heavy long liquidation and bear selling. *Waning demand in the spot section subdued sentiment.* Buyers were discouraged by rumours of more arrivals in the spot section. Calcutta operators were the chief sellers.

Despite a recovery, the market closed lower than the previous closing level. *The quotations,* on balance, showed losses of 75 nP and 50 nP in silver and gold futures, respectively. A large volume of business was transacted *with wide fluctuations.* Arrivals and off-take in silver were estimated at about 25 bars each.

Questions (1) Explain the italicised portions.

(2) Rewrite the report in simple English.

Answers: (1) After resuming with sizeable over-night losses— It means that the market opened with a price sufficiently lower than the closing price of the previous day.

Declined further— There was more fall in the price.

Waning demand in the spot section subdued sentiment— It means that in the ready Bullion market, the falling demand for the bullion caused a bearish tendency in the market.

Despite a recovery— Though the fallen prices gained ground.

Quotations— The rates at which business was transacted.

With wide fluctuations— That is the price moved upward and downward within a great range.

(2) In the Delhi Bullion market, on Saturday forward bullion opened sufficiently lower than it closed on the previous day. On advancing, there was a further fall in prices on account of sales made by bulls to square their deals and bear operations. Advices received from the ready section of the market about fall in demand produced a bearish sentiment and rumours of fresh arrivals in the spot market discouraged buyers.

Later though the market recovered, it closed at a level which was lower than previous closing. Silver and gold futures registered a fall of 73 nP. and 50 nP. respectively. The prices went upward and downward within a great range and a good business was transacted. Sale of silver and its arrival were reported to be 25 bars each.

Exercises on the Commodity Market Reports

Exercise (1)

BOMBAY, October 19 : *Poor off-take* and discouraging reports characterised the trading in the Bombay market for cotton piece-goods last week. In the domestic market, *clearances were meagre* as the purchases on the part of upcountry dealers were limited to small quantities.

Meanwhile, it is learned that stock of cloth with the mills on October 1 were higher at 5·93 lakhs bales of 1,500 yards each, *comprising 2·48 lakhs bales sold but delivery not taken* and 3·45 lakhs bales unsold. The main consumers in the market were Madras and U. P. Though there were *a few inquiries for seasonal goods*, the prices offered were lower.

It is reported that merchants in the market had reduced the prices of their goods by an anna or two. Still the *turnover was not considered encouraging.* (The Times of India, Oct. 20, 1958.)

Questions (1) Give a suitable heading to the report.
(2) Explain the italicised portions.
(3) To what section of the commodity market does the report relate to ?

Exercise (2)

Calcutta Bullion

Calcutta, July 2

	Opening	Closing
Gold :		
Mysore	110·25	110·25
Acid	105·50	105·50
Sovereign	72·25	72·25
Silver :		
Bar	178·00	178·00
Portion	179·00	179·00
Forward	178·06	178·19

(Amrita Bazar Patrika, July 4, 1958)

Questions (1) Give your comment on the above quotations.

(2) Explain the Quotations and draw your own conclusion about the trend of prices.

Exercise (3)

BOMBAY, July 1—*A firm trend* was noticed on the cotton futures market today. Following *the improvement in oilseeds,* other commodities and the stock market, as also the strong belief that the authorities would very soon announce a further export quota, bulls began to buy heavily.

Despite *profit realizing at higher levels,* and the consequent decline in the rate during the mid-session, Jarilla August *recovered again* and *closed firm* registering a rise of $3\frac{1}{2}$ points over the day. *The turnover improved* to around 15000 bales.

The new crop unofficial contract was quoted in private at 20 points lower than the current one.

The ready cotton market remained officially closed today owing to Ashadi Poornima.

Questions (1) Explain the italicised portions.

(2) Give the substance of the report in English.

Exercise (4) **DELHI**

A firm tone was visible in Delhi commodity exchanges on Tuesday. *The turnover was moderate* and price fluctuations narrow. The market started *with small overnight gains* and *improved further on local buying support.* The upward trend was not maintained on renewed selling by Kasganj and Hathras operators. However, the market again *showed a rally* in the latter half of the session, *thanks to scattered bear-covering.* Clear weather enabled further gains towards the close.

In the spot section, groundnut and castor oils recorded a rise of about half a rupee per maund following the Government decision to remove the export duty of Rs. 150 per ton on groundnut oil and of Rs. 100 per ton on castor oil. *Cottonseed oil too hardened slightly* as a result of *better inquiry.* Mustard *seeds appreciated* by about 50 nP per maund in the wake of good demand coupled with *encouraging outside advices.* Among grains, Dara wheat went up by about half a rupee per maund, because of increased *buying activity* from flour mills. Barley moved up *in sympathy.* There was better buying inquiry for gram from U. P. The sugar market was quiet *due to slackened demand* against

better arrivals of about five wagon-loads.

Questions (1) Find a suitable heading to the report.
(2) Rewrite it in your own English.
(3) Explain the italicised portions.

Exercise (5)

DELHI BULLION

A quietly steady trend was witnessed in the local *forward bullion market* on Wednesday.

The market began steady around *previous closing levels* and showed a *modest recovery*. Lack of support caused *a reaction in prices.* However, silver rates *staged a small recovery*, but gold *softened again on better arrivals of Vitur gold in the spot section.*

Following are Wednesday's quotations :

Silver Ready (·999) 181·75 ; (·996) 180·75 ; Tejabi 178·25 ; Gaddi 175·25 ; Coins 162·75 ; Gold Ready Diamond 105·87 ; Vitur 103·75 ; Rawa 103 ; Sovereign Raja 71.

MAHALAXMI EXCHANGE : Silver Forward Opening 181 ; Closing 180·87 ; High 181·31 ; Low 180·75 ; Gold Forward Opening 106·19 ; Closing 105·75 ; High 106·10 ; Low 105·69 ; Silver Bazar Forward 181 ; Gold Bazar Forward 105·75.

Reports of payment of duty for the import of Tibetan silver coins *subdued sentiment.* The closing quotations showed *further losses* of 37 nP and 25 nP in gold and silver futures respectively over the day. *The turnover was small.*

Arrivals in silver were estimated at 30 bars against an offtake of 15 bars.

(The Hindustan Times, July 4, 1958)

Questions (1) Why did the price of Gold decline ?
(2) What heading will you choose for this report ?
(3) Explain the italicised words.

Exercise (6)

DELHI

Commodity futures lost considerable ground in Delhi on Saturday *under the lead of gur futures.* The *turnover was large with wide fluctuations.* The market started *with heavy losses* following the announcement of sugar export quota of only 50,000 tons and the rates drifted lower *on heavy bull unloading.* Operators were hoping for an

export quota of 2 lakh tons. Bears also *hammered the market.* Kasganj, Muzaffarnagar and Narela operators were reported to have sold heavily. *Lower levels,* however, *attracted some support* due to which the rates sbowed *a mild recovery.*

The spot markets were almost unchanged. Farm wheat and masoor steadied up further modestly due to increased *buying activity,* but gram *was soft* on lack of inquiry. Neem and Mahuva oils showed *small losses* due to decreased demand. Sugar recorded *a mild setback.*

(The Hindustan Times, June 30, 1958)

Questions (1) Explain the above report in simple English.

(2) Give the meaning of the italicised portions.

(3) Why did the market start with heavy losses ?

Exercise (7)

CALCUTTA, September 14 : Jute goods were idle and *prices tended* to *decline* in the absence of *foreign inquiry.* Even a decline in mill stocks during August was of little consideration. Hessian 40″ × 10 oz. declined to Rs. 40·76 per 100 yards and B Twills *were lowered to* Rs. 97·30.

There was only *scattered interest* in the specialities in sacking from Australia while *limited covering* was seen in Hessian occasionally. As a result, prices of hessian for ready delivery were quoted *at a premimum* over forward prices. The reverse happened in the case of heavy goods. Current prices were lower than forward ones. This was attributed to speculators' ideas that *the switch-over of looms* from sacking to hessian output would ultimately reduce the supply of heavy goods.

(The Times of India, Sept. 15, 1958)

Questions (1) Explain the italicised portions.

(2) Rewrite the report in simple English.

Exercise (8) Bombay, June 26.

The Bullion Exchange *displayed a steady trend to-day.* After an early *mild recession* on lower Calcutta advices silver recovered its losses *on profit covering.* Gold opened quiet and early gave ground *in sympathy with silver,* but later *pushed up on good spot eqquiries* and *slackened pace of arrivals.* The volume of business in both metals was small *and the undertone steady.*

Kolar gold was unoffered. Hyderabad Bank was reported to have sold about 1,000 tolas of gold.

Forward silver Shravan opened lower at 183/7 and *slipped lower on scattered selling,* before recovering to 183/15 on *shortcovering* The session terminated at 183/13. Shravan Second delivery was placed at 184·3 and Old Delivery at 183/-. Spot silver held at 182/15. Arrivals were indicated at 10 and offtake at 6 bars.

Forward Gold opened quiet at 106-13-6 and *early reacted* to 106-11 in sympathy with silver. Short-covering aided a recovery and the market *finished off fractionally higher* at 107-0-6. Mysore gold was mentioned at 108/4, Old Delivery at 107/10/6 and Spot at 107/14. Sovereign was placed at 70/8.

Arrivals and offtakes were 3,000 tolas and 4,000 tolas respect-tively.

Questions (1) Explain the italicised portions.

(2) Give a suitable heading to the above report.

Exercise (9)

MADRAS, Oct. 13.—The supply position of groundnut kernel *continued to be tight* last week as only comparatively small supplies of the early sown crop were expected in a fortnight. But the *long-term outlook was bearish* because of *a bumper winter crop* expected this year.

With Calcutta dealers and *vanaspati interests* keenly bidding for ready and *near-at-hand oil* in Madras and up-country centres and crushers reluctant *to extend their commitments,* groundnut oil *prices advanced sharply* during the latter part of the week, registering an advance of Rs. 5 to Rs. 6 per candy over the opening levels, and closed around Rs. 362, Rs. 354, Rs. 328 and Rs. 314 per candy, respectively, for ready, October, November *and December positions.*

Arrivals of tanned hides were somewhat smaller, *but the offtake was fair ;* despite lower bids coming through from London. *Prices were steady* in the local market, particularly in light weights. Whilst the prices of inferior fifths *were put up* by North India buyers, medium and heavier weights *were sluggish.* Tanned buffs were slightly lower.

Questions (1) Give a suitable heading to the report.

(2) Rewrite the report in simple English.

(3) Explain the italicised portions.

Exercise (10)

DELHI, October 16 : *A loss of Re. 1 at* Rs. 188·06 in silver futures as compared to yesterday's closing level was the main feature of *today's*

active trading on the Mahalaxmi Exchange. *The gold section* was quietly steady. *The turnover was good with wide fluctuations* particularly in silver.

The market started *on a quiet note* and soon after *prices eased slightly under the lead of silver.* But gold futures recovered a part of their losses thanks to renewed *buying interest* induced by the shortage of *floating stocks.* Silver futures eased further considerably due to bull liquidation coupled with rumours of sale of about 750 bars of silver by a former princely State *in the open market.* Kasganj and Calcutta operators were reported to have made heavy sales. The tone at the close was *quietly easy.*

Arrivals in silver were reported to be about 30 bars, but offtake was around 15 bars.

Questions (1) Explain the italicised portions.

(2) Explain the whole report in simple English.

Exercise (11)

Most of the Delhi Markets *displayed firm conditions* during the past week. Among commodity futures, gur Fagun touched *a new high level in the recent upward movement.* Sarson August was generally quoted *above the margin level.*

Grain *continued firm.* Farm wheat was slightly steadier at Rs. 16 per maund due to *slackened arrivals* against *better demand.* Dara wheat remained unchanged. There was heavy demand for gram from U. P. and arrivals were small in the latter half of the week due to which *the rates gained* about half a rupee per md. . A small rise in barley was attributed to reduced stocks. Higher advices from Punjab enabled *a recovery of about 50 nP* to Re. 1·00 per md. in rice. Maize was *a shade dearer* due to reduced arrivals in the face of good demand from consuming centres. *Jowar hardeed by about 50 nP* per md. as a result of small stocks. Following report of lower stocks of guwar in the assembling markets, guwar (superior quality) gained about Re. 1·00 per md. *Moth firmed up considerably due* to paucity of stocks. Pulses presented a rising tendency, *with prices showing gains of* about 50 nP to Re. 1·00 per md. owing to better demand.

(The Hindustan Times, June 30, 1958)

Questions (1) Explain the italicised portions in detail.

(2) Explain the whole report in simple English.

(3) Give a suitable heading to it.

Exercise (12)

Bombay Cotton

Active Buying By Mills.

Bombay, July 27.— A firm trend obtained in cotton futures during the past week due largely to bear-covering and *renewed speculative support.* Prospects of an imminent release of an export quota and the realization that some parties were preparing themselves to weigh over cotton *against the maturing contract* caused some uneasiness *among the operators,* who preferred *to cover their open sales.*

Further, *spot advices were cheerful* and mills were said to be keen buyers in the spot. This imparted *strength to future.* Mill buying was reported to be on a much *higher level* than hitherto. The revival of buying by mills is attributed to the *improved offtake* of cloth in the piecegoods market, especially in the fine and superfine categories. In fact, spot advices sustained activity all-round.

On balance, *prices advanced sharply* with I. C. C. August contract rising to Rs. 689 from Rs. 677, before closing at Rs. 683·50. While the *distant contract* I. C. C. March improved to Rs. 686·50 from Rs. 679, before closing at Rs. 680·50. The *undertone at close was cheerful.* With the chances of a few tenders in the maturing contract, the differences between the maturing and the distant contract have widened further to Rs. 3 at close.

Trading conditions in the spot section were cheerful with all-round demand for staple varieties. Mill activity continued to be at a high level throughout the week, thanks to improved advices from the cloth market.

In the export section, following delay in the announcement of an export quota, *prices receded to some extent.*

In the foreign section, *sustained demand* for American cotton was noted. Sales, pending import licence, continued. It is learnt that the allocation for 30,000 bales of sterling area cotton may be announced any time now.

(The Hindustan Times, July 29, 1958).

Questions (1) Explain the italicised portions in detail.

(2) Give a brief account of the above report in your English.

(3) How far do you agree to the heading of this report ?

Chapter III

MONEY MARKET REPORTS

The Money Market is an organized institution in which money is bought and sold. It is not only money that is dealt in, but dealings in credit also are effected in the market. Purchasers of the money are called borrowers and sellers are known as lenders. Really speaking, it is the use of money that is purchased and sold at a price known as interest. The Money Market is a section of the capital market which finances short-term requirements of the business community, bankers, bill-brokers, Discount houses or the like.

Like other commodities, money is bought and sold on the basis of competition between its buyers and sellers. The rate of interest is settled in accordance with the law of demand and supply. If there is an excess of supply over demand, the rate of interest is low and if the demand is greater than the supply of money, the interest rate is high. When the rate of interest is low, the Money Market is said to be *easy* and when the rate of interest is high, the Money Market is said to be *tight*. The following table shows at a glance the position of money and the market in relation to its supply and demand :—

Excess of supply over demand—low interest—Money Market easy—Money cheap.

Demand more than supply —high interest—Money Market tight—Money dear.

In India, big Money Markets are localized at Bombay and Calcutta, while smaller ones at some other big cities of the country. The Money Market comprises money-lenders, bankers, borrowers, bill-brokers, Industrialists, entrepreneuurs, businessmen and stock operators. Reserve Bank of India is the pivot of the Money Market. It exercises a great influence on the conditions of the market. It is a bankers' bank and co-ordinates credit, currency and exchange in India. It is a link between the Government of the country and other Joint Stock Banks. There are numerous Joint Stock Banks in the country which employ their surplus funds in financing short term

credits. Joint Stock Banks also link the public with the Government of India.

Money Market Terminology

Money Rate— It is a general term used for interest rates charged by lenders of money from the borrowers. It differs with the kind of debt and fluctuates in accordance with the demand and the supply of money.

Bank Rate— It is the official advertised minimum rate of discount at which the Reserve Bank of India will discount gilt-edged securities or first class three months' bills of exchange. The Bank rate is fixed by the Bank from time to time.

Market Rate— It is the rate of discount charged by members of the money market other than banks for discounting bills. Market rates vary. Usually the shorter is the period of the bill, the lower is the discount charged. It is higher than short and call rates.

Bankers' Deposit Rate— It is the rate of interest paid by the bankers on deposits left with them. It differs for different kinds of deposits. Longer the period of the deposit, higher is the rate of interest allowed for it.

Brokers' Deposit Rate— It is the rate of interest paid by discount houses or city brokers on deposits left with them at call or short notice. It is a bit higher than the bankers' rate for deposits on the same terms.

Bankers' Discount Rate— It is the rate of discount at which the exchange banks discount the Bills of Exchange, usually of three months' usance.

Bankers' Call Rate— It is the rate charged by bankers for loans to members of the market to be repaid at call.

Bankers' Seven Day Rate— It is the rate charged by bankers for loans to members of the market to be repaid at seven days' notice.

Day to Day or Overnight Rate— The rate of interest charged for money, repayable the next day is called Day to Day rate.

Bill Broker— Bill broker is a commission agent. He acts as a middle man in the money market. He brings together the borrowers of money and the lenders thereof by keeping in touch with them. It is he through whom usually the purchase and sale of money is effected in the Money Market. He gets brokerage for his job. He also deals

in bills. He purchases and sells bills on his own account. He finances himself generally from banks.

Time Money— These are short term loans upto six months granted by banks to bill brokers, discount houses or bankers.

Ways and Means Advances— The advances made by the Reserve Bank to the Government for short periods for current and overhead expenditure are called Ways and Means advances.

Inflation— It is a state of the Money Market in which the supply of money over the normal demand is deliberately increased with the result that there is a fall in the value of money and a general rise in the prices of commodities. In inflation manufacturers and producers reap high profits and consumers stand to lose. Businessmen and debtors are also benefitted. The Government, the biggest debtor of public loans, benefits most.

Deflation— When the supply of money decreases in relation to the demand to such an extent that there is a general fall in prices, it is called deflation. In deflation the value of money rises whereas that of commodities falls. Its repercussions are just the reverse of those of inflation.

Conversion Loan— When the Government floats a fresh loan in order to redeem a long term loan, it gives the holders of the securities the option of receiving payment in cash or exchanging them for the new. The conversion loan is generally a long term loan carrying a lower rate of interest.

Treasury Bills— The issue of Treasury Bills provides the Government with a very useful method of borrowing for short periods. These bills usually run for three months, but bills of the usance of six or twelve months are not uncommon. The Treasury Bills carry no interest, but they are issued at a discount, that is at an amount less than the face value of the bill, and paid off at par. The bills are generally of the denominations of Rupees 100.

On each Tuesday, tenders for a specified sum are invited by the Government for the purchase of the Treasury Bills and the tenders offering the lowest rate of discount are given preference. Joint stock banks are the principal buyers of the Treasury Bills. The intending buyers of the Treasury Bills have to mention the date of payment and taking delivery of the bills in their tenders and this day should fall within seven days of the submission of the tenders.

The Treasury Bill Rate— It is the rate of discount at which Treasury Bills are purchasable in the market.

Intermediary Treasury Bill Rate— These Treasury Bills differ from the regular Treasury Bill in the point that the tenders for the former type of bills are invited and accepted on working days other than Tuesday and the rate of discount is fixed by the Government on the basis of average rate of the previous issue. The rate is known as the tap rate. Intermediary Treasury Bills are issued by the Government to take advantage of cheap money in the market.

Bank Returns— The Reserve Bank of India issues weekly publication of its assets and liabilities, showing separately the position of Issue (currency) and Banking department. It is called the Bank Returns. It exercises a great influence on the money market.

Indian Sterling Loan— It is a loan that the Government of India borrows in England. Loans floated by the Government in the country are called Rupee Debt.

Short-term Loan—These are loans borrowed by the Government of India for a very short period. These loans often take the shape of sale of Treasury Bills, deposits in Post Offices, sale of Rupee papers etc. These are known as Unfunded Loans.

Long-term Loan—The loans floated by the Government for a long term are called long-term loans. They are known as Funded Loans. These loans are raised by issue of Promissory Notes, known as G. P. Notes. They are meant for financing long period plans.

Call Money— These are short period loans repayable when a call for repayment is made. The banker has to serve notice to call back the money.

Floaters— The securities or parcels against which short-term loans are advanced by banks to the bill-brokers are called floaters. Stocks, Treasury bills, Railway receipts and Promissory notes serve as floaters.

The Money Market Reports and their Interpretation

Example 1.

Bombay Money Market

BOMBAY, October 16 : There was no fresh developments in the Bombay short-term money market today. Interest rates remained almost unchanged.

INTER-BANK CALL MONEY: Exchange and larger Indian banks 2 per cent, smaller Indian banks 2-1/4 to 2-1/4 per cent (the latter being the more representative rates) ; "House Money" at 7 days' notice 3-1/4 to 3-7/8 per cent.

TERM MONEY : One to six months : 3-1/2 to 4 per cent.

(The Times of India, Oct. 17, 1958)

Comment— The above Quotations relate to the Bombay Money Market. These are Quotations for October 16, 1958. The Quotations begin with a short description about the condition of the Money Market. The rates of interest have been quoted at so much per cent per annum. The Quotations relate to different kinds of short-term loans transacted on the Bombay Money Market. The rates for loans running for a shorter period are less than for those running for a long period. The rate of interest for transactions amongst Exchange and larger Indian banks is lower than the rate that ruled in the dealings of smaller Indian banks.

Interpretation—The rate for Inter Bank Call Money amongst Exchange and larger Indian banks is quoted at 2 per cent per annum which remained sticky throughout the day. Business in the same kind of loan amongst smaller banks was transacted at $2\frac{1}{4}$ per cent per annum and here too no change in the price is reported. This rate is said to be the representative rate of the market.

House Money payable at seven days' notice has been quoted from $3\frac{1}{4}$ to $3\frac{7}{8}$ per cent. The difference between the highest rate and the lowest rate is only fractional.

Term Money for periods from one to six months has been quoted at $3\frac{1}{2}$ per cent per annum to 4 per cent. This kind of loan is for a bit longer period and so the rate of interest too is higher than those for others. The price fluctuated within a narrow margin of $\frac{1}{2}$ per cent.

As interest rates are reported to remain unchanged, only usual business seems to be transacted.

Example 2.

Meanwhile, conditions in the short-term money market continues to be very comfortable as the demand for funds has tapered off and the slack seasonal influences have been very much in evidence as will be evident from large funds with the banking system in the country.

Banks continued to reduce their borrowings with the Reserve Bank. Interest rates, however, remained unchanged with the inter-bank call money placed at 3 per cent among all banks, while house money at call was quoted at 4 to 4-3/8 per cent. Short-term deposits continued to fetch 4-1/8 to 4-3/8 per cent for one to six months.

There has been a further contraction of Rs. 18·07 crores in active notes, according to the Reserve Bank's weekly statement for the week ended June 20. Deposits of banks have risen by Rs. 12·58 crores.

(Hindustan Times, July 1, 1958)

Questions— (1) Give a suitable heading to the report.

(2) Explain it in simple English.

Answers :—

1. A suitable heading to the report is 'Money Market Easy'.

2. The reporter says that the supply of short term loans is easy because demand for money has slackened and the dull season of the money market has set in as is clear from the large amounts of money lying idle with the banks in the country. The borrowings of banks from the Reserve Bank of India are decreasing day by day for the same reason. Inspite of this, there has been no change in the rates of interest. Short term loans at call among all banks were transacted at 3 per cent. The House Money at call was transacted at 4 p. c. to 4-3/8 per cent. The rate for short-term deposits for one to six months ruled from 4-1/8 to 4-3/8 per cent.

As per figures given in the weekly publication of the Reserve Bank of India for the week ending June 30, the circulation of Currency has further decreased by 18·07 crores. Money left with banks as deposits has further increased by Rs. 12·58 crores.

Exercises on the Money Market Reports

Exercise 1. Explain clearly the following extracts from the reports of the Money Market :—

(a) **"The Times of India" News Service**

BOMBAY, August 24.

Conditions in the Bombay short-term money market were distinctly easy during the past week. Demand for funds was small but credit supply was plentiful. As a result interest rates tended to decline further.

(b) LONDON, May 24.

Business men here have ended the past week on a perplexed note. On Thursday the Bank Rate was reduced from 6 to 5½ per cent. Does the Government intend this as just another technical adjustment to the monetary system, like the reduction from 7 per cent, two months ago? Or, is it opening the way for a general relaxation of the credit squeeze in the near future?

(c) LONDON, June 28.

Confidence here in the general economic outlook is still not very high. The feeling has been growing that the U. K. economy may yet be hit by the recession in the U. S. A. The Chancellor of the Exchequer could put new life into business affairs by lifting the credit squeeze, but manufacturers' order books have been shrinking. Any Government relaxation now, therefore, may be too late to prevent a down turn later in the year.

Exercise 2. Rewrite the following reports in simple English :—

(a) **Treasury Bill Tenders**

Tenders for Rs. 3 crores of 91 days' Government of India Treasury Bills were opened on Tuesday, October 28. The total amount offered was Rs. 8·75 crores. Tenders at Rs. 99·380 were accepted in full and those at Rs. 99·375 allotted approximately 31 per cent. Lower tenders were rejected. The total amount accepted was Rs. 3 crores—the average rate of accepted tenders being Rs. 2·489 per cent per annum.

Tenders for Rs. 4 crores of 91 days' Government Treasury Bills will be received at all centres (Bangalore, Bombay, Calcutta. Kanpur, Madras, Nagpur and New Delhi) upto the close of business on Monday, November 3. Successful tenderers should make payment on

Friday, November 7. Other conditions will be as usual.

During the week ended October 24, Treasury Bill for Rs. 139·28 crores were sold in favour of the Reserve Bank of India.

(The Hindustan Times, Oct. 31, 1958)

(b) **London Money Market**

London, June 28.— Although there was the usual weekly tightening up of the credit supply on Thursday on account of revenue transfers, the overall money position during the past week was fairly comfortable.

There was again Government disbursements to help swell cash resources of the main banks, and borrowers although paying 4 per cent in the initial dealing of each day's session, were able to secure cheaper balances down to 3 per cent. Over all the market was able to finance its uptake of Treasury bills with a fair profit margin. Currently credit conditions are being affected by half-year end preparations.

The demand for bills was less keen than of recent weeks although a fairly good turnover took place in September and "hots" at 4-7/32 per cent.

—Reuter.

Exercise 3. Explain the italicised portions in the following reports :—

(a) **London Money Market**

London, Sept. 27.— For the first three days of the past week credit conditions in the London Money Market *were difficult* and the market *was forced into the Bank* of England each day. The main contributory factor was a very large bill taken up by *discount houses* following their *successful bid at the previous Friday's tender.*

During the early days of the week *they took up a very large proportion of the bills* and with no expansion in the volume of credit, money was consequently *in very short supply with borrowers* paying 3-1/2 per cent and 3-5/8 per cent for their accommodation. By Thursday market requirements were reduced *to a more manageable proportion* and for the rest of the week the market was able *to balance books comfortably* and paid *easier rates for their requirements.*

Bill business was on a fair scale with the rate for December and hots holding at 3-17/32. The money market raised their buying price

for fine bank paper by 1/32 per cent. Fine trade bills were unchanged.
—Reuter.

(b)

BOMBAY, August 17.

Despite some patchiness, conditions on the whole *were comfortable* on the Bombay short-term money market, during the week under review.

A greater demand for funds was *encountered from banks in the initial stages* due perhaps to the *heavy subscriptions to* the 4-1/4 p. c. Bombay Municipal Loan and the excellent response to the *Treasury Bills* but the market managed to cover its needs. Fairly large purchases of Government securities from the Reserve Bank of India at rising level of prices tended to *accentuate fluctuations in the floating resources.* Late in the week, however, there were reports of funds returning to banks and the *supply position improved again.*

(c) *LONDON MONEY MARKET.*

Credit Conditions Tight

London, May 24— There was *no relaxation in tight credit conditions* in the London Money Market during the past week and for four days running several discount houses were forced to borrow *small amounts on bank rate terms.*

It was therefore a surprise that with the market having been forced into the bank the authorities should decide this week *to reduce the bank rate.* This had been anticipated before the home labour and the international political troubles arose and with the money market having forced the bill rate higher over the past two weeks the reduction was not quite anticipated.

The reduction has left the immediate short-term interest level still *in a state of flux* as it is felt the reduction *would not impede the keen demand for treasury bills* at the weekly tender. —Reuter.

Foreign Exchange Reports

Foreign Exchange, like money market, is a component part of the capital Market. It is a well organized market in which foreign exchange is bought and sold. In the present economy, foreign trade has assumed as much importance as Home trade. Econo-

mically countries of the world are dependent on each other for effecting a social well-being. It involves import and export of goods. Besides, people undertake foreign tours, go to other countries for education and technical training, and social and cultural missions are exchanged to promote goodwill and understanding between all. All this involves monetary transactions. Hence the necessity for the Foreign Exchange to settle obligations arising out of these activities and foreign trade.

Currency of one country differs from that of the other, so two countries can not have direct dealings in currency with each other. Besides this, it is the age of paper money. It is all the more not possible. The dealings, therefore, amongst countries of the world are effected by means of barter system and excess of one over the other is paid by means of bullion which alone is the international money. In real practice, the payment of foreign obligation is not done by bullion because it is not cheap to do so. Therefore, a number of methods have been devised to effect foreign exchange, and the Exchange Banks play a vital role in this business. A foreign payment can be made by either of the following means :—

Foreign Bill of Exchange or B/E— It is an order in writing given by the creditor to his debtor to pay a specified sum of money on demand or at a future date to the person named or to his order. It is the chief means for making foreign payments conveniently. The Bills of Exchange which are drawn and accepted by businessmen are called Trade Bills of Exchange aad those which are drawn and accepted by banks are known as Banks Bills of Exchange. Bills drawn by Indian exporters on English importers are called Sterling Bills and those on Americans, Dollar Bills.

Banker's Draft or D. D. or O. D.— It is an order in writing given by one branch of a bank to its other branch or to its representative to pay a certain amount of money on demand to the purchaser of the draft or his nominee. It is a very popular method of transferring money from one place to the other. The draft can be crossed like a cheque and its payment made safe thereby. The order is sent by mail.

Mail Transfer (M. T.)— It is an order sent by mail by a bank to its branch or to another bank to pay a specified amount of money to the party named therein. When the bank guarantees that the

payment of the order will be made within a specified period by its representative abroad, the order is called G. M. T. or guaranteed mail order.

Telegraphic Transfer (T. T.)— It is the quickest method of remitting payment. An Exchange Bank issues order by cable to its branch to pay a specified sum to the nominee of the remitter. It is called a T. T.

Stock Exchange Securities— Securities which have international cognizance or otherwise are first class securities and are saleable at the financial centres of the world also serve as a method of payment. They may be sent and sold in the creditor's country and thus liquidate one's obligations to a foreign country.

Bullion— Payment by bullion is resorted to only when it is cheaper to send bullion than remitting payment by any other means.

Foreign Exchange Quotations

Foreign Exchange Quotations are stated in two ways. In the first method the country quoting the rate takes the home currency as a unit of measure, and usually 100 or one unit of home currency is expressed in terms of foreign currency which moves upward or downward according to the rules of demand and supply. In the second method one unit or 100 units of foreign currency are measured in terms of home currency the value of which fluctuates in terms of foreign currency. England uses both the methods. There the rates of Exchange with other European countries and the U. S. A. are quoted in terms of home currency taking as fixed unit but in the case of India the second method is employed and sterling currency is expressed in terms of Indian currency, one unit of which is taken as fixed.

T. T. Rate—The telegraphic transfer rate is quoted by the Exchange Banks for the debtors. It is the dearest method of making foreign payment.

Sight or Demand Draft or D. D. Rate—It is a rate which is quoted for bills and drafts payable on demand or at sight.

Short Rate—It is a rate which is quoted for bills which are of a short usance usually of not more than ten days.

Long Rate—Long rate is quoted for bills whose periods of

maturity differ from 10 to 90 days. It is the cheapest and the lowest rate.

Tel Quel Rate—It is an adjusted long rate quoted for bills which have run some of their maturity period. The rate differs from bill to bill in accordance with the running of their period.

Clive Street—It is a place where the Money Market at Calcutta is localized.

Rupee Rate—It is the amount of foreign currency which one Rupee buys.

Cross Rate— When an Exchange rate of two countries is quoted in the third country it is called a cross rate.

India B. C. Rate— The rate quoted for retiring bills before due date is known as the Bills for collection rate.

Mint Par of Exchange—When two countries are on the same metallic standard, Mint Par of Exchange is easily determined by comparing the pure metallic contents of the two standard coins as fixed by the governments of those countries. Such comparison is possible only between countries using the same metal for their standard coins. Mint Par of Exchange was easily determined in old days when countries were on gold standard and there was no restriction on free movement of Gold. In these days, the rates between two countries are pegged ; the basis for this being purchasing power parities.

Gold or Specie Points— If the payment by transfer of gold would not involve any expenses such as freight, insurance charges, customs duty etc. for a long time, the rate of Exchange would have been the Mint Par of Exchange. Transfer of gold costs freight, insurance charges and other expenses. Hence the rate of Exchange between two countries increases and decreases over and below the Mint Par of Exchange by an amount equal to the expenses involved in transfer of gold. The upper and the lower points so touched are called the specie points. The rate of Exchange then fluctuates between these specie points according to the supply and demand position of the foreign currency. If the rate demanded falls outside the points or at a point at which it is cheaper to make payment by gold, gold begins to flow out of the country. Hence the point at which gold begins to leave the debtor country is called the Export Specie

point and the point at which inflow of gold is effected is known as the Import Specie point.

It may be noted that the specie points functioned only when the countries were on gold standard and there was free movement of gold.

Spot Rate— It is the rate of Exchange for immediate payment and delivery of foreign currency.

Forward Rate— It is the rate of Exchange for delivery of currency at some future date. Contract for future delivery of currency is done in order to provide safety from loss likely to occur due to fluctuation in the rates of Exchange. A trader who has purchased goods in a foreign country now and who wants to make payment after safe arrival of the goods, would prefer to have such a deal.

Contracts for spot and forward transactions are done in a large volume by the Foreign Exchange Banks due to their hedging operations. Sometimes such operations of the banks produce a bullish or bearish tendency in the Foreign Exchange.

Arbitrage— In the Foreign Exchange, when a speculator effects deals in Foreign Exchange simultaneously at two or more Exchanges with a view to make profit out of the difference in Exchange rates ruling in them it is called an arbitrage. Arbitrage is of two kinds. When arbitrage dealings relate to two markets, it is called a simple arbitrage and if they relate to more than two Exchanges it is known as compound.

Straddling— In the Foreign Exchange too, straddle goes on. When the Exchange operators take advantage of wide differences in the prices of different classes of bills in the same Exchange, and carry on arbitrage dealing, selling one class of bills to purchase another, such operations are known as straddling.

Foreign Exchange Rates and Their Interpretation

Example :

Exchange Rates

There was little to report in the Rupee/Sterling Exchange Market. Remittance enquiry was small and trade bills few. Sellers of spot T. T. on London quoted 1 s. 5-31/32 d and buyers 1 s. 6 d. Merchant rates fixed by the Exchange Banks' Association remained unchanged as under :—

Sellers of spot T. T. on London spot	...	1 s. 5-31/32 d
Sellers of spot T. T. on London up to 6 months	...	1 s. 6-15/16 d
Buyers of T. T. on London spot and up to 9 months	...	1 s. 6-1/32 d

Comment— The above Quotations relate to the Foreign Exchange. The Quotations given are direct, that is, the value of the sterling is given in terms of the Home Currency.

Interpretation— There are two types of rate, that is, general rates and the rates for merchants fixed by the Exchange Banks' Association.

General rate for T. T. on London for sellers of spot is Quoted at 1 s. 5-31/32 d and that for buyers 1 s. 6 d. There is a difference of 1/32 d between the two rates. The rate for buyers is higher than the rate for sellers, but it is of benefit to both.

Merchant rates are for spot as well as for forward. The rate of T. T. for sellers of spot on London spot is more than that for forward transaction. Longer the period, the more favourable the rate.

Rates of T. T. for buyers spot is higher than for sellers and so it is of advantage to the buyers.

Buyers of T. T. are importers, so they buy T. T. on London for making payment. Sellers of T. T. are exporters. So they sell T. T. on London. The rates quoted for both the types of dealers are favourable from the point of view of the country and it signifies a favourable balance of trade.

EXERCISES

Exercise 1.

Exchange Rates

Friday's Quotations

London on India 1/5·97 to 1/6·03; London on New York 2·8012 to 2·8018; London on Madrid 117·00 to 119·00; New York on London: Official 2·78 to 2·82; Free 2·80-1/8 to 2·80-3/16; New York on India: Official 21·00; Free 21·00 to 21·03. —Reuter.

(The Hindustan Times, 15 Sept. 1958)

Question. Explain the above Quotations in English.

Exercise 2.

Exchange Rates

Monday's Quotations

London on India 1/5·97 to 1/6·03; London on Now York 2·8068 to 2·8075; Madrid 117·00 to 119·00; New York on London: Official 2·78 to 2·82; Free 2·80-23/32 to 2·80-25/32; New York on India: Official 21·00; Free 21·04 to 21·07. —P. T. I.

(The Hindustan Times, Oct. 30, 1958)

Question. Explain the above Quotations in English.

Exercise 3.

Rupee-Pound Trends

Conditions in the foreign exchange market in the country *have undergone a radical change* this month. The demand for Sterling *on private account has abated* and many banks have found it more profitable to buy Sterling in the inter-bank market than from the Reserve Bank. *The inter-bank rate* for Sterling is around Rs. 133,375 for £ 10,000 which is about Rs. 40 lower than the official rate.

Temporary Phase?

The easy availability of sterling with the banks and foreign exchange dealers has been *somewhat intriguing.* Does it indicate that the situation has improved in favour of India? Dealers in foregin exchange point out that it will be too early to draw any conclusion from the present situation *as the balances held abroad* and foreign

securities have not shown any improvement in recent weeks. According to them it is a temporary phase caused mainly by the delay in New Delhi's announcement of the import policy for the current half-year.

More Export Bills

Banks point out that they have of late been receiving *more export bills*. Import bills have been of a smaller magnitude as a majority of traders have already utilised *their import linceces*. The speculative pressure on Sterling following rumours *of the devaluation of the rupee has tapered off*. The outlook on the foreign exchange front having improved during the past two months as a sequel to offers of foreign loans, many traders have preferred *to switch over from the ready to forward purchases* of Sterling. There is now no anxiety to book Sterling in advance despite the fact that the new import policy will be made known within a week.

(The Times of India, Oct. 17, 1958)

Question 1. Explain the italicised portions.

2. Rewrite the note in simple English.

Chapter IV

THE STOCK EXCHANGE REPORTS

In the preceding Chapter, two sections of the capital market namely the Money Market and the Foreign Exchange have been dealt with. In this chapter, it is proposed to deal with the third component part, the Stock Exchange and its reports.

The Money Market finances the short term requirements of its different members, the Foreign Exchange finances foreign trade and provides facilities for settling mutual international obligations arising out of the multifarious activities carried on by governments and the public alike, but the Stock Exchange meets the long term financial needs of the industrialist, the entrepreneur, the businessman, the manufacturer and the producer and helps the government in floating long term loans to finance its long plans and projects. Like other markets, it is a highly organized market whose business is conducted scientifically in a well organized manner.

The Stock Exchange is generally a registered body under the Indian Companies Act. It has share capital, but it does not participate in the business of the Stock Exchange. It comprises several members and their membership is very exclusive. Every intending person has to buy some shares to the prescribed amount or to pay a certain amount of money for deposit as membership fee. Only the members of the Exchange or a limited nominees or representatives can take part in the business of the Stock Exchange. There are various sub-committees of the members under whose supervision the work of the Exchange is done. Only such securities as are approved by the exchange are dealt with in the Exchange. Outside people can also purchase and sell their securities but this they can do through brokers who charge brokerage from both the parties for their job. These brokers are not the members of the Stock Exchange, but they are active participants in the business of the Exchange. They keep in touch with the intending buyers and sellers and introduce them for transacting business. On the contrary there are jobbers. They carry on business in their own names and do not act as brokers. They

conduct a sort of speculative business. They sell securities which are not possessed by them and when prices fall, they make purchases for effecting deliveries and at times act Vice Versa. They are members of the Stock Exchange. As against this, those who have securities are called dealers and they may or may not be members of the Exchange. Clearing House is an important institution of the Stock Exchange. Through it, numerous transactions done in the market are settled without loss of time and waste of energy.

In India, there are a number of Stock Exchanges. The Calcutta Stock Exchange Association Ltd. is a registered Joint Stock Company which has a Share Capital of 3 lacs of rupees which is divided into 1000 shares of Rs. 300 each. Only members and their representatives to the fixed number can do business in the market. All transactions are done in the name of the members. The delivery of Stock or share transactions are done in lots. The Bombay Stock Exchange is the largest Stock Exchange in futures in India. The Native Share and Stock Brokers' Association of Bombay is the controlling authority of this Exchange. It has 451 members, each depositing Rs. 10,000 as security money. All the business on the Exchange is done among the members of the Association, but a member is allowed to work as a broker for an outsider. The transactions are settled monthly throuh a clearing house and the dealings are finally settled by payment of differences.

The London Stock Exchange is the largest Stock Exchange of the world. There are two types of members, namely, brokers and jobbers. New York Stock Exchange has 1375 members who can act as brokers and dealers both.

Generally, securities are classed into three categories namely (1) First class securities, (2) Trustee securities, and (3) Ordinary securities.

1. The first class securities are also known as gilt-edged securities. These securities are issued by the Central and Provincial Governments, Corporations and Port Trusts. These securities have a world market.

2. Trustee securities are also known as semi-gilt-edged securities. These loan certificates are issued by Government, banks, insurance companies, electric companies or any other public utility institutions. They range next to the gilt-edged securities so far as their marketability is concerned.

3. Ordinary securities. Under this category come stocks, shares, debentures etc. which are issued by Joint Stock Companies. These securities command lesser confidence of the people in comparison to the above two categories.

Some Other Terms

Registered Securities— The holders of such securities possess ownership certificate along with the securities. To effect transfer of such securities, therefore, a bond is signed by the seller and handed over to the purchaser for registration of his name in the registers of the issuing authority.

Bearer Securities— Securities whose ownership passes merely by delivery are known as bearer securities.

Inscribed Stock— Sometimes a bank underwrites the floating of the gilt-edged or semi-gilt-edged securities. In such a case the subscribers of the loan are not granted any securities but their names are entered in a register maintained for the purpose. Such stocks are known as inscribed stock. These stocks can be bought and sold on the market like other securities. The securities are transferred from one to another on written application.

Inter-Bourse Securities— In European countries such securities, the issue of which is made in more than one country and as are quoted in several important Exchanges of the world, are called Inter-Bourse Securities.

Stock— All kinds of paid up shares, debentures and bonds, the purchase and sale of which is done on the Exchange are called stocks.

Equities or Units— The shares and stocks of ordinary industrial companies are classed very low on the list. They are called Equities or Units. These are very speculative.

Industrials or Descriptions— The shares of industrial companies are known as industrials, those of the electric supply companies are called Electrics, and so Engineerings or Engineering. Descriptions— Jutes of the jute mills, Cottons of the cotton mills, Coals of the coal mines, and so on.

Counter of Issue— Preference, ordinary or deferred shares of the joint-stock companies which are considered as fairly good companies are given preference over others while enlisting them and they are known as counter of issue.

Scrip— It is a receipt for payment of application and allotment money for shares of industrial companies. These are certificates of partly paid up shares and can be bought and sold on the Exchange.

Dollar-Scrip— When a company has its shares in Dollars, the shares issued by such company are termed as Dollar-scrip.

Rupee-Paper— Loans floated by the Government of India in England and quoted on the London Stock Exchange are known as Rupee-paper.

Investment Securities— Securities which are not subject to much fluctuation are thought sound for investment and are known as Investment securities.

Speculative Securities— This class of securities are not good for investment and their prices fluctuate very much.

Par Value— It is also known as Face or Nominal Value. The par value of the security is mentioned on the face of it.

Market Value— It is the price of the security quoted on the Stock Exchange. It fluctuates from time to time.

Tape Price— Prices recorded on the tape of the teleprinter, are called tape price. They are very helpful to the dealer as he obtains full knowledge about prices ruling over the different parts of the world.

Street Price— Business is done outside the Exchange or in the Exchange after its working hours. The price at which a security is sold in this way is called its street price.

Cum. Div. or c. d.— A security may be sold at c. d. price. When a security is sold at Cum. Div. price, the purchaser acquires a right to dividend or interest accruing thereon.

Ex. Div. or x. d.— In a sale of security at x. d. price, the seller reserves the right to receive dividend or interest accruing on the security.

Cum. Right— In a sale of security cum. right, the purchaser also acquires a right to enjoy any other privilege besides dividend or interest, attached to the security.

Ex-Right— This type of quotation of a security debars the purchaser from enjoying any other privilege besides interest or dividend attached to the security.

Ex-All— Ex-all quotation debars the purchaser from all rights except ownership of the security.

Small Odd Lots or Small Lots— These phrases are used to denote small transactions at certain price of some securities.

Settlement Day— The final settlement of forward transactions in the Stock Exchange is effected on days fixed by the Stock Exchange. The settlement lasts for three days. The first day is known as the **Making-up Day** or **Contango Day.** On this day the parties concerned decide whether the business between them is to be closed for cash or postponed for the next settlement day. If postponement is desired by the buyer, a charge known as contango has to be paid by him to the seller. On the contrary, if the seller fails to deliver the securities and seeks postponement to the next settlement day, he pays **backwardation** to the buyer. The second day is called the **Name Day** or **Ticket Day.** On this day names of purchasers and sellers are handed in and receipts for stocks and shares issued by brokers are delivered. The last day is the **Pay Day** or **Settlement Day.** Money is paid off and delivery of stocks and shares given.

Yield— Income derived from investments in the securities is called yield. It is in the shape of interest or dividend. If a security is purchased at a premium, the yield becomes low and if it is bought below the par value, the yield is increased in relation to the face value of the security.

Making-up Price— The Stock Exchange fixes a price known as Making-up Price for carrying over the settlement of a transaction from one position to the other. The difference between Making-up price and the Contract price is payable to the party concerned for carrying over the deal.

Under-writer— He is a broker who guarantees subscription for a fresh loan by the public or undertakes the sale of shares in the market in consideration of commission.

Stag— When a speculator applies for shares in a new issue in the hope that it will be over-subscribed and that he will be able to sell them at a premium to the unsuccessful applicants, he is known as a stag.

For Cash— The term 'for cash' is used for transactions of securities, deliveries of which are actually given at the spot against immediate payment.

For account— When the settlement of a deal is not effected immediately and is postponed for the next settlement day, it is said to be *for account.*

The Stock Exchange Reports

Example 1.

BOMBAY, June 26.

The following are to-day's closing quotations with the previous day's closing rates within brackets :—

Steels :

Tata Ordy. (186·50) 187·50.

Indian Iron (22·32) 22·60.

Textiles :

Bom. Dyeing (50·40) 50·70.

Kohinoor (271·75) 275·00.

Swadeshi (190·75) 193·75.

Central India (94·00) 94·00.

Comment. These are the quotations from the Daily Report of the Bombay Stock Exchange, Steels and Textile sections. The Quotations of different securities are given in Rupees. Prices within brackets ruled at the close of the previous day. The prices quoted are for spot delivery.

Interpretation of Rates.

(1) **Steels**— The ordinary shares of the Tata Iron & Steel Co. are quoted at 187·50 i. e. at a premium of Rs. 87·50, the face value of these shares being Rs. 100. It speaks of the highly satisfactory working results of the factory. Yesterday's Quotations closed at Rs. 186·50. Thus they closed a rupee higher than yesterday. It shows a rising tendency of the price and a good business seems to have been done.

The Indian Iron & Steel Co. shares are quoted at Rs. 22·60 at a premium of Rs. 12·60. These shares too command a great confidence of the public. The day's Quotations closed at 28 nP more than yesterday. It also signifies a further progress in values of the Steel Company shares.

(2) **Textiles**— The shares of the Bombay Dyeing Mills are quoted at Rs. 50·70 at the close of the day whereas the last day they closed at 50·40. It shows an improvement in price by 30 nP.

The shares of the Kohinoor Mills closed with an increase of Rs. 3·25 per share over yesterday's Quotations. This is a marked rise in price and indicates a firm tone. A good business must have been done.

The shares of the Swadeshi Mills also indicate a rising tendency of the market. The difference between overnight closing rates is Rs. 3 which is a good increase. In these shares too good transactions must have been done.

The shares of the Central India Cotton Mills show no change in the price level and as the price of these shares did not move in sympathy with the other shares, it indicates that these shares lack public confidence and are not counters of issue.

Conclusion— There is an all round appreciation in the values of the Steel and Textile shares and it indicates that the market ruled bright.

Example 2.

(*From our own correspondent*)

BOMBAY, June 29.

During the week under review the share market *displayed buoyant conditions* with prices *making further headway*, many *favourite counters* registered *handsome gains*. *Brisk buying fervour* caused sudden spurt in the prices.

There is no improvement, political or economical, to warrant the present rise, but *the speculative activity* (which has been encouraged by *import restrictions and export drive*) brought about hectic bear covering *in the rising market*. The success of the export drive is problematic in view of the trade recession in the U. S. A. and other countries.

In the steel section *the firmness was more pronounced in Indian Irons* which advanced to Rs. 22·48. Tata Steel had a rise of Rs. 4 at 187.

In spite of the difficult position of the textile industry and *dullness prevailing in the cloth market* the textile section also ruled very firm with Bombay Dyeings and Kohinoors going up to Rs. 56·30 and Rs. 272.

(The Amrita Bazar Patrika, July 1, 1958)

Question— Explain the italicised words.

Answer. Explanation of the italicised portions :—

Displayed buoyant conditions— The share market showed a marked rising tendency.

Making further headway— It means that prices were still rising.

Favourite counters— Shares listed as of good concerns and enjoying public confidence.

Handsome gain— The prices of favourite counters rose sufficiently high or there was a good increase in their prices.

Brisk buying fervour caused sudden spurt in the prices— The reporter means to say that due to very keen purchases of securities, their prices suddenly rose by a wide margin.

The speculative activity— Operations of the bulls.

In the rising market— The market which shows a firm tendency.

Firmness was more pronounced in India Irons— It means that the prices of the shares of Indian Iron & Steel Co. rose higher than others.

Dullness prevailing in the cloth market— That is there being no active business in the cloth market.

Example 3.

BOMBAY, May 18.

The past week was an uneventful one for the Bombay Stock Exchange. Business was small in the extreme, operators evincing hardly any interest. In the absence of fresh developments, sentiment was subdued. The market closed on a hesitant note, showing minor changes.

Question. Explain the above report in easy English.

Answer. In the week under review, there was no activity in the Bombay Share Market. A very small business was transacted and the market dealers were silent. As no news for encouragement reached the market, it became bearish. With a little change, the market closed uncertain.

Exercises on Market Reports

Exercise 1.

CALCUTTA, July 4.

Buoyant conditions continued to prevail on the Calcutta Stock Exchange during to-day's session where Jutes, Engineerings and selective Industrials *hardened up on active buying support.* Business was *on a fair scale* and the market closed *with a firm note.*

Indian Irons *opened firm* at Rs. 23·24 and having slightly receded to Rs. 23·18 smartly progressed to Rs. 23·42 at the close while Texmacos *improved to Rs. 19·70.*

Coals were unchanged with Burrakurs being priced at Rs. 21·25, Central Indias *passed hands* at Rs. 7·62 and Western Bengals at Rs. 6·50.

Jutes recorded *a fair business* at advancing rates, Nationals gained a point at Rs. 24·00, Anglo-Indias added six rupees at Rs. 172. Barnagores *were marked up* at Rs. 108 with Belvederes at Rs. 115 and Deltas at Rs. 126·00.

Teas ware practically neglected. *Brooke Bonds were traded at Rs. 18·00* and Dibrugarh at Rs. 22·75.

Among the Miscellaneous issues, the speculative Orient Papers closed fairly steady at Rs. 32·25, Indian Coppers at Rs. 3·70, Indian Aluminiums at Rs. 14·56, while Indian Cables hardened further to Rs. 29·75. Cement Shares in general also made *further appreciation in prices.*

Questions 1. Explain fully the italicised portions.

2. Give a suitable heading to the report.

Exercise 2.

CALCUTTA, July 26.

With the rumour of bonus issue by Indian Irons revived cheerful conditions prevailed on the local Stock Exchange almost all through the week under review. Jutes hardened further on expansion of enquiries in a variety of scrips, while selected miscellaneous and Coals emerged fully steady. Even the earlier tendency to profit-taking teas appeared to have halted. The ends-of-account bear covering in Bombay provided a filler to operators in Calcutta.

Questions 1. Explain the above report in simple English.

2. Give a suitable heading to it.

Exercise 3.

BOMBAY, Oct. 13.

Opening the new account on a firm note, equities registered handsome gains initially on the stock market today. Towards close, however, Steel and other shares retreated sharply on heavy bull liquidation from influential quarters. Prominent Calcutta operators sold heavily in the local market.

One party is said to have sold more than a lakh of Indian Iron hares. Both the Steel shares closed at the day's lowest levels.

Lack of demand in the cloth market was the main reason for the decline in almost all textile shares.

In the miscellaneous section, Voltas were firm. A. C. C., Scindia, Premier Construction and Wimco were done at higher levels, but they too eased at close. Hindustan Motors closed at Rs 7·88.

Question 1. Rewrite the above report in simple English.

Exercise 4.

CALCUTTA, July 2.

Steady conditions continued to prevail on the Calcutta Stock Exchange during today's session *though activities slackened* due to *settlement considerations.* Business was *on a moderate scale* with minor change in prices.

Indian Irons opened at Rs. 22·87 and *having progressed to* Rs. 23·04 closed lower at Rs. 22·80, Texmacos also eased slightly to Rs. 19·15 from Rs. 19·20.

Coals were steady but unchanged. Burrakurs closed higher at Rs. 21·62, C. I. Coals were unchanged at Rs. 7·69 with Western Bengals at Rs. 6·12.

Jute maintained well *with a moderate turnover.* Nationals kept steady at Rs. 23·00, *Howrahs were better at Rs. 16·87* with Barnagores at Rs. 103·00.

Teas were dull and featureless to-day. Bishnauths were quoted at Rs. 19·00. Patrakolas remained unaltered at Rs. 140 and Rydok passed hands at Rs. 27·25.

Questions 1. Give a suitable heading to this report.

2. Explain the italicised portions.

Exercise 5.

CALCUTTA, July 5.

Equities continued their upward march in brisk dealings on the local Stock Exchange all through the week under review almost without a pause. Steels retained the leadership on the possibility of a bonus issue, though selected jutes and issues like Indian cables displayed considerable dash and drive for a straight recovery. The recent increase in the retention prices of cement coupled with relief in excise duty on textiles enhanced the buying urge of operators.

Question 1. Explain the above report in simple English.

Note :— Explain the italicised portions in the following reports and give suitable heading in each case.

Exercise 6.

CALCUTTA, July 26.

Jutes *attracted utmost attention* during to-day's trading on the Calcutta Stock Exchange where a fair business was recorded *at hardening rates* on the report of *good working results.* Indian Irons also made further headway on active bull support. The *undertone remained firm.*

Indian Irons opened firm at Rs. 22·54 and *having receded to* Rs. 22·44 progressed to close at Rs. 22·60, while Texmacos advanced to Rs. 19·20 from Rs. 19·10.

Coals were dull and unchanged. Burrakurs were priced at Rs. 21·25 and Western Bengals at Rs. 6·25, while Bengals improved to Rs. 26·00.

Jutes recorded *a fair business at firm rates.* Among the notables, Anglo-Indias gained 3 points at Rs. 164/-, Megnas hardened to Rs. 133·00, Unions added Rs. 21·00 at Rs. 143·00 and Barnagores advanced from Rs. 88·00 to Rs. 92·00, *while the speculative Nationals were unchanged* at Rs. 22·50.

Exercise 7.

BOMBAY, Oct. 26.

Industrials put up a smart performance last week largely *on selective support* and short-covering following renewed optimism regarding *the corporate outlook.* The closing levels were generally higher *and the undertone was firm.*

Market circles have taken a constructive view *of the deliberations of the Fund-Bank* meeting in Delhi which, it is thought, would help *a reorientation in the fiscal policy* for the future and in the methods of presenting the ensuing Union Budget, providing *necessary incentives to capital formation* in the country and also making it easier for foreign capital to play a larger role in the development of Indian economy. If the present trend in the share market is any indication it may be safely presumed that the *moorat* this time *will present a cheerful atmosphere,* though much will depend on the cloth market outlook which *continues to remain depressed* even today with hardly a fortnight to go for Diwali.

Exercise 8.

BOMBAY, July 1.

Equities opened on a firm note and *registered more gains on* the first day of the new account on the stock exchange here today.

Steels attracted *very good speculative inquiries*, and despite some profit selling, they closed much higher ex-right. Tata Ordinary appeared cheaper, while Indian Iron also found firm buyers *at new peak*.

On hopes of relief in excise and rumours *about export subsidies several textile issues shot up to new high rates not witnessed in the past many months.*

Exercise 9.

BOMBAY, July 2.

Equities *resumed at their previous levels* and *under the leadership* of steels advanced further *to hit higher levels. At bulges, however, longs preferred to book profits,* and several shares reacted towards close.

Tata Ordinary and Indian Iron attracted buyers even *at peak levels*. In the textile section, Indu Ordinary and Deferred shares attracted considerable *speculative buying*. Bombay Dyeing and Century eased *on profit selling at close*. Kohinoor also lost ground *on lower interim dividend.*

Cash shares ruled firm.

Note :— Explain the following reports in English.

Exercise 10.

CALCUTTA, May 18.

Trading on the local stock exchange showed a mixed pattern last week. Speculative issues were subjected to intermittent profit taking, while selected jute, tea and miscellaneous scrips recorded handsome gains. Conditions in other counters remained generally quiet. The market finished the week on a rather hesitant note.

Exercise 11.

BOMBAY, July 27.

Equities put up a smart recovery during the past week due largely to fresh speculative support and shortcovering. Sentiment was aided by the turn of events in the Middle East which was returning to a state of normalcy. The undertone at close was healthy following panicky selling in the previous week at the overbought position in the market.

Note :— Rewrite the following exercises in simple English.

Exercise 12.

CALCUTTA, July 1.

Thanks to the Reserve Bank Governor's statement with regard to

the strength of the Indian rupee, sentiment continued to remain cheerful with selected equities forging ahead from week-end levels.

Against the week-end closing of Rs. 22·80, Iron opened steady and advanced steadily to finish at Rs. 22·95. However, Texmaco were a shade quieter at Rs. 19·20 against Rs. 19·30 on lack of fresh enquiry.

Jute shares continued to be supported at enhanced levels. Most prominent were Howrah improving further to Rs. 16·37 from Rs. 16·12, National to Rs. 23 from Rs. 22·75 and Budge to Rs. 96 from Rs. 92.

Coals lacked support with Burrakur ruling unchanged at Rs. 21·25 and Western Bengal easier at Rs. 6·12 against Rs. 6·31.

Anticipation of an early relief to industry imparted renewed strength to the textiles section where Kesoram had buyers at Rs. 11·15 to Rs. 11·25, Elgins at Rs. 11·75 to Rs. 11·87 and Cawnpore at Rs. 4·06 to Rs. 4·25.

Carew ruling very steady at Rs. 8·31 were the only feature in sugar.

Teas were practically neglected. Amongst the few transactions recorded were Bishnauth being better at Rs. 19 against Rs. 18·87, Hantapara at Rs. 112 against Rs. 109 and Patrakola at Rs. 141 against Rs. 140.

Exercise 13.

Bombay Stock Exchange

EQUITIES RECOVER EARLY LOSSES : SUGARS FIRM.

BOMBAY, Oct. 29.

After opening easy, steels and other industrials staged a recovery on the stock market to-day. In the absence of any incentive, textiles were subdued. Sugar shares moved up further with Belapur in request at higher levels due to hopes of a better dividend.

In the miscellaneous section Premier Construction were a bright spot, gaining as much as 10 points at Rs. 260·75, but closed at Rs. 257·50. Scindia, Larsen Old and Right were done at higher rates. Mahindra and National Rayon also firmed upto new levels. Motor shares were quietly steady. Hindustan Motors were finally done at Rs. 7·96. Sirpur were placed at Rs. 13·36.

(The Hindustan Times, Oct. 31, 1958)
